व्यंजना

महाविद्यालयीन वार्षिक पत्रिका 2016-17

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी
महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) बैंगलोर द्वारा मूल्यांकित
'ए' प्लस ग्रेड की अधिमान्यता प्राप्त संस्था

संरक्षक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार राजपूत
प्राचार्य

संपादक मंडल

डॉ. जयप्रकाश साव

डॉ. सुचित्रा गुप्ता

डॉ. वेदवती मण्डावी

डॉ. अनुपमा कश्यप

डॉ. मर्सी जार्ज

डॉ. प्रशान्त श्रीवास्तव

यू.जी.सी., नई दिल्ली की 'कॉलेज विथ पोटेंशियल फॉर एक्सीलेंस' योजना के तृतीय चरण के अन्तर्गत अनुदान प्राप्त करने हेतु चयनित छत्तीसगढ़ का प्रथम एवं एक मात्र महाविद्यालय, केन्द्र शासन के विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी विभाग की प्रतिष्ठित FIST योजना में शामिल महाविद्यालय का रसायन शास्त्र विभाग, छत्तीसगढ़ शासन द्वारा विज्ञान संकाय हेतु घोषित 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस'

मुख पृष्ठ संयोजन : डॉ. जय प्रकाश साव (महाविद्यालय के .....
.....
.....
: छायाचित्रकार–विकास शर्मा

Website: www.govtsciencecollegedurg.ac.in

Email- pprinci2010@gmail.com

अनुक्रम

1. विश्वनाथ यादव तमस्कार एक परिचय - 3
2. Genetic diversity in Indian populations and its health implications. - Dr Lalji singh.
3. Chemistry for sustainable develpoment - Dr. J.S. Yadav CSIR Bhatnagar fellow
4. परिचर्चा - पुस्तक संस्कृति को कैस बचाएं - छात्र-छात्रायें
5. परिचर्चा - जिज्ञासा - प्रश्नाुकलता की विदाई - कितनी सच्चाई - प्राध्यापक
6. आइये बहार को हम बाँट ले - डॉ. अनुपमा कश्यप
7. मन की बात - पत्र लेखन - छात्र-छात्रायें
8. पर्यावरण सम्बन्धी लेख - मोनिका देवांगन, गुलशन कुमार
9. कविताएं
10. निबन्ध रचना - अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता में पुरस्कृत निबन्ध सोनाली मेश्राम
11. आलेख - छात्र-छात्रा
(मेरी अपनी कहानी) केशव कुमार शिवारे
12. शिक्षा एवं समाज में विद्यार्थियों का योगदान - दुष्यंत कुमार साहू
13. Give to everyone without reservation - Puja Dewangan
14. (a) Understanding life - Swati Banchhor
(b) Child Labourer
15. Incredible facts About Elements
16. Lignin can magnify the power of sunscreen
17. Wi-Fi
18. भूकम्प - अंजू सोनवानी
19. ज्वालामुखी - खिलेन्द्र प्रताप सिंह
20. (अ) आँवले का पेड़ - श्रीमती प्रतिभा श्रीवास्तव
(ब) संवेदना
21. असफलता में छिपा है सफलता का राज - श्रीमती करूणा गजभिये
22. जहां कला के पुजारी फूंकते हैं मूर्तियों में प्राण
23. Shakespeare's contribution to English Language
24. Remembering Shakespeare
25. Poem in English
26. सफलता के सोपान और हमारा महाविद्यालय - डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव - 76
28. शताब्दी स्मरण - 77-80

विश्वनाथ यादव तामस्कर : एक परिचय

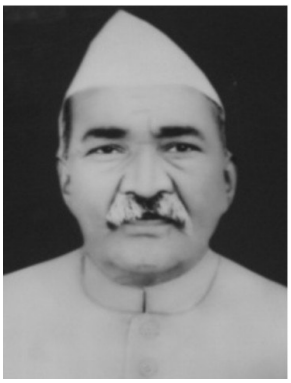

स्व. श्री विश्वनाथ राव यादव तामस्कर दुर्ग जिले के ऐसे जुझारू नेता के रूप में जाने जाते हैं, जिन्होंने गुलाम भारत में विदेशी सरकार से लड़ते हुए दुर्ग अंचल में आजादी की अलख जलायी। स्वाधीनता संघर्ष से लेकर छत्तीसगढ़ राज्य-निर्माण के लिये जो योगदान उन्होंने दिया है, उसके लिए उन्हें सदैव स्मरण किया जायेगा। उनका व्यक्तित्व आज भी हमें प्रेरणा प्रदान करता है।

स्व.श्री विश्वनाथ यादव तामस्कर का जन्म दुर्ग के बेमेतरा तहसील के अंतर्गत झाल नामक ग्राम में 7 जुलाई 1901 में हुआ था । आपके पिता श्री यादव वामन तामस्कर कोर्ट में अर्जीनवीस थे एवं माता का नाम पुतली बाई था । आपकी शिक्षा दुर्ग तथा बिलासपुर में पूर्ण हुई तथा कानून की पढ़ाई करने इलाहाबाद गये । यहां पर आप गांधीवादी नेताओं के सम्पर्क में आये और विभिन्न आंदोलनों में भाग लेने गये । इसी समय 1921 में असहयोग आंदोलन के बहिस्कार कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये आप कानून की पढ़ाई छोड़ कर अपने ग्राम वापस आ गये । आंदोलन समाप्त होने के पश्चात पुनः पढ़ाई प्रारम्भ कर 1927 में नागपुर से कानून की डिग्री लेकर वकालत का पेशा अपनाया किन्तु आपका मन देशप्रेम में रम चुका था, इसलिये 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में कूद पढ़े । नमक कानून की तरह छत्तीसगढ़ में जंगल कानून तोड़ने का सत्याग्रह हुआ । इस सत्याग्रह का नेतृत्व करते हुये आप गिरफ्तार हुये । ब्रिटिश सरकार से अपने कृत्य पर क्षमा नही मांगने के कारण आप पर भारी जुर्माना लगाया था तथा एक वर्ष का कठोर कारावास दिया । जुर्माना नहीं पटाने पर आपकी बहुत सी सम्पत्ति और ग्रंथालय को नीलाम कर दिया गया । तामस्कर जी शासन के इस अत्याचार के आगे नहीं झुके बल्कि जेल से छूटते ही पुनः आंदोलन में कूद पड़े । शराबबंदी आंदोलन में भाग लेते हुए दोबारा 9 माह के लिये जेल गये । साथ ही सरकार ने उनमे वकालत करने का अधिकार छीन लिया । ब्रिटिश शासन की यह नीति देशभक्तों को कुचलने की थी, किन्तु जनता ने ऐसे देशभक्तों को अपने सर आखों पर बैठाया था । तामस्कर जी 1930 से 1933 तक बेमेतरा कौंसिल के चेयरमेन चुन लिये गये । 1933 में दुर्ग डिस्ट्रिक कौंसिल के सदस्य तथा 1937 से 1940 तक उसके चेयरमेन के पद को शोभित किया । 1937 में प्रांतीय सरकार बनाने के लिये हुये चुनाव में आप बेमेतरा क्षेत्र से मध्यप्रान्त के धारासभा (विधानसभा) के प्रतिनिधी निर्वाचित हुये । 1939 में द्वितीय महायुद्ध के काल में विरोध स्वरूप सभी कांग्रेसी सदस्यों की तरह विधानसभा की सदस्यता से त्याग पत्र दे दिया तथा गांधी जी द्वारा संचालित 1941 का व्यक्तिगत सत्याग्रह तथा 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में सत्याग्रही के रूप में भाग लिया । स्वतंत्रता संग्राम के काल में आपने कुल मिलाकर लगभग पांच वर्षों की जेल यात्रा की थी । इसी बीच समाज सुधार के कार्यक्रम में भी आपने सक्रिय भागीदारी निभायी और अछूतोद्धार कार्यक्रम से जुड़े रहे ।

1952 के पहले आम चुनाव में स्वंतंत्र उम्मीदवार के रूप मे बेमेतरा क्षेत्र से चुनाव लड़कर विजयी हुये तो 1957 में दुर्ग शहर से सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर विधान सभा के सदस्य बने । म.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र के प्रयत्नों से आपने 1967 का चुनाव लड़ना स्वीकार कर लिया तथा विजयी होकर संसद में प्रवेश किया । आप छत्तीसगढ़ की जनता और किसानों की आवाज देश की संसद में पहुचाते रहे । शायद छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण और बहुत पहले हो जाता किन्तु नियति ने इस कर्मठ माटीपुत्र को 2 सितम्बर 1969 को हमारे बीच से उठा लिया । छत्तीसगढ़ की माटी सदा ऐसी जुझारू संतानों के प्रति ऋणी रहेगी । ऐसे कर्मठ एवं माटीपुत्र देशभक्त के नाम पर हमारे महाविद्यालय का छत्तीसगढ़ शासन द्वारा नामकरण किये जाने पर समूचा महाविद्यालय परिवार गौरवान्वित महसूस करता है ।

नैक, बंगलुरू द्वारा पुर्नमूल्यांकित

छत्तीसगढ़ का सर्वप्रथम एवं एकमात्र 'ए प्लस' ग्रेड प्राप्त हमारा महाविद्यालय

डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव (सहायक प्राध्यापक - भूगर्भशास्त्र विभाग)

न केवल हमारे महाविद्यालय अपितु समूचे छत्तीसगढ़ प्रदेश के लिये यह हर्ष का विषय है कि दुर्ग के शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय को नैक बंगलुरू द्वारा पुर्नमूल्यांकन के तीसरे चरण के पश्चात् 3.58 सीजीपीए अंकों के साथ ए प्लस ग्रेड प्रदान किया गया। राष्ट्रीय स्तर के शिक्षण संस्थानों के समतुल्य श्रेणी में इस महाविद्यालय को खड़ा करने में यहां के पूर्व एवं वर्तमान शिक्षकों, प्राचार्यों, कर्मचारियों, छात्र-छात्राओं तथा पालकों की अहम् भूमिका रही है। महाविद्यालय परिवार इन सभी के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता है।

सत्र 2016-17 महाविद्यालय के लिए मानों उपलब्धियों की सौगात लेकर आया। महाविद्यालय के 58 वर्षों के इतिहास में पहली बार विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली डीएसटी) द्वारा प्रायोजित 'इंस्पायर प्रोग्राम' का आयोजन दिनांक 22 से 26 अक्टूबर 2016 को किया गया। इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम का उद्घाटन छ.ग. के पूर्व राज्यपाल श्री शेखर दत्त ने किया। इस कार्यक्रम में समूचे छत्तीसगढ़ प्रदेश के विभिन्न निजी एवं शासकीय स्कूलों के दसवीं कक्षा के 200 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। आईआईटी मुबंई, दिल्ली, राष्ट्रीय शोध संस्थानों आदि से पधारे वैज्ञानिकों एवं विषय विशेषज्ञों ने सरल भाषा में रोचक तरीके से शालेय विद्यार्थियों के मध्य महत्वपूर्ण विषयों पर रोचक व्याख्यान दिये। दुर्ग जिले की तत्कालीन कलेक्टर श्रीमती आर शंगीता तथा दुर्ग विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर एन.पी. दीक्षित ने भी इंस्पायर कार्यक्रम में शिरकत की। इंस्पायर प्रोग्राम के दौरान प्रमुख रूप से व्याख्यान देने वालों में सेंट जेवियर्स कालेज, अहमदाबाद के प्रोफेसर उदयन प्रजापति तथा शारदा विश्वविद्यालय ग्रेटर नोयडा के कुलपति डॉ. एन.बी. सिंह, गुजरात विश्वविद्यालय अहमदाबाद के प्राध्यापक डॉ. किशोर चिखलिया एवं हैदराबाद स्थित सेंटर फॉर सेल्युलर एण्ड मॉल्यूकुलर बायोलॉजी के डॉ. चट्टोपाध्याय तथा आईआईटी मुबंई के डॉ. सोमेश कुमार, मुबंई इंस्ट्यूट ऑफ साईंस के प्रोफेसर विजय मेंदुलकर, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र के डॉ. श्री कुमार आपटे, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के डॉ. अली मोहम्मद आदि शामिल थे।

सत्र 2016-17 के प्रारंभ में नवप्रवेशित विद्यार्थियों हेतु आयोजित होने वाले 'इंस्पायर प्रोग्राम' के साथ आरंभ होकर गतिविधियों का सिलसिला फरवरी माह में 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' को धूमधाम से मानये जाने के साथ समाप्त हुआ। अगस्त 2016 में छात्रसंघ शपथ ग्रहण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित छत्तीसगढ़ के उच्चशिक्षा मंत्री श्री प्रेम प्रकाश पाण्डेय ने छात्रसंघ पदाधिकारियों को सलाह दी कि शपथ ग्रहण करना मात्र औपचारिकता नही, बल्कि जिम्मेदारी का प्रथम पायदान है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए छत्तीसगढ़ के पूर्व उच्चशिक्षा एवं जल संसाधन मंत्री श्री हेमचंद यादव ने कहा कि छात्रसंघ का शपथ ग्रहण पदाधिकारियों की जिम्मेदारी एवं कर्तव्य के प्रति प्रतिबद्धता का परिचायक है। सत्र 2016-17 में महाविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग द्वारा 'शोध पद्धति-दशा एवं दिशा' विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गयी। कार्यशाला का

उद्घाटन बरकत उच्च विश्वविद्यालय, भोपाल के प्रोफेसर एस.एन.चौधरी ने किया। उद्घाटन समारोह के दौरान दुर्ग विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एन.पी. दीक्षित भी उपस्थित थे। कार्यशाला के दौरान समाजशास्त्र के विभागाध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र चौबे ने भारत को विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था निरूपित करते हुए कहा कि प्रगति के इस दौर में हमारी सामाजिक सोच में बदलाव की नितांत आवश्यकता है।

महाविद्यालय के अंग्रेजी विभाग द्वारा इस सत्र में यूजीसी की विस्तार गतिविधि के अंतर्गत समीपस्थ ग्राम गोदेला में जागरूकता अभियान एवं पौधारोपण किया गया। महाविद्यालय में अक्टूबर माह में जिला शिक्षा अधिकारी दुर्ग से प्राप्त अनुरोध के आधार पर दो दिवसीय प्रायोगिक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया, इसमें दुर्ग जिले के विज्ञान विषयों के लगभग 50 से अधिक व्याख्याताओं ने हिस्सा लिया। महाविद्यालय के हिन्दी विभाग में आयोजित हिन्दी परिषद के उद्घाटनसमारोह में अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा के हिन्दी विभाग के प्रमुख डॉ. दिनेश कुशवाहा ने कहा कि साहित्य हमें जीने की कला सिखाता है। महाविद्यालय के प्राणीशास्त्र विभाग द्वारा चंदूलाल चन्द्राकर अस्पताल के तकनीकी सहयोग से स्वास्थ्य परीक्षण शिविर आयोजित किया गया, इसमें लगभग 200 से अधिक छात्र-छात्राओं के रक्त समूह के जांच एवं हीमोग्लोबिन के प्रतिशत का भी परीक्षण किया गया। दुर्ग विश्वविद्यालय द्वारा महाविद्यालय के टैगोर सभागार में आयोजित नारीवाद एवं संस्कृत विषय पर आमंत्रित व्याख्यान में राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के पूर्व कुलपति डॉ. राधा वल्लभ त्रिपाठी ने बंधन मुक्त नारी को समाज की प्रगति का परिचायक बताया।

महाविद्यालय द्वारा शासकीय उच्चतर माध्यामिक विद्यालय, थनौद में 11 वीं एवं 12 वीं के विद्यार्थियों हेतु जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। महाविद्यालय के मुख्य सभागार में महिला प्रकोष्ठ के तत्वावधान में बूडो मार्शल आर्ट एसोसिएशन रायपुर द्वारा मार्शल आर्ट का प्रदर्शन किया गया। दिनांक 7 नवम्बर 2016 को अंग्रेजी विभाग साहित्य परिषद का उद्घाटन भिलाई-3 महाविद्यालय के डॉ. तापस मुखर्जी द्वारा किया गया। विद्यार्थियों को संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से महाविद्यालय के इंडोर हॉल में मेडिकल परीक्षण रूम का उद्घाटन डॉ. विश्वनाथ एवं महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. एस.के. राजपूत ने संयुक्त रूप से किया। छात्राओं के लिए आयोजित विशेष स्वास्थ्य परामर्श व्याख्यान में प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. मधु श्रीवास्तव ने कहा कि स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही

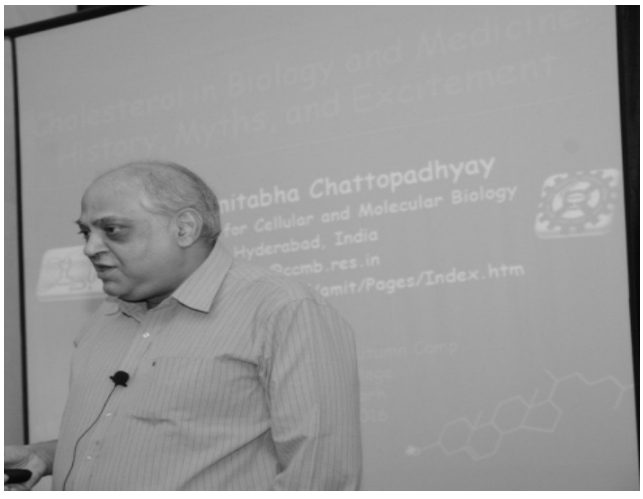

ही छात्राओं की मुख्य समस्या है। छात्राओं अथवा महिलाओं को असामाजिक तत्वों से निपटने हेतु आयोजित जागरूकता कार्यक्रम में महिला प्रकोष्ठ एवं दुर्ग जिले की पुलिस रक्षा टीम ने हिस्सा लिया। रक्षा टीम की प्रमुख श्रीमती मोनिका नवी पाण्डेय ने कहा कि छात्राओं अथवा महिलाओं द्वारा अत्याचार के विरुद्ध शिकायत न करना ही अपराधिक तत्वों को बढ़ावा देना है।

प्राणीशास्त्र विभाग द्वारा सीपीई योजना के अंतर्गत साईंस कालेज रायपुर की डॉ. रेणु महेश्वरी का बायोस्टेट्क्स विषय पर आमंत्रित व्याख्यान आयोजित किया गया, वहीं द्वितीय व्याख्यान सीएमडी कालेज बिलासपुर के डॉ. वी.के. गुप्ता का व्याख्यान जंतुओं के व्यवहार एवं हार्मोन परिवर्तन विषय पर हुआ। लाईब्रेरी साईंस विभाग में एम.एल.बी. कालेज ग्वालियर के प्रो. जितेन्द्र श्रीवास्तव ने डिजिटल लाईब्रेरी का महत्व विषय पर व्याख्यान दिया। कर्मचारियों के स्वास्थ्य संबंधी कार्यशाला का आयोजन महाविद्यालय के स्वामी विवेकानंद ऑडियो विजुअल हॉल में हुआ। वनस्पति विज्ञान विभाग एवं कृषि विज्ञान केन्द्र अंजोरा के संयुक्त तत्वावधान में छः दिवसीय मशरूम कल्टीवेशन एवं रोजगार की संभावनाओं विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के वार्षिक क्रीड़ा समारोह में उपस्थित खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए प्राचार्य डॉ. राजपूत ने खेल भावना को ही जीवन में सफलता का मूल मंत्र बताया। इस दौरान आयोजित प्राचार्य एकादश एवं छात्रसंघ एकादश के मध्य क्रिकेट मैच में प्राचार्य एकादश की टीम विजेता रही। महाविद्यालय के वार्षिक स्नेह सम्मेलन का आयोजन 6 जनवरी 2017 को हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ के पूर्व उच्चशिक्षा मंत्री श्री हेमचंद यादव ने परिवर्तनशील समाज को ही लंबे समय तक अस्तित्व में रहने का उल्लेख किया। महाविद्यालय की महिला एनसीसी कैडेट्स द्वारा दुर्ग रेल्वे स्टेशन पर यात्रियों को कैशलेस बैकिंग संबंधी जागरूकता अभियान चलाया गया। भूविज्ञान विभाग भूतपूर्व छात्र अमित सोनी को राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा नेशनल जियो साइंटिस्ट अवार्ड प्रदान किया गया। प्रयोगशाला तकनीशियनों हेतु आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला में दुर्ग विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एन.पी. दीक्षित ने विद्यार्थियों के भविष्य निर्माण में प्रयोगशाला तकनीशियनों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया। महाविद्यालय की शोध पत्रिका रिसर्च एक्सप्रेशन के प्रथम अंक का शुभारंभ 27 जनवरी 2017 को छत्तीसगढ़ के उच्चशिक्षा मंत्री श्री प्रेम प्रकाश पाण्डेय ने किया। फरवरी माह में महाविद्यालय जनभागीदारी समिति के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री मनोज शर्मा ने विभिन्न विभागों का भ्रमण कर विभागाध्यक्षों एवं अन्य स्टाफ से व्यक्तिगत रूप से मुलाकात की। महाविद्यालय के 38 विद्यार्थियों को महिन्द्रा फायनेंस द्वारा छात्रवृत्ति प्रदान की गयी। उच्चशिक्षा विभाग छत्तीसगढ़ शासन के आयुक्त श्री देव

सेनापति ने महाविद्यालय का आकस्मिक द्वौरा 14 फरवरी को किया। अपने संबोधन में श्री देव सेनापति ने विद्यार्थी को ही शिक्षकों का वास्तविक मूल्यांकनकर्ता बताया। दुर्ग जिले के जिला क्वालिटी सर्किल की बैठक 9 मार्च 2017 को आयोजित हुई, जिसमें अग्रणी महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. एस.के. राजपूत ने दुर्ग जिले के समस्त महाविद्यालयों को नैक मूल्यांकन को प्राथमिकता देने का आग्रह किया। महाविद्यालय छात्रसंघ एवं प्रशासन द्वारा संयुक्त रूप से भीषण गर्मी के दौरान पंक्षियों के संरक्षण हेतु 'चहके चिड़िया अभियान' आरंभ किया गया। प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे पीईटी एवं नैट आदि में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों के अभ्यास हेतु महाविद्यालय प्रशासन द्वारा मॉक टेस्ट आयोजित किया गया। जनभागीदारी समिति, छात्रसंघ एवं महाविद्यालय प्रशासन के सहयोग से वाहन प्रदूषण मापन शिविर का आयोजन किया गया। दिनांक 11 अप्रेल को वेदांता कंपनी द्वारा महाविद्यालय में कैम्पस सलेक्शन आयोजित किया गया। 21 अप्रेल को आयोजित विश्व पृथ्वी दिवस पर मौसम संबंधी जानकारी भूविज्ञान विभाग द्वारा प्रदान की गयी। 5 जून को आयोजित विश्व पर्यावरण दिवस पर महाविद्यालय के प्राध्यापकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने परिसर को हरा-भरा बनाये रखने तथा पॉलीथीन फ्री बनाये रखने का संकल्प लिया। दिनांक 17 जून को प्रदेश के उच्चशिक्षा मंत्री श्री प्रेम प्रकाश पाण्डेय ने सैटेलाईट आधारित वर्चुअल क्लास रूम का उद्घाटनकिया। 21 जून को महाविद्यालय में विश्व योगा दिवस मनाया गया। दिनांक 22 जून को जीएसटी पर आईक्यूएसी कक्ष में विभागाध्यक्षों की कार्यशाला आयोजित की गयी।यह महाविद्यालय प्रगति के पथ पर अग्रसर रहकर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु तत्पर रहे। यही शुभकामना है।

शिक्षा एवं संस्कृति

मेनका निषाद (B.Sc. II)

नमस्ते दोस्तों

'यह लेख लिखने की प्रेरणा मुझे एक पुस्तक से मिली जिसका नाम है प्रेमचंद की नजर में शिक्षा एवं संस्कृति'

मुंशी प्रेमचंद की नजर में शिक्षा एवं संस्कृति

प्रेमचंद उस धनवादी, वैज्ञानिक और धर्म निरपेक्ष शिक्षा के आदर्श का परचम लेकर चलते है जिसका विकास मनुष्य के इतिहास में लंबे संघर्ष का परिणाम है। ये संघर्ष था उन सामंती बेड़ियो के खिलाफ जिन्होंने समाज के विकास को चंद सामंतो और सुविधा संपन्न लोगों की मुटठी में कैद कर दिया था। रूढ़ियों और अंधविश्वासों में बंध चिंतन को मुक्त करने वाले इस नवजागरण काल में अपनी सदियों की नांद से जाग रहे मनुष्य के साहित्य का सृजन होना था और असंख्या वैज्ञानिकों और कलाकारो को जन्म लेना था जो सत्य, क्षोध और सौंदर्य के सृजन के लिए अपने जीवन को समर्पित कर देना चाहते थे। यह युग था एक ऐसे मानव के जन्म का जो ब्रह्माण्ड के समस्त रहस्यों को जान लेना चाहता था और अपने चिंतन को असीम विस्तार देना चाहता था। ये युग सृजन का युग था और संघर्ष का युग था। एक तरफ सृजन हो रहे थे विश्व के सबसे अद्भुत शिल्प और चित्र जो मनुष्य के सौंदर्य और गरिमा को सैलिब्रेट कर रहे थे। और दूसरी तरफ चल रहा था घोर रूढ़िवादी और दकियानूसी चिंतन से संघर्ष जिसमें गैलेलियो और ब्रूनो जैसे वैज्ञानिक उम्र कैद और जिन्दा जला दिये जाने के दंड के बावजूद मिथ्या धार्मिक अवधारणाओं के खिलाफ खड़े थे। एक लंबे समय तक अपने विशेषाधिकारों की रक्षा के लिए सामंतो और पादरियों ने धर्म का सहारा लिया, धर्म का डर बनाकर समाज के बहुसंख्य लोगो को अपने पैरो तले दबा रखा था। ऐसे समय में ज्ञान ही वह हथियार था जिसने इन विशेषाधिकारों को चुनौती दी और एक नए युग का सूत्रपात किया, जिसमें समानता और जनवाद के चिंतन का उदय हुआ। वैज्ञानिक चिंतन उस प्रकाश स्तम्भ की तरह खड़ा था जहां से मनुष्य ने यह घोषणा की गवह कुछ भी जो तर्क के समक्ष खड़ा नही रह सकता उसे नष्ट हो जाना चाहिएग । यानी विकास हुआ एक वैज्ञानिक जनवादी चेतना का जिसने पुराने सामंती ढांचे को तहस-नहस कर डाला।

नवजागरण इसी मुक्ति कामी और प्रगति-गामी मानव का जय गान था।

चिंतन के क्षेत्र में हुई इस सामाजिक-सांस्कृतिक क्रांति ने ही यूनिवर्सिटी की परिकल्पना को जन्म दिया। ये विश्वविद्यालय यूरोप के सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिकों, इतिहासकारों और विद्वानों के लिए एक ज्ञान-साधना के स्थान के रूप में उभरे । विश्व के कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय इस प्रगतिशील परंपरा के क्रम में ही विकसित हुए और एक वैज्ञानिक, धनवादी, धर्म निरपेक्ष शिक्षा के प्रबल गढ़ बन कर उभरे। हिन्दी जगत में प्रेमचंद वह कड़ी है जो हमें विश्व नवजागरण के विचारो से जोड़ देते है। इसलिए प्रेमचंद समाज के समक्ष शिक्षा का एक उन्नत आदर्श रखते है, यूनिवर्सिटी केवल ग्रेजुएट बनाने की मशीन नही है और न जनता का धन केवल मुमतहिनो के पुरस्कार और अध्यापकों के वेतन के लिए है, राष्ट्र अब यूनिवर्सिटी में उंचे आदर्श की आशा रखता है, जहाँ रटाई अपनी सीमा के अंदर रहे और छात्रों का चरित्र निर्माण उनका ध्येय बनेंग प्रेमचंद ऐसे विद्यालयों और विश्वविद्यालयों को हेय दृष्टि से दिखते है जो मनुष्य में एक उन्नत दृष्टिकोण और मूल्यों का सृजन करने की बजाय उन्हें महज कुछ किताबी ज्ञान दे देते है, अंग्रेजी राज्य में नये-नये विद्यालय खुले मगर उनका आदर्श और उद्देश्य कुछ और था। वह दफतरी शासन का एक विभाग मात्र था जिसका उद्देश्य सत्य की खोज और संस्कृति का विकास नही दफतरों के लिए कर्मचारियों का निर्माण था। यह प्रेमचंद उसी 'सत्य की खोज' के आदर्श की बात करते है जिसने नवजागरण युग में मनुष्य को आंदोलित कर दिया था। इन आदर्शो के कटे विश्वविद्यालयों को प्रेमचंद इसलिए युनिवर्सिटी मानना ही नही चाहते, युनिवर्सिटी तो भारत में कोई है नही, हां ग्रेजुएट बनाने के कई कारखाने है। प्रेमचंद देख रहे है कि इन कारखानो में, 'युवको को

दुर्व्यसन, फिजूलखर्ची, विलासिता और झूठे अभिमान की शिक्षा दी जाती है। बी.ए. पास होने का अर्थव्यावहारिक रूप से सही है कि अमुक युवक इन दुर्गुणों में पास हो चुका है। वह सिवा दफ्तर में कलम घिसने के और किसी काम का नही।

एक ऐसे समय में जबकि शिक्षा का अर्थ महज डिग्री बटोरना और नौकरी पाना हो गया है, प्रेमचंद के विचार हमें वापस मनुष्यता की उस विरासत से जो़डते है। जो हमारी दृष्टि से खो सी गयी है। ये दौर वास्तव में चिंतन के दिवालियेपन और क्षुद्रता का दौर है जिसमें किसी भी प्रकार के उन्नत विचार और आदर्श का अभाव सा दिखता है। चिंतन के क्षेत्र में इस अद्योपतन और भटकाव के दौर में आगे ब़ढने के आदर्श के अभाव में समाज की प्रगति थम सी गयी है। प्रेमचंद का चिंतन हमें मनुष्य के प्रगतिगामी परम्परा से जो़डता है जिसके आगे हम कुछ नया और बेहतर रच सकते है। प्रेमचंद ब़डी बारीकी से हमारे समाज और शिक्षा की समभावनाओं को पक़ड लेते है,ग गहमारी शिक्षा हमारी सामाजिक चेतना को नहीं जगाती उसका उद्देश्य अपने फायदे के लिए समाज से काम निकालना है। .....वही मनुष्य सफल समझा जाता है, जो समाज को खूब अच्छी तरह एक्सप्लाइट कर सकें।ग इस शिक्षा व्यवस्था से निकल रहे उन डॉक्टरों, इंजीनियरों आदि पर यह कटु प्रहार है जो खुद को समाज को एक्सपलाइट करके ही सफल समझते हैं। प्रेमचंद यहां सफलता का वैकल्पिक आदर्श रखते हैं - समाज की सेवा में सफलता।

प्रेमचंद समाज के निर्माण में शिक्षा की भूमिका को भली-भांति समझते है। हमारी वर्तमान शिक्षा कैसे समूचे सामाजिक ताने बाने को नष्ट कर रही है और समाज को मनुष्यता के सांचे में कैसे ढाला जाये इसकी वे चर्चा करते है, गसंसार में इस समय जिस शिक्षा प्रणाली का व्यवहार, हो रहा है, वह मनुष्य में ईर्ष्या, भय, घृणा, स्वार्थ अनुदारता और कायरता आदि दुर्गुणों को ही पुष्ट करती है और वह क्रिया शैशव की अवस्था से ही शुरू हो जाती है। सम्पन्न माता-पिता अपने बालक का जरूरत से ज्यादा लाड़ प्यार करके और बड़े होने पर उसको दूसरे लड़को से अच्छी दशा में रखने की चेष्टा में इतना निकम्मा बना देते है और उसकी बुद्धि को इतना परिवर्तित कर देते है, कि वह समाज का खून चूसने के सिवा और किसी काम का नही रह जाता। .....' यह साम्राज्यवाद और व्यवसायवाद और राष्ट्रों में संघर्ष इसी कुशिक्षा के फल है, जिसने व्यक्ति को प्रधानता देकर उसे समाज का हिंसक जंतु बना दिया है।'

प्रेमचंद अपने विचारों में महज एक लेखक नही वरन इस समाज के शिल्पी है। इसलिए उनकी नजर बगो की शिक्षा से लेकर उगा शिक्षा तक हर जगह है। प्रेमचंद की आंखों में इसलिए सपना तैरता है एक ऐसे मनुष्य का जिसकी क्षमताओं का दमन ना किया जाय, जिनका पूर्ण विकास और विस्तार हो सके। इसलिए देश की मेहनतकश जनता के पक्ष में ख़डे होकर सस्ती और निः शुल्क शिक्षा की बात करते हुए प्रेमचंद कहते है, गबी.ए. तक शिक्षा तो जहां तक सस्ती हो सके अधिक से अधिक छात्रों को मिलनी चाहिए। गप्रेमचंद अच्छी तरह समझते है कि ज्ञान एक परंपरा है जो सदियों से मनुष्य के सामूहिक योगदान का परिणाम है। ज्ञान किसी एक व्यक्ति की निजी संपति नही है और न ही कोई एक व्यक्ति समस्त ज्ञान के सृजन का श्रेय ले सकता है। ज्ञान का ये भंडार समाज में असंख्य व्यक्तियों के योगदान से बना है और ज्ञान के विकास का इतिहास इसके लिए प्रतिबदध मनुष्य के संघर्षो और बलिदानो का इतिहास है। शिक्षा एक बिकाऊ माल न हो जाये इस पर नजर डालते हुए प्रेमचंद कहते, गये किराए की तालीम हमारे कैरेक्टर को तबाह किए डालती है। हमने तालीम को भी एक व्यापार बना दिया है। व्यापार में ज्यादा पूंजी लगाओ, ज्यादा नफा होगा। तालीम में भी ज्यादा खर्च करो ज्यादा ऊंचा ओहदा पाओगे। मैं चाहता हूं ऊंची से ऊंची तालीम सबके लिए मुफ्त हो, ताकि गरीब से गरीब आदमी भी ऊंची से ऊंची लियाकत हासिल कर सके और ऊँचे से ऊँचे ओहदा पा सके। यूनिवर्सिटी के दरवाजे मैं सबके लिए खुले रखना चाहता हूँ। सारा खर्च गवर्नमेंट पर पड़ना चाहिए। मुल्क को तालीम की उससे कही ज्यादा जरूरत है जितनी फौज की। यही नही इस सामाजिक संपदा का पूरा का पूरा फल आम जन को मिल रहा है या नही इस पर व इसे क्रियान्वित करने वाली सरकार पर नजर रखते हुए प्रेमचंद कहते है रूपयो की कमी एक ऐसा बहाना है जो गवर्नमेंट के लिए कभी सच्चा नहीं कहा जा सकता। सरकार के साधन असीम है और इतनी रकम (शिक्षा खर्च) वह बड़ी आसानी से खर्च कर सकती है। जब लड़ाई के खर्च इतने जोरो से साल व साल बढ़ते चले जाते है, अफसरों के ऐश और सहूलियतों पर रूपया कौड़ियों की तरह लुटाया जा रहा है तो काबिल नही ठहर सकता यह भी गवर्नमेंट की एक चालाकी है। प्रेमचंद के समय में शिक्षा व्यवस्था में ये उदीयमान प्रवृतियां ही थी जिनसे वे हमें आगाह करते है।

सफलता

विकास सेन (B.Sc. - CS III)

हमारे मनुष्य जीवन में आरंभ से ही दो बातों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। ये है सफलता और असफलता।

सफलता मिलते ही हम आनंद रूपी भवसागर में खुद को खो देते हैं और जैसे ही असफलता हाथ लगती खुद को गम की गहराई रूपी पताल में भ्रमण करते हुए देखते है।

सबसे पहले महत्वपूर्ण यह है कि हम यह जान ले कि सफलता क्या है और असफलता क्या?

मेरे नजरों सफलता और और सफलता को अगर एक सरल वाक्य में परिभाषित करूँ, तो सिर्फ इतना कि मेरे दिल में किसी काम को करने कि इच्छा है और मैं वह काम कर लिया अर्थात् में सफल हुआ। और दिल में काम करने की इच्छा तो है पर उसे कर नहीं पाया तो असफल हो गया।

दोस्तों यहाँ ये महत्वपूर्ण नहीं है कि काम होता है या बड़ा।

सफलता के लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम उस कार्य में अपना शत् प्रतिशत् दें क्योंकि पानी की 99.99 डिग्री में नहीं उबल सकता दोस्तों पानी को भी उबलने के लिए शत् प्रतिशत की आवश्यकता होती है।

अंत में सिर्फ इतना कहना चाहूँगा दोस्तों -

हम तब तक असफल नहीं होते जन तक स्वयं को असफल ना मान लें। इसलिए खुद पर रख यकिन, एक यकिन चट्टान हिला सकता है।

'अगर तुझे खुद पर विश्वास है जीत की तो आस है तो समझ ऊपर वाला तेरे साथ हैं और सफलता तेरे पास है।'

आपका अपना

विकास

आत्मविश्वास : सफलता की प्रथम सीढ़ी :

करूणा गजभिये (प्रयोगशाला तकनीशियन-रसायन शास्त्र विभाग)

आत्मविश्वास एक ऐसी कुंजी है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने गुणों तथा शक्तियों को नियंत्रित करके सफलता प्राप्त कर सकता है आत्मविश्वास का अर्थ है अपने अंदर को दूर करना है जब तक मनुष्य में आत्म विश्वास की भावना जागृत नहीं होगी वह छोटी सी कार्य को पूरा करने के लिये डर का सामना करना पड़ता है।

जीवन में निरंतर आगे बढ़ने के लिये अपने आत्म विश्वास को चागृत कर अपने विचारों के द्वारा स्वयं पर विजय प्राप्त कर सकते है। विचार शक्ति ही मनुष्य के भाग्य के निर्माण की प्रथम सीढ़ी है वह जैसा विचार करेगा परिणाम भी उसी के अनुरूप होगा। अतः अच्छे विचार स्वयं के आत्मविश्वास पर ही जागृत होता है, और शीघ्रता से निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है।

एक छोटा बच्चा जब प्रारंभ से चलना सिखता है तो कई बार गिरता है और सम्हलता है। और अंत में चलना सिख लेता है उसी प्रकार सभी विद्यार्थियों ये मैं यही कहना चाहती हूँ जीवन में आगे बढ़ना है,

सफलता पानी है तो हर डर की डट कर सामना करो, अपने आत्मविश्वास को जागृत करें फिर गदेखिये आपकी सफलता हर क्षेत्र पर कदम चूमेगी ।

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है

आत्मविश्वास एक ऐसी कुंजी है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने गुणों तथा शक्तियों को नियंत्रित करके सफलता प्राप्त कर सकता है।

मेरा विश्वास

श्रीमती प्रतिभा श्रीवास्तव (प्रयोगशाला तकनीशियन)

आत्म विश्वास में बड़ी ताकत होती है विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में मन का मजबूत आधार बनकर अपनी क्षमतओं को पहचानने का अवसर प्रदान करता है आत्मविश्वास। मै इसी से संबंधित एक घटना का जिक्र करना चाहूँगी आज प्रवेश का अंतिम दिन है मेरे अग्रणी महाविद्यालय में प्रवेश की काफी गहमा गहमी है तभी अचानक मुझसे मिलने पास के महाविद्यालय की छात्रा भावना आई उसने कहा मैडम तेरा एम.एससी में एडमिशन हो पायेगा कि नहीं? क्योंकि वार्षिक परीक्षा के समय छोटे भाई की तबियत ज्यादा खराब हो जाने के कारण बी.एससी अंतिम में मेरा छै नंबरों से प्रथम श्रेणी चूक गया है। मैंने कहा प्रवेश समिति से मिल लो। भावना समिति के सामने निवेदन कर रही थी कि सर मैं अपने महाविद्यालय की अध्यक्ष थी, मैने अपने महाविद्यालय में सांस्कृतिक, खेलकूद, एन.सी.सी. गतिविधियों में सक्रियता से भाग लेकर महाविद्यालय का नाम रोशन किया है, वह आगे कह रही थी मैडम मेरा भी नंबर अछा आया होता किन्तु मेरी आर्थिक स्थिति ठीक नही होने के कारण मुझे अपनी विधवा माँ के साथ घर के खरचे के साथ-साथ अपनी पढ़ाई के लिये हाथ करघे का काम करना पड़ता है जिसके कारण मैं पढ़ाई के लिये पर्याप्त समय नही दे पाई हूँ और ना ही कोचिंग या टयूशन ले पाई हूँ। मैं भी भावना की परिस्थिति से वाकिफ थी। किन्तु प्रवेश के नियमों के सामने मैं भी असहाय थी। भावना पुनः मेरे पास आई उसने अपनी निराशा ओर दुख को छिपाते ऊपरी हँसी हँसते हुये कहा मैडम, प्रवेश समिति ने नियमो का हवाला देते हुये कहा- कि ऐसा कही नही लिखा है कि जो हर क्षेत्र में सक्रिय और स्वावलंबी हो उनके लिये मेरिट लिस्ट में प्रावधान हो, हम आपको प्रवेश नही दे पायेगें। गमैडम अब मेरा एडमिशन तो इस महाविद्यालय में नही हो सकता 'ऐसा कह कर अपने को संयत करने लगी। मैने कहा कोई बात नही, तुम निराश मत हो, तो उसने आत्म विश्वास से हँसते हुये कहा नही मैडम मैं निराश नही होती। लेकिन मैं आपको भरोसा दिलाती हूं कि आज जिस कम नंबरों के कारण मै रिजेक्ट की गई हूँ, उसे मै चुनौती मानते हुए अब इतनी ज्यादा मेहनत करूगी कि अब मुझे काई कम नंबरो के कारण रिजेक्ट ना कर पाये। मुझे मेरे ही महाविद्यालय में एडमिशन मिल जायेगा किन्तु वहाँ की फीस बहुत ज्यादा है जिसे मै वहन नही कर पाऊगी। इसलिये मुझे अग्रणी महाविद्यालय में प्रवेश के लिये आना पड़ा क्योंकि यहाँ की फीस बहुत कम है मुझे उसके आत्म विश्वास से किये हुये वादे और आत्म विश्वास से दमकते चेहरे ने झकझोर दिया और मैं सोचने लगी कि बहुत से विद्याथ्री ऐसे मौके पर अपना आपा खो कर रेने लगते है ओर बहुत ज्यादा निराश हो जाते है किन्तु मेरे सामने खड़ी यह छात्रा आत्म विश्वास से भरी ऊर्जावान है उसके आत्म विश्वास से मुझमे अन्तः प्रेरणा हुई और मैने उससे कहा कि मुझे तुम जैसी आत्मविश्वासी छात्राओं को देश की अमूल्य धरोहर समझ कर उनकी यथा योग्य सहायता करे। मैने उससे कहा तुम जैसी छात्राये जो असफलता को सफलता की जननी मानती है तुम रिजेक्ट नही की गई हो तुम अपने ही महाविद्यालय से एम.एस.सी करो हमस ब लोग मिलकर तुम्हारे फीस की व्यवस्था करेगे। और अभी वह अपने महाविद्यालय से एम.एस.सी कर रही है। विपरीत से विपरीत परिस्थिति में भी यदि आपका आत्मविश्वास कायम है तो दुनिया की कोई ताकत आपको आपके मंजिल तक जाने से नही रोक सकती। कठिन से कठिन डगर पर भी मंजिल आपका इंतजार करेगी।

कताबें बोझ हो गई

मेरी बात किताब से, यू ही इक रोज हो गई
ऐ किताब तेरे पन्नों में नैतिकता कही खो गई
मुझे कहना है, मुझे कहने दो -
किताबे बोझ हो गई ..

इतिहास की लड़ाई लड़ते लड़ते
आदमी था बंदर पढ़ते-पढ़ते
इक बच्ची कोने में सो गई
जब खुली आँख, वह समझ न पाई
अभी तलक मैं इंसा थी, इक पल में जानवर हो गई।
मुझे कहना है , मुझे कहने दो

किताबें बोझ .....
मेरा बात किताब से यही इक रोज हो गई
हर बच्चा किताब में प्रेम पढ़ता
और प्यार लूटाती किताबें
परीक्षा में न डराती किताबें
जीवन निर्माण करती किताबे
अब रोजी रोटी की खोज हो गई
मुझे लगता है, मुझे कहना है, मुझे कहने दो
किताबे बोझ हो गई ।

नारी का दर्द एवं व्याकुलता

कोख में क्यों मेरे को, मार दिया जाता है ?
मारते वक्त क्यों नहीं, दया आता है।।
अरे, तुम भी हो प्राणी, मैं भी हूँ प्राणी
फिर आधे में ही काट लिया जाता है
माँ की ममता ने रोका तो, देख ली दुनिया मैं,
माँ ने सींचा तो, पल्लवित हो गई मैं ।।

फिर हुई मैं बड़ी शयानी,
लेकिन दुनिया को, एक आँख न भायी ।।
क्यों बुरी नजरों का, शिकार होती हूँ मैं,
क्यों सुनसान राहों में, अकेले चल नहीं पाती हूँ मैं, ।।
क्यों मेरे को गंदी गर्दिश में, ढकेल दिया जाता है
दुनिया को मेरा रहना, सहा नहीं जाता है ।।

उठाईगिरी, बेचना आदि तक, सीमित है क्या जिंदगी मेरी
अत्याचार सहने तक सीमित है, क्या जिंदगी मेरी ? ।।
ज्यादा न तड़पाओं नारी को, विचलित न करो नारी को
काली, दुर्गा, बन गई तो, खत्म कर देगी तेरी जिन्दगी को ।।

अब मैंने ठान लिया है, दुनिया को जान लिया है ।।
नहीं चलेगी दुनिया की मानमानी,
अब बनूँगी किरण बेदी, इंदिरा गाँधी
चाँद नहीं, सूरज बनूँगी
बुरी नजरों को जला के रख दूँगी ।।

नाम .....
कक्षा .....

अस्तित्व खोती धोती

लिए अश्रू आँख में धोती रोती
जहाँ में अपना अस्तित्व खोती

पूछ रही है प्यारी धोती ..?
जो मैं आज फैशन में होती
सब लड़के अगर पहनते धोती
लिए अश्रु आँख में फिर क्यूँ मैं
मिलती तुमको रोती-धोती

जहाँ में अपना अस्तित्व खोती
पूछ रही है प्यारी धोती

है मैं सफेद रंग का एक लिबास
रक्खू तुमसे एक ही आस

कभी तो पहनो तुम भी मुझको
घुमा कमर में सिकुड़-सिकुड़ के
मानो यकीन सब संगी साथी
देखेगें तुमको मुड़-मुड़के
हूँ साथी मैं बहुत पुरानी
अब छोड़ो बी ये फैशन छोटी
मैं ये चाहूँ पीली-हरी ये
पैंट कमर से उतरे खोटी
लिए अश्रु आँख में रोती-धोती
जहाँ में अपना अस्तित्व खोती
पूछ रही है प्यारी धोती?
समर भूमि पर आजादी के
गाँधी के तन संग चल पड़ी
मैं पुरब की धोती
जय हिन्द बोलकर लड़ पड़ी
बनी साक्षी मैं भी उस क्षण
जब आजादी की जली ज्योति
बचाओ मुझे तुम अपनाओ भी
मैं हूँ तुम्हारे संस्कृति की मोती
लिए अश्रु आँख में रोती धोती
जहाँ में अपना अस्तित्व खोती
पूछ रही है प्यारी धोती

नाम .....
कक्षा .....

छात्रावास के नए चेहरे

आशीष कुमार यादव
एम.ए. (द्वितीय सेमेस्टर इतिहास)

बड़ी बड़ी खिड़कियां बड़े-बड़े दरवाजे, एक के बाद एक कमरें बड़ा हॉल और एक बड़ा सा छत जो प्राय : इतवार के दिन सूखाने के लिए रखे गए कपड़ों से ढका रहता और इसी के बीच अपनी दुनिया से निकलकर एक नई दुनिया में आया 18-19 साल का एक नया चेहरा जो जीवन में कुछ कर गुजरने और मॉ बाप के माथे के पसीने को पौधने का ख्वाब लिए अपनी तरह की नई दुनिया में कदम रखता है, जिसकी सुबह माँ के उठाने और मां के द्वारा पीने के लिए लाए गए चाय से शुरू होती थी। पहली बार घर से बाहर किसी ऐसी जगह पर जहाँ उसके मनोभावों के अनुसार उसका अपना कोई नही है वह सुबह उठ गया, और इसी के साथ शुरूवात होती है उसके छात्रावास जीवन की। मैंने भी अपने छात्रावास जीवन के शुरूवाती दिनों में अनुभव किया था कि किसी नए चेहरे के लिए घर से बाहर रहना कठिन है और यदि घर से बाहर रह भी जाए तो छात्रावास में रहना कठिन है। छात्रावास जीवन में प्रवेश किए इस नए चेहरे के मन भी घर परिवार वालों की यादे आंधी के समान तेज रफ्तार से आती और सब कुछ उजाड़ कर उसके कर्तव्य पथ का मार्ग अवरूद्ध करने का प्रयास करती, लेकिन फिर वह अपने लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित कर पुनः अपना मार्ग बनाता क्योंकि यह लक्ष्य न केवल उससे अपितु उसके परिवार से भी जुडा था। समय के साथ वह छात्रावास के तौर-तरीको से वाकिफ होता है। कभी-कभी वह यह भी सोचता है कि, मेरे मन में ऐसे विचार बार-बार क्यों आते हैं जबकि मेरे साथ के अन्य मेरे छात्रावास मित्र तो हसते बोलते रहते हैं। लेकिन इसका कारण न किसी से पूछता और न ही बताता कि, शायद इन बातों को बताने से किसी के सामने में हंसी का पात्र न बन जाए, लेकिन जब एक दिन सभी नए चेहरे आपस में बैठकर बातें करते समय एक नए चेहरे द्वारा थही बात बताने पर अन्य चेहरों द्वारा जब यह कहा जाता है कि, ऐसे विचार तो हमारे मन में भी आते हैं तब उसे पता चलता है कि, ऐसा सोचने वाला मैं एक मात्र नहीं हूं, अपितु मेरे समान अन्य छात्र भी हैं। यह नया चेहरा भी अपने अंतमन की पूरी बात अपने इन मित्रों को बताता है तो इसे ऐसा अनुभव होता है। जिस प्रकार किसी व्यक्ति के पूरे शरीर में दर्द भरा हो और वह एक क्षण में खत्म हो जाने से उसका शरीर फिर से ताजगी और स्फूर्ती का अनुभव कर नई ऊर्जा का संचार हो रहा हो। अब इसका परिचय अपने से पहले रह रहे छात्रावास के चेहरो से होता है, जो गलती करने पर जमकर फटकार तो लगाते है साथ ही कमजोर पड़ने पर अपने अनुज की भांती प्रेमपूर्वक समझाते हैं हौसला बढ़ाते हैं तथा लक्ष्य की ओर ध्यान केन्द्रित कराते हैं नई ऊर्जा का संचार कर देते है। और नए चेहरों में देखे गए किसी गुण और कला के विकाश हेतु प्रेरित करते हैं। ये नए चेहरे निश्चित समय पर उठकर निश्चित समय पर खाना खाते (भोजन ग्रहण) से महाविद्यालय जाने और वहां से आने तक अत्यंत व्यस्त रहते और आने के बाद जब रात को भोजन के समय टाटपट्टी पर बैठकर खाना खाते तो शुरू होता इनकी हंसी माजक, एक दूसरे पर तंज कसने और उत्तर प्रति उत्तर का दौर जिसमें वे सब अपनी दिनभर की थकान को भुलाकर पुनः उर्जा से परिपूर्ण हो जाते और अध्ययन कार्य के लिए बैठ जाते थे। छात्रावास में रहने वाले पचास चेहरे और पचास विचार और इनके बीच होना वाले तर्क-वितर्क इनके दैनिक जीवन का हिस्सा बन गया था।

कभी-कभी किसी बात पर झूमा-झटकी भी हो जाती थी, लेकिन दूसरे ही दिन ईष्या-देवेश भुलाकर फिर एक दूसरे का दुःख-सुख बटने लग जाते। वास्तव मं हम सब न केवल अध्ययन कार्य ही कर रहे थे, अपितु जीवन जीना भी सीख रहे थे।

इन सब के बीच हम सब नए चेहरे अपने घर परिवार को भूले नही थे और जब भी एक साथ बैठते मौका मिलते ही अपने-अपने भूतकाल को याद करते कि, किस प्रकार हमारे पिताजी, हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मेहनत करते हैं हमारे गांव में अभी कैसा माहौल होगा। जो कोई भी अपने गांव अपने परिवार और अपने यहां आने के कारण अपनी इच्छाओं को बताता भावुकता से भरी उसकी आये हल्सकी सी चमक उठती जो उसके अपने गांव परिवार के प्रति अगाध प्रेम को प्रदर्शित कर देता था। और यदि कभी भारी-भरकम बैग लेकर स्कूल से घर जा रहे शहर के बच्चों को देखते हम सब यह बात

करते कि इनके पास अपने बचपन के बारे में बताने को कुछ नही रहेगा और यदि कुछ रहेगा तो सिर्फ घर से स्कूल और स्कूल से घर जबकि हम सब कितने सौभाग्यशाली है, जिन्होंने अपने बचपन में न जाने क्या क्या किए नदी तालाबों में नहाया, ठंड के दिनों में मिजाई के होने के बाद रखे पैरो में उछ्ल कूद किया, गली-कूचों में गुगी डंडे खेले और तो और आम -अमरूद भी चुरा-चुरा कर खाए। और कभी कालेज (महाविद्यालय) से लम्बी छुट्टी मिल जाती तो नए चेहरे खुशी-खुशी एक दिन पहले ही कपड़ों को घड़ी कर रख लेते और रात में घर जाने के सोच विचार और स्वप्न देखते हुए बितता। घर से नई ऊर्जा से परिपूर्ण होकर पुनः छात्रावास आते। माँ बाप के समान छात्रावास अधिकतम सदैव सही मार्ग का अनुशरण कराते थे। अब तो कुछ ऐसा होता था कि, यदि हम महाविद्यालय से छात्रावास की ओर जाते और हम सब से किसी ईस्ट-मित्र द्वारा यदि यह पूछा जाता कि कहाँ जा रहे हो, तो बिना सोचे समझे मुँह से यकायक निकाल जाता कि घर जा रहे हैं। किंतु यथार्थ मे वह छात्रावास था लेकिन हम सब का आत्मिय संबंध इसके ऐसा जुड़ गया था कि यह अब हमारा छात्रावास न होकर घर बन गया था।

कहते हैं कि, यदि अपने छात्रावास नहीं देखा तो अपने जीवन के कई महत्वपूर्ण भागों में एक भाग नहीं देखा। छात्रावास जीवन के प्रारंभिक वर्षों में मैने महसूस किया था कि घर से बाहर रहना कठिन है और यदि किसी तरह रह गए तो छात्रावास में रहना कठिन है, लेकिन छात्रावास जीवन के अंतिम वर्षों में मैने ये महसूस किया कि यदि छात्रावास में रह गए तो छात्रावास को छोड़ना कठिन है इसीलिए तो छात्रावास जीवन विद्यार्थी जीवन का गोल्डन लाइफ कहा जाता है।

कंचे का आग्रह

नाम .....
पद.....

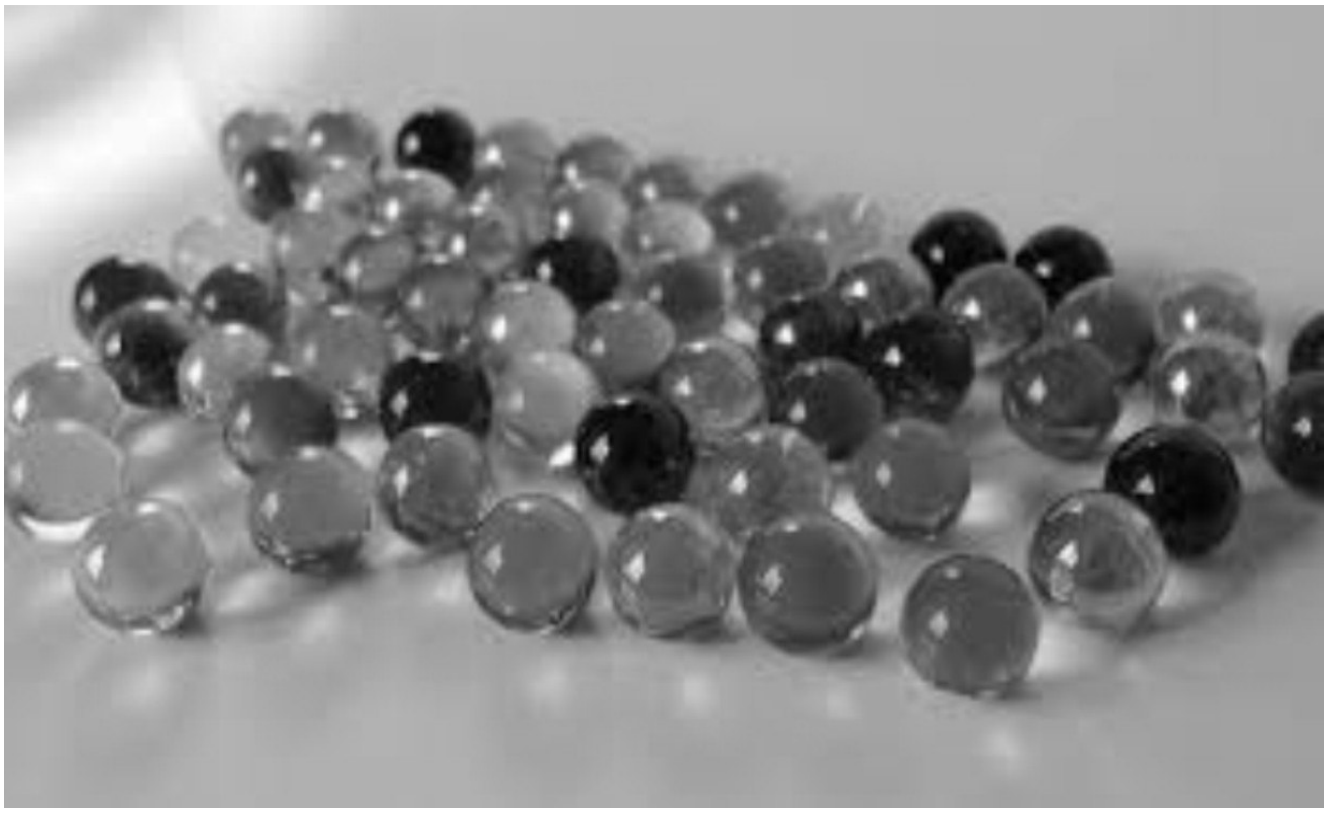

कॉलेज में नैक की तैयारी चल रही थीं । हमारी गुणवत्ता-कमियाँ परखने एवं पूर्व तैयारी हेतु मैक टीम का पर्दापण भी हो गया । उसी गहमागहमी में बने माहौल के साथ-साथ मीटिंग भी हुई । बचे हुए काम निपटाते हुए मैं अपने रूम से बैग उठाकर चलने लगी कि अचानक मेरे बैग से एक कंचा गिरा और टक-टक की आवाज करता हुआ रूम से बाहर निकल आया जैसे मुझे बाहर बुला रहा हो कि बहुत देर ही गयी अब तो जाओ । कंचा मेरे बेटे का था, सोचने लगी मेरे बैग में कैसे आया होगा या आज अचानक कहाँ से गिरा जबकि बैग कहीं से फटा भी नहीं था । मान लिया कुछ हुआ, पर इतना जरूर एहसास हो गया कि कंचे के माध्यम से बच्चे ने याद दिला दिया कि मम्मी मैं घर पर आपका इंतजार कर रहा हूँ कब आओगे । घर जाने की मेरी तड़प बड़ गयी । मैंने कंचे को उठाया और तेज कदमों से थंब इप्रेशन देकर घर जाने निकल पड़ी ।

मशीन की तरह सुबह से कॉलेज जाने तक घर का प्रबंधन और फिर कॉलेज के काम करते-करते कब सुबह से शाम हो जाती है पता ही नहीं चलता। यह है आजकल की व्यस्ततम जिंदगी । जिसमें लाइफ

वैल्यू पर सोचने का वक्त ही कहाँ है । दौड़ते-भागते कॉलेज पहुंचने के बाद क्लास में केवल पढ़ाने का काम ही नहीं बल्कि कैम्पस में कदम रखते ही वहाँ के काम संबंधी योजनाओं के बादल घुमड़ने लगते हैं जिनका बरसना तो सरकारी प्रक्रिया पर ही निर्भर करता है । कॉलेज के विद्यार्थियो की समस्याएं सुलझाने से लेकर उन तक विभिन्न सूचनाएं पहुँचाने की जिम्मेदारी फिर उनका क्रियान्वयन करते-करते घर को तो भूल ही जाते है । दोहरी जिम्मेदारी में कभी घर तो कभी कॉलेज छूटता है दोनो जगह 100 प्रतिशत और सुपर वुमन बनने की चाह तब धरी रह जाती है जब स्वयं का या आपना कुछ छूटने लगता है ।

मुझे वो समय अच्छी तरह याद है जब प्रोफेसर्स अपनी क्लास टाइम से लेकर घर आ जाते थे, घर के कामों में भी बहुत समय दे पाते थे, इस तरह घर और कार्यस्थल की संतुलित लाइफ के कारण ही कुछ लोग इस प्रोफेशन में आते थे । सिर्फ विशेष अवसरों जैसे वार्षिक उत्सव, स्पोर्टस आदि पर वे अतिरिक्त समय देते थे । अतिरिक्त शैक्षणेत्तर गतिविधियों के लिये सूचनायें बोर्ड पर लग जाती थी जिन छात्र-छात्राओं को रूचि होती स्वयं अपनी भागीदारी सुनिश्चत कर सफलता की जानकारी प्रोफेसर्स को दे देते थे । प्रोफेसर से विषय के अलावा कोई और बात करने की हिम्मत ही नहीं होती थी । दूरी कुछ ज्यादा बनी रहती । हमारे प्रोफेसर्स बताते थे कि वो जब पढ़ते थे तब तो विभाग या स्टाफ रूप के सामने पर्दे को हटाना तो दूर की बात सामने से गुजरने में भी संकोच रहता था । कम से कम हम पर्दे से झाँक तो लेते थे । लेकिन आज तो यह आलम है कि हम जब प्रोफेसर बने हैं पर्दे को स्वयं एक तरफ कर देते हैं ताकि विद्यार्थी हमें देख हमसे रूबरू हो सके, अपनी बात कह सके । बहुत अच्छा भी है इस तरह की सोच ने निश्चित रूप से गुरु-शिष्य के बीच के अंतराल को उसी तरह कम किया जैसे घर में पिता-पुत्र के बीच का अंतराल । ऐसे वातावरण मे हमारी व्यस्तता बढ़ना स्वभाविक है हमें सिर्फ अपने नहीं बल्कि कॉलेज के लगभग 5000 विद्यार्थियों में से कम से कम 50 से तो बात करना एवं उनकी समस्या सुनना या संबंधित कार्यों को करना पड़ता है । इस उम्र के नाजुक पड़ाव से गुजरते नौनिहालों को कभी प्यार से तो कभी डॉटकर समझाना भी पड़ता है । इसलिये पढ़ाने के अतिरिक्त कॉलेज प्रशासन द्वारा सौपे गये या स्वयं शिक्षक होने के नाते कुछ जिम्मेदारियों को भी पूरा करना होता है । आज कॉलेज की अनेक गतिविधियों को सुचारू रूप से संपन्न करना आपस में ताल-मेल बैठाते हुए संयमित व्यवहार कर अच्छा वातावरण बनान भी हमारा कर्तव्य बन गया है । इतना सब करने में कुछ तो छूटेगा ही । मानव ही तो हैं, चमत्कार तो नहीं कर सकते । परिणामतः महत्वकांक्षाओं ने व्यस्तताओं ने हमारे कुछ तो चुराया है और वह है स्वयं के लिये मिलने वाला वक्त । हम यह सोच कर खुस रहते हैं कि हम घर और कार्य स्थल पर अपने कर्तव्य बखूबी निबा रहे हैं लेकिन कई बार हम दोनों ही जगह अपने आप को अधूरा या अफल पाते हैं। इस तरह के हालात में नौकरी पेशा माँ से शिकायत करने एक बच्चे का हक बनता है वह मुँह से न कहे पर उसका चेहरा बात देता है कि उसके अंदर माँ से कुछ प्रश्न है कि माँ आप दौड़ती-भागती क्यों रहती है य मेरे पास कुछ पल बैठकर बातें क्यों नहीं कर पाती? दोपहर में मुझे थाली परोसकर क्यों नहीं दे पाती ? क्या यही था उस कंचे का आग्रह । बच्चा 22 वर्ष का हो गया पर कंचों से अभी भी खेलता है क्योंकि उसके अंदर का बच्चा अभी भी जीवित है और रहेगा भी क्योंकि माँ की जरूरत तो हर क्षण में रहती है । उस कंचे के द्वारा उसने एहसास कराया कि इतनी ज्यादा महत्वकांक्षा रखने या व्यस्त रहने की जरूरत नहीं कि मैं ही छूट जाऊँ । मैं आपको अंगुली पकड़ कर घर नहीं ला सकता इसलिये कंचे को भेज रहा हूँ जो ये याद दिलायेगा कि अब तो घर चलों। माँ वहाँ भी कोई है जो आपकी राह देख रहा है ।

कहने का तात्पर्य यह है कि परिस्थिति वश नारी कोमललता से उस कठोर दरख्त की तरह तो बन गयी है जो कई पंछियों का बसेरा, थके पथिक के लिय छाया और बरखा का आमंत्रण तो है किन्तु वह यह न भूले की उसकी ज्यादा शाखाएं किसी दूसरे पौधे को पनपने में बाधा भी बन जाती है उसे तो कठोर दरख्त बनने के साथ कोमल लता के गुणों को भी अपने अन्दर बनायें रखना है जो बिना किसी अहम के किसी के सहारे फलती-फूलती है अर्थात् ईश्वर की सर्वोत्तम कृति होने के कारण हम नारियों को ममत्व, दया, प्रेम, करुणा, क्षमाशीलता और नतमस्तक बने रहने के गुणों को भी अपने में समाहित करना होगा । हमारे समाज और वर्तमान की भी हमसे यही उपेक्षा है ताकि संसकृति बची रहे । इसलिए हमें ज्यादा सोच विचार किये बिना उस नदी के समान बनना है जो निश्छल व समभाव से निरन्तर बहती रहती है यह नहीं सोचती किसकी प्यास बुझेगी या किसकी नहीं । जन कल्याण भाव से उसी तरह हम नारियों को भी अन्दर की निरन्तरता को बनायें रखना होगा जिससे घर, समाज और देश का समग्र विकास हो सके ।

भारतीय संस्कृति की समग्र संकल्पना के अदीन भारत सरकार के अल्पसंख्यक समुदायों को संरक्षित करने की योजना हमारी धरोहर

दुष्यंत कुमार (बीएससी भाग -3)

प्रस्तावना :- हमारा देश भारत अनेकता में एकता के लिये पूरे समूचे विश्व में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है । यहाँ हिन्दू बहुत राष्ट्र होने के बाद भी जो विभिन्न जाति धर्म के लोग यहाँ निवास करते हैं उनके लिये भी भारत सरकार द्वारा कई परियोजना या कार्यक्रम भी चलाये जा रहे हैं ।

भारत सरकार द्वारा अल्पसंख्यकों के लिये नयी रोशनी नयी उड़ान आदि योजनाएं संचालित हैं, उनमें से ही एक महत्वपूर्ण योजना 'हमारी धरोहर है ।'

अल्पसंख्यकों के कार्य मंत्रालय को कानून तथा व्यवस्था को छोड़कर अल्पसंख्यकों के सभी मामले में देखरेख का अधिदेश प्राप्त है। जिसके कारण अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय 'हमारी धरोहर' नामक योजना का संचालन कर रही है ।

योजना का उद्देश्य :-

योजना का प्रमुख उद्देश्य भारतीय संस्कृति की समग्र संकल्पना के आधार पर या उनके अधीन अल्पसंख्यकों के समृद्ध विरासत का संरक्षण करना । आइकोनिक प्रदर्शिनियों की क्यूरेट करना साहित्य एवं दस्तावेजों का संरक्षण तथा अल्पसंख्यकों द्वारा अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देना है ।

परियोजना के क्रियान्वयन के लिये सहायताकर्ता :- अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय इस क्षेत्र की प्रमुक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान भागीदारों द्वारा भारतीय संस्कृति मंत्रालय से सलाह मशविरा करके परियोजना का क्रियान्वयन कर रहा है । इस ज्ञान के भागीदारों में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विधि स्मारक निधि राष्ट्रीय संग्रहालय आदि हैं जो इस परियोजना के संचालन में अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय को समुचित सहयोग प्रदान कर रहे हैं ।

भारत सरकार के अल्पसंख्यक कल्याण आदि अधिनियम 1992 के तहत छः धर्म इसके अन्तर्गत आते हैं, मुस्लिम ईसाई, सिक्ख, पारसी तथा बौद्धो व जैन इनमें से जैनधर्म को 2014 में अल्पसंख्यक के रूप में अधिसूचित किया गया है ।

अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय द्वारा इस परियोजना को संचालित करने के लिये परियोजना के निरीक्षण के लिये एजेंसी का गठन किया गया है जिसके सदस्य भारतीय सर्वेक्षण (पुरातत्व) आदि हो सकते हैं। 'हमारी धरोहर' योजना 12 वीं पंचवर्षीय योजना के अंतिम 3 वर्षों में क्रियान्वित हो रही हैं । यह100 प्रतिशत केन्द्र क्षेत्र की योजना है ।

इस परियोजना के लिये सत्र 2014-15 में पाँच करोड़ द्वितीय सत्र 2015-16 में 10 करोड़ तथा 2016-17 के लिये 11 करोड़ का बजट आबंटित हुआ है ।

परियोजना के लागत को संगठन द्वारा प्रस्तुत आवेदन में बताये जाने बाद परियोजना की संयुक्त सचिव जो सम्बन्धित है के अध्यक्षता में परियोजना अनुमोदन समिति द्वारा जाँच व विचार किया जाता है परियोजना अनुमोदन समिति (पीएसी) द्वारा इसकी जाँच करने का अधिकार है ।

निधियों की निर्मुक्ति या अनुदान राशि का वितरण :-

प्रस्तुत परियोजना को जिसके अन्तर्गत स्मारकों आदि अमूल्य अल्पसंख्यक धरोहरों को सजाने सहेजने आदि के लिये अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय द्वारा 40-40-20 प्रतिशत के भाग में राशि प्रदान की जाती है । प्रथमु किश्त प्रस्तुत परियोजना के अनुमोदन के बाद दी जाती है । द्वितीय किश्त प्रथम किश्त के 90 प्रतिशत लेखा परिक्षण उपयोग तथा कार्य की तस्वीरों के साथ प्राधिकृत एजेन्सी द्वारा सत्यापित करने पर दी जाती है । तृतीय व अंतिम किश्त को कार्य पूर्ण होने पर उसकी तस्वीरों तथा प्रथम व द्वितीय किश्त के लेखा परीक्षण उपयोग पर प्राधिकृति एजेन्सी के द्वारा सत्यापित किया जाने पर दी जाती है ।

शोधकर्ता के लिये अध्येत्तावृत्ति :- शोधकर्त्ता को 35 वर्ष की आयु से कम होना चाहिए तथा स्नातकोत्तर में 50 फीसदी अंकों के साथ उत्तीर्ण तथा वि.वि. में नियमित एम.फिल. या पीएचडी. का छात्र होना चाहिए ।

शोधकर्त्ता के लिय अध्येत्तावृत्ति तीन वर्षों के लिये दी जाती है जिसमें प्रथम दो वर्षों में 25,000 रु. प्रतिमाह की दर से अध्येतावृत्ति प्रदान की जाती है तथा तीसरे वर्ष में 28,000 रू. प्रतिमाह की दर स ेप्रदान की जाती है । यदि शोधकार्य तीन वर्षों में पूर्ण नहीं होता है तो इस मामले में व कार्य की प्रगति को देखते हुए प्राधिकृत अधिकारी के अनुमोदन से एक वर्ष की अध्येत्तावृत्ति 28,000 रु. प्रतिमाह की दर से प्रदान की जाती है । यह राशि छः महीने की राशि एक साथ बैंक खाते में डाल दी जाती है ।

योजना की समीक्षा :- योजना की समीक्षा प्राधिकृत एजेंसियों के मूल्यांकन द्वारा तथा प्रभाव मूल्यांकन के पश्चात् 12 वीं पंचवर्षीय योजना के अन्तिम वर्ष में समीक्षा की जायेगी । भारत सरकार द्वारा अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय की सहायता से 'नयी रोशनी' जिसमें अल्पसंख्याक महिलाओं की नेतृत्व क्षमता को विकसित किया जा रहा है तथा 'नयी उड़ान' योजना के माध्यम से अल्पसंख्यकों को यूपीएससी, पीएससी आदि परीक्षाओं की तैयारी के लिये अनुदान राशि द्वारा सहायता प्रदान किया जा रहा है । 'हमारी धरोहर' योजना अल्पसंख्यकों के समृद्धि विरासत को सहेजने का कार्य कर रहा है । अल्पसंख्यकों की इस 'हमारी धरोहर' नामक योजना में कुछ नियम व शर्तें भी हैं जिनमें यह है कि किसी भी सरकारी स्त्रोत या बाह्य स्त्रोत से उसी परियोजना के लिये अनुदान प्राप्त नहीं होना चाहिए । अनुदान की राशि संगठन द्वारा पंथातरित अर्थात् किसी दूसरे संगठन या एजेन्सी को इसकी जिम्मेदारी नहीं दी जा सकती है । इस अनुदान की राशि का उपयोग रूढ़िवादी, एक दूसरे में भेदभाव फैलाने आदि के लिए उपयोग नहीं किया जायेगा । यदि प्राधिकृत ऐजन्सी को कार्य में कुछ कमी या गड़बड़ी नजर आती है तो सहायता अनुदान की राशि समाप्त की जा सकती है । अतः यह 'हमारी धरोहर' नामक परियोजना से न केवल अल्पसंख्यको के समृद्ध विरासत का विकास व संरक्षण नहीं होगा, अपितु भारतीय संस्कृति की भी रक्षा होगा तथा तता हमें अल्पसंख्यकों के संस्कृति आदि की जानकारी होगी तथा हम उनके साथ अपना सामाजिक ताना-बाना मजबूत कर सकेंगे क्योंकि किसी की संस्कृति को जाने बगैर हम उनके साथ सामंजस्य नहीं बैठा सकते हैं। अतः 'हमारी धरोहर' योजना भारत के अनेकता में एकता को सर्वोपरि संरक्षित करेगी तथा भारत के विकास में इसका महत्वपूर्ण योगदान साबित होगा ।

हिन्दी के विकास में आधुनिक प्रसार माध्यमों की भूमिका

1.

प्रस्तावना: – इक्कीसवीं सदी की व्यावसायकिता जब हिन्दी को केवल शास्त्रीय भाषा कहकर इसकी उपयोगिता पर प्रश्न चिह्न लगाने लगी तब इस समर्थ भाषा ने न केवल अपने अस्तित्व की रक्षा की वरण इस घोर व्यावसायिक युग में संचार की तमाम प्रतिस्पर्धाओं को लाँघ अपनी गरिमामयी उपस्थिति भी दर्ज कराई । जनसंचार के सबसे सशक्त माध्यम सिनेमा, इंटरनेट, टेलीविजन, पत्रिकाएँ ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में वैश्विक क्रांति ला दी हैं ।

संचार माध्यम यदि आज के आदमी को पूरी दुनिया से जोड़ता है तो वे ऐसा भाषा के द्वारा ही करते हैं । अतः संचार माध्यम की भाषा के रूप में प्रयुक्त होने पर हिन्दी समस्त ज्ञान-विज्ञान और आधुनिक विषयों से सहज ही जुड़ गई है। आज व्यवहार क्षेत्र की व्यापकता के कारण संचार माध्यमों के सहारे हिन्दी भाषा की भी संप्रेक्षण क्षमता का बहुमुखी विकास हो रहा है हम देख सकते हैं कि राष्ट्रीय ही नहीं, विविध अंतर्राष्ट्रीय चैनलों में हिन्दी आज सब प्रकार के आधुनिक संदर्भो को व्यक्त करने के अपने सामर्थ्य को विश्व के समक्ष प्रमाणित कर रही है ।

भारत में उदारीकरण और वैश्वीकरण के प्रवेश के बाद से अंग्रेजी को कड़ी टक्कर हिन्दी ने दी है । सवा अरब की जनसंख्या वाले बारत में हिन्दी की पहुँच उद्योगपतियों को ही नहीं बल्कि मीडिया उद्योग को भी आकर्षित किया है ।

हिन्दी के विकास का एक बड़ा उदाहरण यह हो सकता है कि पिछले पाँच-सात वर्षों में संचार माध्यमों पर हिन्दी के विज्ञापनों के अनुपात में सत्तर प्रतिशत उछाल आया है । इसका कारण भी साफ है । भारत रूपी इस बड़े बाजार में सबसे बड़ा उपभोक्ता वर्ग मध्य और निम्नवित्व समाज का है जिसकी समझ और आस्था अंग्रेजी की अपेक्षा मातृभाषा या राष्ट्रभाषा से अधिक प्रभावित होती है । इस नए भाषिक परिवेश में विभिन्न आधुनिक प्रसार माध्यमों की भूमिका केन्द्रीय हो गई है ।

जन-जन की भाषा है हिन्दी
भारत की आशा है हिन्दी,
ऐसी कालजयी भाषा है हिन्दी
सरल शब्दों में कहा जाए तो
जीवन की परिभाषा है हिन्दी ।

(2) हिन्दी के विकास में कुछ आधुनिक प्रसार माध्यम की भूमिका का वर्णन :-

(अ) इंटरनेट – समकालीन युग सूचना प्राद्योगिकी का युग है । सूचना विस्फोट के इस युग में इंटरनेट की भूमिका महत्वपूर्ण और सर्वव्यापी परिलक्षित होती है । अतः हिन्दी के विकास में आधुनिक प्रसार माध्यम के रूप में इंटरनेट का स्थान नवीनतम प्रणाली के रूप में हम महत्वपूर्ण बनता नजर आ रहा है । 'इंटरनेट टेलीफोनी' के माध्यम से भी प्रचुर मात्रा में हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार विदेशों में हो रहा है।

साहित्यकारों के लिये अधिकतम ज्ञान प्राप्त करने हेतु इंटरनेट उपयुक्त सिद्ध हो रहा है। विभिन्न भारतीय भाषाओं का साहित्य हिन्दी के माध्यम से पाठकों तक पहुँचाने का कार्य इंटरनेट के माध्यम से सुविधाजनक हो रहा है । इंटर पर साहित्य, शब्दकोष आदि विभिन्न विषयों की जानकारी होने के कारण अनुसंधाताओं को विचारों का आदान-प्रदान करने में सफलता मिल रही है । वर्तमान समय में हिन्दी भाषा के अनुसंधनात्मक विकास में अनुसंधान क्षेत्र को नई दिशा देने में इंटरनेट की भूमिका महत्वपूर्ण दृष्टिगोचर होती है ।

वर्तमान समय का विचार किया जाए तो वर्तनीशोधक विश्लेषक, कम्प्यूटर कोश, रूपनात्मक औरवाक्यात्मक विश्लेषक, स्पीच सिंथे साइजर, रिकगनाइजर, डिकोटर आदि की उपलब्धता के कारण इंटरनेट के माध्यम से हिन्दी भाषा शिक्षण सुदूर पहुँच रहा है । इंटरनेट के माध्यम से हिन्दी भाषा को वैज्ञानिक तकनीकी यांत्रिकी, प्रौद्योगिकी आदि विषयों के साथ जोड़कर हिन्दी भाषा का सुदीर्घ परम्परा को अधिक समृद्ध बनाया जा रहा है। इंटरनेट के माध्यम से हिन्दी पत्रकारिताएं, नवीनतम सूचनाएँ, पुस्तकें हमें प्राप्त हो रही है । अतः हिन्दी के विकास में इंटरनेट दिशादर्शक बनता नजर आ रहा है । हम हिन्दी भाषा को इंटरनेट के माध्यम से जितना जीवनापयोगी व्यवसायमूलक बनाने की दृष्टि से विकसित करेंगे उतनी जल्दी हिन्दी समृद्ध और शक्तिमान भाषा बनकर विश्व के सामने आयेगी । सरकारी,

सार्वजनिक, व्यक्तिगत, स्कूलों, कॉलेजों में व्यापक तौर पर यदि हिन्दी विकास के लिये इंटरनेट का प्रयोग किया जाएगा तो हिन्दी अंततः विश्व मंच पर अपनी अलग पहचान बनायेगी । इसमें दो राय नहीं हैं ।

हिन्दी के विकास में दूसरी ओर कम्प्युटर के प्रयोग को नकारा नहीं जा सकता है । इन दिनो नए जनसंचार माध्यमों में ब्लॉग अपनी अलग भूमिका निभा रहा है । वर्ष 2003 में ब्लॉग की दुनिया में हिन्दी का प्रवेश हुआ और आज बड़ी संख्या में ब्लॉग पढ़े और पढ़ाए जा रहे हैं । राजनीतिक, सासंकृतिक और शिक्षक आदि क्षेत्रों की जानकारी ब्लॉग पर हिन्दी भाषा में उपलब्ध हो रही है । 2003 से 2015 तक के ब्लॉगिंग इतिहास का अध्ययन करने से पता चलता है कि दुनियाभार के अनेक साहित्यकार अब हिन्दी भाषा में ब्लॉग लिख रहे हैं । आज समाचार चैनलों पर दिखाए जाने वाली खबरों और प्रोग्रामों का इंटरनेट वर्जन मौजूद है और इसी तरह सभी समाचार पत्र-पत्रिकाएं भी वेब पत्रकारिता की दुनिया में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है ।

अतः इस संदर्भ में हम यह निष्कर्ष निकालते है कि हिन्दी के विकास में इंटरनेट जैसे आधुनिक सिंहावलोकन से यह स्पष्ट है कि इंटरनेट हिन्दी के विकास में सर्वाधिक प्रभावी माध्यम है ।

(ब) टेलीविजन एवं फिल्म - संप्रेषण का सबसे महत्वपूर्ण आधुनिक माध्यम टेलीविजन अपने विज्ञापनों से लेकर करोड़पति बनाने वाले अतिशय लोकप्रिय कार्यक्रमों तक हिन्दी में प्रदर्शित किए जाते है । प्रसन्नता की बात यह है कि टेलीविजन बहुत ही कम समय में हिन्दी माध्यम हो गया है । प्रतिदिन होने वाले सर्वक्षेण इस बात का प्रमाण है कि हिन्दी के कार्यक्रम चाहे किसी भी विषय से सम्बंधित हो देश भर में सर्वाधिक देखे जाते हैं । यही कारण है कि अंग्रेजी के तमाम जानकारीपूर्ण और मनोरंजनात्मक दोनों प्रकार के कार्यक्रम हिन्दी में डब करके प्रकाशित करने की बाढ़ सी आ गई है इस तरह टेलीविजन ने हिन्दी के माषावैविध्य और संप्रेषण क्षमता को सर्वथा नई दिशाएँ प्रदान की है । अनेकानेक टेलीविजन चैनलों के अनेकोनेक धारावाहिको ने तो क्या हिन्दी भाषी बल्कि अहिन्दी भाषी परिवारों में भी भावुक जगह बनाने में एक हद तक कामयाबी हासिल कर ली है । अभी ऐसा हो गया है जैसे महिलाओं को भले ही खाना पकाने में देरी हो जाये या सोने में देर हो जाये पर उन्हें हिन्दी धारावाहिकों को देखना ही है । सि तरह से जो महिलाएँ और पुरुष हिन्दी लिखना, पढ़ना या बोलना भले ही न जानते हो पर अच्छी तरह से समझ लेते ही है । इतना योगदान ही क्या कम है ?

हिन्दी के प्रसार में जन माध्यम सिनेमा का भी महत्वपूर्ण भूमिका है जिस प्रकार हिन्दी उपन्यासों को पढ़ने के लिए लोग हिन्दी सीखते थे, उसी प्रकार आज हिन्दी सिनेमा को देखने समझने के लिये लोग हिन्दी सीख रहे हैं । आज दुनिया के कई देशों में बसे भारतीयों को जोड़ने का काम सिनेमा कर रहा है । आज के मध्यम वर्गीय एवं शहरी समाज की सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी की भूमिका श्रेष्ठ है । आज वैश्विक स्तर पर हिन्दी सिनेमा आस्कर तक पहुँच रही है । यदि मनोरंजन और अर्थ उत्पादन के साथ-साथ सार्थकता का भी ध्यान रखा जाए तो सिनेमा सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम सिद्व हो सकता है इसमें संदेह नहीं कि सिनेमा ने हिन्दी की लोकप्रियता और व्यावहारिकता बढ़ाई है ।

(स) पत्र-पत्रिकाएं - प्रकाशन जगत में हिन्दी के वैश्वीकरण के साथ जुड़ी हुई नई तकनीक के कारण मूलभूत क्रांति संभव हो सकी है । विभिन्न आयु और रूचियों के पाठकों के लिये हिन्दी में विविध प्रकार का साहित्य प्रचुर मात्रा में प्रकाशित हो रहा है तथा मनोरंजन ज्ञान, शिक्षा और परस्पर व्यवहार के विभिन्न क्षेत्रों में उसका विस्तार हो रहा है । विज्ञापन की दुनिया में हिन्दी का बोलबाला है विज्ञापन की दुनिया का हिन्दी के बगैर काम नहीं चलता । विज्ञापन गुरु यह जान और मान चुके है कि माल अगर बेचना है तो उन्हें में ही बाजार में ही उतारना पड़ेगा । उत्पादक तरह-तरह से उपभोक्ताओं को लुभाने का प्रयास करते रहते हैं ऐसे में विज्ञापन की हिन्दी के विकास में भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है । हिन्दी के पहले समाचार पत्र 'उदंत मार्तड' का प्रकाशन जुगल किशोर शुक्ल द्वारा कोलकाता में हुआ था । इसके बाद हिन्दी अखबारों की संख्या दिनों-दिन बढ़ती गई जिससे आज हिन्दी का निरन्तर विकास हो रहा है ।

हिन्दी भाषा विकास की पूरी प्रक्रिया हिन्दी पत्रकारिता के भाषा विश्लेषण के माध्यम से समझी जा सकती है । इस विकास में भाषा के प्रति जागरुक पत्रकारों का अपना-अपना योगदान हिन्दी को मिलता रहा है । छठे दशक से हिन्दी में विभिन्न नए-नए क्षेत्रों की पत्रकारिता का उभार दिखाई देने लगता है । इसके लिये हिन्दी को नई शब्दावली और अभिव्यक्तियों की आवश्यकता पड़ी है । वास्तव में किसी भी भाषा से बाह्यजगत की संकल्पनाओं को अपनी भाषा मे ले आना फिर उन्हें स्थगित कर लोकप्रिय बनाना आसान काम नहीं है लेकिन पत्रकारिता हमेशा से इस कठिन कार्य को अपनी पूरी दक्षता और दूरदृष्टि से साघती रही है ।

संक्षेप में कहा जाए तो हिन्दी पत्रकारिता ने समय के साथ चलते हुए और नवीनता के आग्रह को अपनाते हुए सामाजिक आवश्यकता के तहत हिन्दी भाषा विकास का कार्य अत्यंत तत्परता वैज्ञानिकता और दूरदृष्टि से किया है ।

(3) कमियों – जहाँ एक ओर आधुनिक प्रसार माध्यम से हिन्दी का वैश्विक विस्तार हो रहा है वहीं दूसरी ओर हिन्दी की दुर्गति भी सामने आ रही है, वह किसी से छिपा नहीं है । हिन्दी के मामले में इन दिनों अद्‌भुत उदारीकरण दिखाया जा रहा है । हिन्दी के साथ अंग्रेजी के शब्दों की घुसपैठ करके वाक्य-संरचनाएं हो रही है । भाषाओं का आदान-प्रदान होना ही चाहिए । किसी भी भाषा के समृद्धि के लिए यह जरूरी उपक्रम है, लेकिन जब यह घुसपैठ भाषिक औदार्य न हो कर हीनता के बोध से उपजे तो चिंता स्वाभाविक है । हिन्दी के साथ यही हो रहा है । हिन्दी के साथ घुसने वाले अंग्रेजी के शब्दों के कारण नई भाषा-वर्ण विकसित हो रहा है, जिसे लोग इग्लिश कहने लगे हैं ।

वर्तमान समय में पत्र-पत्रिकाओं में ऐसे अंग्रेजी के शब्द प्रयोग किए जा रहे है जिसे आम पाठक समझ ही नहीं सकता । तो किस काम का जैसे हेल्दी बेबी कैम्प, सिटी का क्राइम रेट बढ़ रहा है, सीरियल अच्छा नहीं तो चैनल चेंज, सेन्ट्रल कमेटी ने बनाया प्लान, कॉलेज की सारी सीटें फुल, मिड-डे मील पर एजिटेशन आदि ऐसे अनेक शीर्षक देखे जा सकते हैं, जो हिन्दी में भी होते तो अर्थ में कोई दिक्कत नहीं थी । जगह भी ज्यादा नहीं घेरते लेकिन पता नहीं धीरे धीरे इंग्लिश का भूत जेहन में सवार होता गया।

अनेक ऐसे शब्द है जिनके सरल पर्यायवाची शब्द मौजूद है लेकिन हिन्दी के अखबार उन शब्दों से परहेज करके उनकी जगह अंग्रेजी के शब्द ठूंसने की कोशिश कर रहे हैं । हिन्दी का रूप बिगाड़ रहे हैं । इंटरनेट और पत्रकारिता का वर्तमान दौर भाषाई हीनता का शिकार है अंग्रेजी से उसका लगाव हद पार कर रहा है । पिछले एक दशक में देखा जा सकता है, कि हिन्दी पत्रकारिता बाजारवाद की चपेट में है । वह अंग्रेजी को बाजार का हिस्सा समझ रही है । पौराणिक, ऐतिहासिक, जासूसी, वैज्ञानिक और हास्यप्रद अनेक प्रकार के धारावाहिकों का प्रदर्शन विभिन्न चैनलों पर जिस हिन्दी में किया जा रहा है वह एकरूपी और एकरस नहीं है बल्कि विषय के अनुरुप उसमें अनेक प्रकार के व्यावहारिक भाषा रूपों या कोड़ों का मिश्रण किया जा रहा है जिससे हिन्दी का रूप बिगड़ रहा है ।

हो सकता है कि कल हम आधुनिक प्रसार माध्यम में एक नई हिन्दी के दर्शन भी करें लेकिन अभी जो स्वरूप दिख रहा है, वह आश्विस्त कारक तो नहीं है ।

4. निष्कर्ष – कुछ लोगों का मानना है कि आधुनिक प्रसार माध्यम से हिन्दी का विनाश हो रहा है लेकिन दूसरी ओर इन्हीं आधुनिक प्रसार माध्यम से हिन्दी का वैश्वीकरण हो रहा है ।

जिस प्रकार चाकू से सब्जी काटने के बजाय अपना पेट काट ले तो इसमें चाकू का क्या दोष? यह तो अपने स्वविवेक पर निर्भर करता है, उसी प्रकार हिन्दी के विनाश में संचार माध्यम का क्या दोष यह तो व्यक्ति के व्यक्तित्व पर निर्भर करता है कि किस प्रकार आधुनिक प्रसार माध्यम का उपयोग हिन्दी के विकास में किया जाए । व्यक्ति यदिसही तरीके से प्रसार माध्यम का उपयोग करें तो निश्चित तौर पर हिन्दी का विकास होगा । उपयुक्त वर्णन से स्पष्ट है कि आधुनिक प्रसार माध्यम से हिन्दी की अभूतपूर्व विकास हुआ है ।तंत्राता प्राप्ति के समय तक हिन्दी दुनिया में तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा थी परन्तु आज वह दूसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा बन गई है । हिन्दी के इस वैश्विक विस्तार का बड़ा श्रेय भूमण्डलीकरण और आधुनिक प्रसार माध्यम के विस्तार को जाता है । यह कहना गलत होगा कि आधुनिक प्रसार माध्यमों ने हिन्दी के जिस विविधतापूर्ण सर्वसमर्थ नए रूप का विकास किया है उसे भाषा समृद्ध समाज के सदस्यों को भी वैश्विक संदर्भ में जोड़ने का कार्य किया है । भारत तक पहुँचने के लिये बड़ी से बड़ी कंपनियाँ भी हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं का सहारा ले रही है ।

इस तरह कहा जा सकता है कि 21 वी सदी में मुद्रित और इलेक्ट्रानिक दोनों ही प्रकार के जनसंचार माध्यम नए विकास के आयामों को छू रहे है जिसके परिणामस्वरूप हिन्दी भी नई-नई चुनौतियों का सामना करने के लिये और शक्ति का अर्जन कर रही है । अतः हिन्दी की वास्तविक शक्ति को उभारने में आधुनिक प्रसार माध्यम महत्वपूर्ण भूमिक निभा रही हैं ।

भारत के अम्बर पर देखो, सूर्य सी हिन्दी चमक रही है,
धरती माँ के उपत्यका में खुशबू बनकर महक रही है।
यूरोप अमेरिका ने माना है यह सर्वसमर्थ सक्षम,
अखिल वसुंधरा के क्षितिज पर इस विश्व भाषा उभर रही है ।।

नाम ..... कक्षा .....

2.

प्रस्तावना :- हिन्दी संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा है और भारत में सबसे अधिक समझी और बोली जाने वाली भाषा है । हिन्दी सरल, लचीली, समृद्ध तथा इसको लिखने में प्रयुक्त देवनागरी लिपि अत्यंत वैज्ञानिक है । हिन्दी कभी राजश्रय का मोहताज नहीं करती अतः हिन्दी आम जनता से तथा आम जनता की भाषा है ।

आज संचार माध्यम हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुके हैं । इन्होंने हमारी रहन - सहन, खान-पान, से लेकर हमारी सोच पर भी सोच पर भी गहरा प्रभाव डाला है । इन माध्यमों ने सारे विश्व में संचार द्वारा हिन्दी भाषा के महत्व को एक अलग पहचान दिया है । इन माध्यमों ने सारे विश्व को एक ग्राम में बदल दिया है । भाषा के महत्व को एक अलग पहचान दिया है । इन माध्यमों ने सारे विश्व को एक ग्राम में बदल दिया है । भाषा के महत्व को सारे विश्व ने स्वीकार किया है । हमारे देश में संचार के माध्यमों की भूमिका हिन्दी निभा रही है । संचार के माध्यमों ने हिन्दी भाषा को दुनिया के कोने-कोने में पहुँचा दिया है । भाषा मनुष्य का आंतरिक जनतंत्र है । मनुष्य में सहस्त्राब्दियों के संकलित अनुभव और सृजन-चेतना ने भाषा को गढ़ा है उसे नाद-स्वर, आकार और लिपि दी है ।

हिन्दी का विकास :-

हिन्दी भाषा को अपने उदय - काल से अब तक के विकास स्तर तक पहुँचने तक एक लंबा समय तय करना पड़ा है । संस्कृत, प्राकृत और हिन्दी इसके भिन्न-भिन्न रूप और नाम है । हिन्दी साहित्य का आरम्भ आठवीं शताब्दी से माना जाता है ।

हिन्दी साहित्य के विकास को आलोचक सुविधा के लिये पाँच ऐतिहासिक चरणों में विभाजित करते हैं जो क्रमवार हैं -

आदिकाल
भक्तिकाल
रीतिकाल
आधुनिक काल
नव्योत्तर काल

हिन्दी के विकास और आधुनिक प्रसार माध्यम :-

हिन्दी के विकास में अनेक प्रसार माध्यमों की भूमिका रही है, वे कुछ इस प्रकार है -

पत्र-पत्रिकाएं, रेडियो, कम्प्यूटर, इंटरनेट, सोशल-मीडिया (व्हाटसप, फेसबुक, ट्वीटर, ई-मेल) विज्ञापन इत्यादि

पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका :- हिन्दी के विकास में पत्र-पत्रिकाएं

एवं पत्रकारिता के योगदान को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता । पत्र-पत्रिकाएं बहुत पहले से ही आम जनमानस तक हिन्दी की छाप छोड़ रही है । आजकल बहुत सारी पत्रिकाओं का प्रकाशन विदेशों से भी हो रहा है । इनके उदाहरण कुछ इस प्रकार है - भारत दर्शन जिसका प्रकाशन न्यूजीलैंड से हो रहा है, सरस्वती पत्र कनाडा से अभिव्यक्ति, संयुक्त अरब अमीरात से, कर्मभूमि हिन्दी जो कि यूएसए से प्रकाशित हो रहा है । भारत वर्ष में आधुनिक ढंग की पत्रकारिता का जन्म अठारहवी शताब्दी के चतुर्थ चरण में कलकत्ता बंबई और मद्रास में हुआ । 1780 ई. में प्रकाशित हिके का कलकत्ता गजट कदाचित इस ओर पहला कदम था । हिन्दी का पहला पत्र उदंत मार्तण्ड 1826 में प्रकाशित हुआ था । सरस्वती और इन्दू दोनों हिन्दी की साहित्य चेतना के इतिहास के लिए महत्वपूर्ण हैं और एक तरह से हम इन्हें उस युग की साहित्यिक पत्रकारिता का शीर्षमणि कह सकते हैं । सरस्वती के माध्यम से आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और इन्दू के माध्यम से पंडित रूपनारायण पांडेय ने जिस संपादकीय सर्तकता, अध्यवसाय और ईमानदारी का आदर्श हमारे सामने रखा वह हिन्दी पत्रकारिता को एक

नई दिशा में समर्थ हुआ । समाज से गहरे जुड़ाव और उसका प्रतिबिंब प्रस्तुत करने के कारण समाचार पत्रों को समाज का दर्पण कहा जाता है । समाचार पत्र विभिन्न प्रकार की खबरों को लेकर देश एवं विदेश के लगभग हर जनमानस तक पहुँचता हैं य सामान्यतः हिन्दी में प्रकाशित होते हैं समाचार पत्रों में कई कविताएं, फीचर, संपादकीय हिन्दी में प्रकाशित होते हैं जिनकी भाषा अत्यन्त सरल, सुबोध तथा नवीनतम रूप से शब्दों का उचित प्रयोग किया जाता है । इन कृतियों को पढ़कर जनमानस में हिन्दी का विकास तत्पर है, इस प्रकार हम कह सकते हैं पत्र-पत्रिकाओं की साथ समाचार पत्र भी हिन्दी के विकास में अहम भूमिका निभाती है ।

रेडियो की भूमिका :-जैसा की हम - जानते हैं रेडियो एक उच्चरित

था श्रव्य माध्यम है, इसमें किसी बात या किसी समाचार को देबारा सुनने का विक्लप हनी होता है , इसलिये इसकी सफलता तो मूलाधार भाषा है । भाषा के बिना किसी भी जन संचार माध्यम के अस्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती, किन्तु रेडियो की तो यह आत्मा है । समाचार हो या संगीत,बौद्धिक कार्यक्रम हो या साहित्यिक और भावात्मक कार्यक्रम सभी शब्दों पर ही निर्भर है । प्रसारण विशेषज्ञों का मानना है कि व्यापक जनता तक संदेश पहुँचाने के लिये प्रसारण की भाषा ऐसी प्रभावी होनी चाहिए, जिसे श्रोता वर्ग आसानी से समझ सके । यदि भाषा सरल और सुग्राह्य होगी तो उसे सामान्य, विद्वान, निरक्षर, साक्षर, बाल, युवा तथा वृद्ध सामान रूप से समझ सकेंगे, हिन्दी भाषा इन सारी चीजों पर खरा उतरा है । चूकिं हिन्दी आज जन मानस द्वारा बोली और समझी जाती है । इसलिए रेडियो में हिन्दी भाषा में अत्यंत प्रभावशाली तथा रोचक शैली में कार्यक्रमों को प्रस्तुत किया जाता है । जो लोगों को बहुत आसानी से समझ में आता है । ऐसे लोग जिनको हिन्दी का ज्ञान नहीं है वे लोग भी प्रतिदिन रेडियो सुनकर हिन्दी सीख रहे हैं । रेडियो पर कमेंट्री और टी.वी. पर सीधे प्रसारण में जब से हिन्दी को स्थान मिला है, एक विशेष प्रकार की खेलकूद की मौखिक प्रयुक्ति अस्तित्व में आई है ।

टेलीविजन की भूमिका :- दूरदर्शन या टी.वी. आज हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है । महलों से लेकर झोपड़ियों तक इसने अपनी जह बना ली है । कुछ इसे बुद्धू बक्सा कहते हैं तो कुछ जादू का पिटारा । जो भी हो ज्ञान और मनोरंजन का आज यह सबसे प्रभावशाली साधन बन चुका है । टीवी में अनेक भाषाओं के जरिए अनेक कार्यक्रम दिखाए जाते हैं, उसमें हिन्दी का अपना एक अलग ही स्थान है क्योंकि जो बात हिन्दी में है वह किसी और भाषा में कहा है । नृत्यु, संगीत, नाटकएवं फिल्म का आनन्द घर बैठे ही लिया जा सकता है । जब से टेलीविजन में विभिन्न चैनल आए हैं मनोरंजन कार्यक्रम बढ़ सी गई है । अगर आप उदास है तो बस बटन-दबाएं और हंसी की दुनिया में खो जाए, नई - नई धारावाहिक अनेक न्यूज चैनल, रियालिटी शो आदि ने हिन्दी की वैश्विक स्तर पर बढ़ावा दिया है । आज भारत के कोने-कोने में बैठे लोग टीवी के उपयोग से हिन्दी सीख रहे है । भारत के अहिन्दी क्षेत्र भी आज आसानी से हिन्दी बोल पा रहा है तो वह सिर्फ टीवी में दिखाए जा रहे कार्यक्रमों के कारण ।

इंटरनेट का योगदान :- इंटरनेट पर हिन्दी में खोज आने के बाद हमारी मूल जिज्ञासाओं का जवाब हिन्दी में ही पलक झपकते ही हमारे सामने होता है और ये सब इसलिये संभव हुआ है क्योंकि इंटरनेट के सागर में नित-प्रतिदिन हिन्दी ज्ञान स्वरूप नदियाँ समाहित हो रही है । इसी प्रक्रिया का परिणाम हुआ कि आज भारत से बाहर सात समंदर पार भी हिन्दी सभाएँ एवं गोष्ठियाँ सम्मेलन पुरस्कार समारोह आदि आयोजित किए जा रहे हैं इंटरनेट के माध्यम से हिन्दी भाषा और उसका साहित्य देश विदेश में पहुँच चुका है । अनेक वेब पत्रिकाएं जैसे हिन्दी परिचय, लेखनी, सृजनगाथा, प्रतिध्वनि, क्षितिज, हिन्दी नेस्ट,

अभिव्यक्ति, अनुभूति आदि हिन्दी का बेहतर छांव निर्माण कर रहा है । विदेशों में इन वेब पत्रिकाओं का बहुत बड़ा पाठक वर्ग तैयार हो गया है, इस प्रकार इंटरनेट के माध्यम से हिन्दी का साम्राज्य सारे विश में फैलता जा रहा है, भविष्य में इंटरनेट की हिन्दी भाषा का रूप बहुत ही परिवर्तित होगा । इसमें ध्वनि और शब्दों के साथ चित्र भी होगी ।

वेब मीडिया का योगदान :- भूमंडलीकरण के दौर में मीडिया का योगदान बढ़ा और इसका दायरा भी काफी विस्तृत हो चुका है ऐसे में विभिन्न भाषआओं का निकाय भी वेब मीडिया पर निर्भर है और हो भी रहा है । वेब मीडिया एक ऐसा गुरुकुल है जहाँ प्रत्येकग भाषा एक संकाय की भांति प्रतीत होती है । आज की स्थिति में वेब और भाषा एक दूसरे के मध्य सहयोगी माना जाता है । 70 के दशक से पहले हिन्दी का दायरा सीमित था, 70 के दशक में ही हिन्दी को कम्पयूटर की भाषा बनाने का प्रयास शुरु हो चुका था, परन्तु वेब के साथ हिन्दी का प्रयोग 20 वीं सदी के समाप्ति के बाद शुरू हुआ । सन् 2000 में यूनिकोड के पदार्पण के बाद 2003 में सर्वप्रथम हिन्दी में इंटरनेट सर्च और ईमेल की सुविधा की शुरुआत हुई, हिन्दी के विकास में यह एक मील का पत्थर साबित हुआ । 21 वीं सदी के पहले दशक मेंही गूगल न्यूज, गूगल ट्रांसेलट तथा ऑनलाईन फोनेटिक टाइपिंग जैसे औजारों ने वेब की दुनिया में हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण सहायता की । वेब मीडिया के आने से पूर्व सभी कृतिकारों को अपनी बात को आम जनमानस तक पहुँचाने में अनेक दिक्कतों का सामना करना पड़ता था, ढेरों प्रयासों के बावजूद भी वे अपनी कृति को एक सीमित दायरों तक पहुँचा पाते थे, वेब मीडिया ने इन सभी को तोड़ा है आज सभी लेखक गुमनामी की कालिया को इस माध्यम के प्रकाश की सहायता से खत्म कर सकते हैं । वेब पत्रिका साहत्यि को विकेद्रीकरण की प्रवृति प्रदान करती है । जो उसके विकास और व्यापकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं ।

ब्लॉगिंग का योगदान :- हिन्दी के विकास में ब्लॉगिंग ने निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है । इसका प्रमाण यह है कि हिन्दी के कई ऐसे ब्लॉग है जो रोजाना 1000 से भी ज्यादा व्यक्तियों द्वारा देखें जाते है और यह कोई सामान्य बात नहीं है, शैली तथा वैचारिक रूप से अलग - अलग ये ब्लॉग अपनी भाषायी खुशबु को प्रतिदिन हजारों जन-मानस तक पहुँचाते हैं । ब्लॉग एक ऐसी टूल है जिसके

जरिए हम हमारे विचारों को इंद्रजाल इंटरनेट के जरिए - जन-जन तक पहुँचा सकते हैं । हिन्दी में लिखी गई बहुत सी पुस्तकें आज भी आम जन तक नहीं पहुँच पाई है, जिन्हे ब्लॉग पर दी गई लिंक के माध्यम से आसानी से डाउन किया जा सकता है ।

सोशल मीडिया की भूमिका :- सोशल मीडिया ने हिन्दी समेत सभी भाषाओं को एक समान वैश्विक मंच प्रदान किया है । चूँकि हिन्दी की अपनी कुछ विशेषताएं है इसलिए हिन्दी अन्य भाषाओं से तेज व सकारात्मक रूप से परिवर्तनशील यानि की विकासशील है ।

दुनिया के किसी भी कोने में हिन्दी लिखने पढ़ने वाला व्यक्ति बैठा हो , वह अपने परिवेश में अपने दुख -सुख की व्यथा कथा उस हिन्दी में व्यक्त कर रहा है जो उसने अपनी सांस्कृतिक भूमि से अर्जित की है । इसे पढ़ने वाला पाठक अनेकानेक भिन्न भाषाई संस्कारों की हिन्दी इस वैश्विक परिदृश्य में सोशल मीडिया पर दिखाई दे रही है । आज सोशल मीडिया में फेसबुक,व्हाटसएप पर कई रचनात्मक और भाषाई समूह बन गए हैं । जहाँ दुनिया भर से लोग संवाद कर रहे हैं । भाषा की दृष्टि से इस तरह की सामूहिकता एक नई भाषा को जन्म देती है । क्योंकि वहाँ नये नये शब्द संवाद में आकर सहज हो रहे हैं । जैसे अवधि, भोजपुरी का मने आज हिन्दी में इतना सामान्य हो गया है कि यह किसी स्थानीय बोली में आया है लगने लगता है । मोबाइल फोन पर व्हाट्सएप में तो लगता है कि रचनात्मक क्राँति हो रही है । हजारों की तादाद में यहाँ समूह बने हुए हैं जहाँ नियमित रूप से हिन्दी की कविता, कहानी, यात्रा संस्मरण आदि पोस्ट किए जाते हैं और उन पर

लम्बी बहसें भी होती है। सोशल मीडिया पर हिन्दी भाषा ने हिन्दी के विकास में क्रांति ला दी है । हिन्दी भाषा में टाइपिंग के लिये नए नए की- बोर्ड्स भी आ गई है, सोशल मीडिया आज किसी से अछूत नहीं रहा, छोटा बच्चा भी सोशल मीडिया से घिरा हुआ है, ऐसे में सोशल मीडिया द्वारा ही हम हिन्दी के विकास की राह में प्रगति कर सकते हैं । **यूनिकोड का योगदान :-** यूनिकोड का अर्थ है एक समान मानकीकृत कोड इन्हें ओपन फोंट भी कहा जा सकता है । यूनिकोड ने हिन्दी जगत में रचनात्मक क्रांति ला दी है । यूनिकोड की सहायता से अंग्रेजी की तरह ही हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में भी सहजता से काम कर सकते हैं । कम्प्यूटर की वह सारी सुविधाओं का लाभ जो लगता था कि केवल अंग्रेजी को प्राप्त है, हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं के लिये भी उठा सकते हैं, यह सब हिन्दी यूनिकोड के द्वारा ही संभव हो सका है, हिन्दी यूनिकोड के चलते बहुत सारी हिन्दी लेख, कविताएँ पढ़ने - लिखने की सामग्रियाँ आसानी से प्रकाशित हो रही है, शोधकर्ताओं की बात को हिन्दी में जनमानस तक पहुँचाने में यूनिकोड का महत्वपूर्ण भूमिका है । यूनिकोड की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह व्हाटसएप, फेसबुक, ईमेल या किसी भी जगह अपनी आवश्यकतानुसार हिन्दी के अलावा अन्य भाषाओं में भी अपनी बात को रख सकते हैं ।

विज्ञापन की भूमिका :-

विज्ञापन की दुनिया में हिन्दी का बोलबाला है, विज्ञापन की दुनिया में हिन्दी के बगैर काम नहीं चलता, विज्ञापन गुरु यह जान और मान चुके हैं कि माल अगर बेचना है तो उन्हें हिन्दी में ही बाजार में उतारना पड़ेगा और हाँ ये जो हिन्दी परोसी जा रही है उसे कुछ लोग हिंगलिश की संज्ञा देते है। परन्तु यह सर्वग्राहय हिन्दी हैं ।

1980 और 1990 के दशक में भारत में उदारीकरण, वैश्वीकरण तथा औद्योगीकरण की प्रक्रिया तीव्र हुई, उसके परिणाम स्वरूप अनेक विदेशी कंपनियाँ भारत में आई तो हिन्दी के लिए खतरा दिखाई दिया था । क्योंकि वे अपने साथ अंग्रेजी लेकर आए थे, मीडिया महारथी रूपर्ट भरडोक स्टार चैनल लेकर आए वह अंग्रेजी में बड़ी धूमधाम से शुरु हुआ था इसी तर्ज पर सोनी वगैरह दूसरे चैनल भी अंग्रेजी में अपने कार्यक्रम लेकर भारत में आए मगर इन सबको विवश होकर हिन्दी की ओर मुड़ना पड़ा क्योंकि इन्हें अपनी दर्शक संख्या बढ़ानी थी, अपना व्यापार, अपना लाभ बढ़ाना था । आज टीवी चैनलों एवं मनोरंजन की दुनिया में हिन्दी सबसे अधिक मुनाफे की भाषा है, कुल विज्ञापनों का लगभग 75 प्रतिशत हिन्दी के माध्यम में है ।

वैश्विक स्तर पर हिन्दी :- केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के सेवावृत्त निर्देशक प्रोफेसर महावीर सलर जैन ने आपने आलेख में हिन्दी की विश्व्यापी लोक-प्रियता का प्रतिपादन करते हुए यह अभिव्यक्त किया है कि हिन्दी की फिल्मों, गाना, टीवी कार्यक्रमों ने हिन्दी को कितना लोकप्रिय बनाया है, इसका आकलन करना कठिन है, केन्द्रिय हिन्दी संस्थान में हिन्दी पढ़ने के लिए आने वाले 67 देशों के विदेशी छात्रों ने इसकी पुष्टि की कि हिन्दी सीखने में मदद मिली। हिन्दी की फिल्मों तथा फिल्मी गानों ने हिन्दी सीखने में मदद मिली । हिन्दी की फिल्मों

तथा फिल्मों गानों ने हिन्दी प्रसार में अप्रतिम योगदान सन् 1995 के बाद टीवी के चैनलों से प्रसारित कार्यक्रमों की लोकप्रियता भी बढ़ी है । इसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि सेटेलाइट चैनलों ने भारत में अपने कार्यक्रमों का आरम्भ केवल अंग्रेजी भाषा से किया था, उन्हें अपनी भाषा नीति में परिवर्तन करना पड़ा है । अब स्टार प्लस, जी टीवी, जी न्यूज, डिस्कवरी, नेशनल ज्योग्राफीक आदि टीवी चैनल अपने कार्यक्रम हिन्दी में दे रहे हैं । दक्षिण पूर्व एशिया तथा खाड़ी के देशों में कितने दर्शक इन कार्यक्रमों को देखते हैं ।

कौन बनेगा करोड़पति की लोकप्रियता ने मीडिया के क्षेत्र में हिन्दी के झंडे गाड़ दिये, कमाई तथा प्रसिद्धि के अनेक कीर्तिमान भंग कर दिए, तथा आने वाले समय निर्माता अंग्रेजी कार्यक्रमों और फिल्मों को हिन्दी में डब करके प्रस्तुत करने लगे हैं, जुरासिक पार्क जैसी अति प्रसिद्ध फिल्म को भी मुनाफे के लिए हिन्दी में डब किया जाना जरुरी हो गया था । इसके हिन्दी संस्करण ने भारत में इतने पैसे कमाए जितने अंग्रेजी संस्करण ने पूरे विश्व में नहीं कमाए थे ।

योग से हिन्दी का प्रसार :-

हिन्दी भाषा और इसमें निहित भारत की सांस्कृतिक धरोहर इतनी सुदृढ़ और समृद्ध है कि इस ओर अधिक प्रयत्न न किए जाने पर भी निकाय की गति तेज है ध्यान, योग, आसन और आयुर्वेद विषयों के साथ-साथ इनसे संबंधित हिन्दी शब्दों का भी विश्व की दूसरी भाषाओं में विकल्प, विलय हो रहा है, भारतीय संगीत (चाहे वह शास्त्रीय हो या आधुनिक) हस्तकला, भोजन और वस्त्रों की विदेशी मांग जैसी आज है पहले कभी नहीं थी, लगभग हर देश में आज योग, ध्यान और आयुर्वेद के केन्द्र खुल गए हैं जो दुनिया भर के लोगों को भारतीय संस्कृति की ओर आकर्षित करते हैं ऐसी संस्कृति जिसे पाने के लिए हिन्दी के रास्ते से ही पहुँचा जा सकता है ।

प्रौद्योगिकी :-

आज के युग के प्रौद्योगिकी का ही बोल-बाला है । प्रौद्योगिकी ने हर क्षेत्र को एक अलग पहचान दे दी है । आज कृषि, स्वास्थ्य, विज्ञान, रोजगार, परिवहन, शिक्षा, फिल्म जगत, कला संगीत, खेल जगत आदि सब एक दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ में लगे हुए हैं । इनका दिनों दिन विकास सिर्फ तकनीकी के कारण हो रहा है । आज की शिक्षा विद्यार्थी, शिक्षक और कक्षा तक ही सीमित नहीं है । कम्प्यूटर, मोबाइल, प्रोजेक्टर, इंटरनेट, स्मार्टफोन आदि के जरिए शिक्षा बहुत ही आसान हो गई है । बच्चे स्मार्ट फोन पर अनेकों एप्स के जरिए शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं । बच्चे स्मार्टफोन के जरिए भी पढ़ाई के क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं । हिन्दी के अनेकों एप्स स्मार्टफोन में आते हैं जो शिक्षा को आसान बना रहे हैं । जैसे हिन्दी शब्दकोष, सामान्य ज्ञान, नक्शा, पढ़ाई सामाग्री आदि । इन एप के माध्यम से ऐसे जन भी हिन्दी सीख या बोल सकते हैं, जो हिन्दी नहीं जानते पर हिन्दी सीखने की चाह चरम सीमा पर हो । इन एप के द्वारा आप पूरी हिन्दी में पढ़ाई भी कर सकते हैं । प्रतियोगी प्ररिक्षाओं में इन एपों की सहयता से सफलता प्राप्त की जा सकती है ।

उपसंहार :- भारत में अनेक राज्य हैं और हर राज्य की अपनी अलग-अलग भाषा है इस प्रकार भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है, लेकिन उसीक अपनी एक राष्ट्रभाषा हिन्दी है । 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को यह गौरव प्राप्त हुआ । तब से लेकर आज तक हिन्दी प्रगतिशील बनी हुई है । हिन्दी को राजभाषा, राष्ट्रभाषा, जनभाषा के सोपानों को पार कर विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है हिन्दी की इस उपलब्धि में आधुनिक प्रसार माध्यमों की अहम भूमिका रही है । हिन्दी अपने नए रूपों में अवतीर्ण होगी । आज सूचना एवं प्रौद्योगिक के विभिन्न उपकरणों में हिन्दी को भले ही प्रेम पूर्वक न अपनाकर उसकी व्यवसायिक आवश्यकता को देखकर अपनाया हो किन्तु इससे जनसंचार के इलेक्ट्रानिक माध्यमों में हिन्दी का प्रेवश उसके भविष्य के लिए सुखद सिद्ध होगा ।

जन-जन की भाषा है हिन्दी,
भारत की आशा है हिन्दी ।
जिसने पूरे देश को जोड़े रखा है,
वो मजबूत धागा है हिन्दी ।।

नाम .....

कक्षा .....

वर्तमान समस्या पर छात्राओं के विचार

वर्तमान समय में जहाँ देश गगनचुंबी ऊँचाइयों को छू रहा है, वहीं दूसरी तरफ से अनैतिक, निकृष्ट मानसिकता के गर्त में भी डूबता जा रहा है,क संसृंघृकृत की बात कहीं दिखायी नहीं देती । मशीनीकृत हो गया है मानव, जिसमें सुभावनाओं की अत्यधिक कमी आती जा रही है । अपराधी प्रवृतियाँ भी चरमसीमा पर है । नारी की स्वतंत्रता को स्वीकार नहीं करने वालीएक कौम समाज में आज भी उसे उपभोग का साधन ही मानती है और यही कौम वहशीपन का शिकार हो बलात्कार जैसे अपराध को करने में थोड़ा भी नहीं हिचकती । जिसका परिणाम है कि हमारे समाचार पत्र इस तरह की घटना से भरे पड़े रहते हैं, क्या हैं इसके कारण । इस संबंध में महाविद्यालय की छात्राओं ने अपने विचार दिये हैं, उन्हें विषय दिया गया था - समाज में बढ़ती बलात्कार की घटनायें समस्याएं एवं सुझाव ।

समाज में बढ़ती बलात्कार की घटनायें समस्याएं एवं सुझाव ।

आज समाज में बड़ी समस्या बन गयी है - बलात्कार की घटनायें । मैं इसका सबसे बड़ा कारण मानती हूँ । - शराब, ड्रग्स, अश्लील वीडियो, अश्लील फोटो आदि को । लोग नशे में अपने होश खो बैठते हैं । अश्लील वीडियो, फोटो देखकर उनकी सोच भी अश्लील होजाती है । विज्ञापनों में प्रोडक्ट्स को बेचने के लिये लड़के और लड़की से संबंधित ही वीडियो बनाये जाते हैं अन्य रिश्तों के बहुत कम । इस तरह के विज्ञापनों को देखने से भी सोच निम्नस्तर की हो जाती है । मोबाइल में भी तरह-तरह से अश्लील बातें परोसी जा रही हैं जिससे समाज के कुछ लोग अभित होकर वहशीपने के शिकार हो जाते हैं । यही कारण है कुछ लोग लड़कि यों को स्वस्थ भाव से नहीं गेथते और बलात्कार जैसी घटनाओं को अंजाम देते हैं। आजादी के बाद भी लड़कियों की आजादी में बाधक है ं ऐसी घटनायें वे सुरक्षित नहीं है । आज, 3 साल, 5 साल तक की लड़कियाँ भी सुरक्षित नहीं है रोज समाचार पत्रों में ऐसी घटनायें प्रकाशित होती है । नशा इन सबका मुख्य कारण है ।

इस तरह की घटना से बचने के लिये नारियों को ही आगे आना होगा । शराब, नशीले पदार्थों, ड्रग्स आदि अश्लील वीडियो सिनेमा पर प्रतिबंध लगाना होगा । दूरदर्शन, मोबाइल का सही इस्तेमाल करना होगा

पाठ्य पुस्तकों में उन लोगों के बारे में प्रकाशन होना चाहिए जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपनी जान न्योछावर कर दी ताकि उनके संघर्षमय जीवन को हम आदर्श बना उनके कदमों पर चलें तभी हम विकृत मानसिकता से ऊबर पायेंगे । भारत को नशामुक्त देश बनाना होगा । । इसके अलावा इन घटनाओं से बचने हेतु कुछ सुझाव -

1. नारियों को समकाज में आदर सम्मान देना ।
2. शराब बंदी होना चाहिए ।
3. सबको समान शिक्षा, अच्छी शिक्षा देनी होगी ।
4. मोहल्लों में लड़कियों को आत्मरक्षा के उपाय सिखाये जाने चाहिए।
5. कराटे की क्लास लगना चाहिए ।

मेनका निषाद (बीएससी (भाग-2)

समाज एक ऐसी व्यवस्था है जो निर्मित ही इसलिए हुई है ताकी लोग एक दूसरे का सुख-दुख बांट सके। जहाँ इस समाज में अच्छे विचार धारा के लोग है वही दूसरी ओर कुविचारों से ग्रस्त लोगों की कमी नहीं है । बलात्कार कितनी आक्रामक समस्या है यह मैं अपने कुछ पंक्तियों में व्यक्त करना चाहती हूँ। यह कहानी है एक ऐसी लड़की की जो अपने बलात्कार के बाद आत्महत्या कर लेती है और आत्महत्या से पहले एक पत्र अपने घरवालों के नाम छोड़ जाती है -

माँ बहुत दर्द सहकर, बहुत दर्द
देकर, तुझसे कुछ कहकर मैं जा रही हूँ
आज मेरी विदाई में, जब सखियाँ
मिलने आयेंगी, सफेद जोड़े में
लिपटी देख, सिसक -सिसक

मर जायेगा, लड़का होने का
खुद पे फिर तो अफसोस जातायेंगी।
माँ तू उनसे इतना कह देना
दरिंदों की दुनियां में सम्भलकर रहना ।
माँ, राखी पर जब भाइयो की
कलाई सूनी रह जायेगी, याद
मुझे कर-कर चब उनकी आंखें
भर आयेंगी । तिलक मांथे पर
करने को, माँ रूह भी मेरी मचल जायेगी ।
माँ, तू भइया को रोने ना देना
मैं साथ हूँ हर पल, उनसे ये कह देना ।
माँ पापा भी चुप-चुप बहुत रोयेंगे
मैं कुछ ना कर पाया, ये कहके
खुद को कोसेंगे ।

माँ दर्द उन्हे ये होने ना देना
इल्जाम कोई, लेने ना देना ।
वो अभिमान है मेरे, सम्मान है
मेरे । तू उनसे इतना कह देना ।
माँ तेरे लिये अब क्या कहूँ
दर्द को तेरे शब्दों में कैसे बांधू
फिर से जीने का मौका कैसे माँगू ।
माँ लोग तुझे सतायेंगे, मुझे आजादी
देने का, तुझपे इल्जाम लगायेंगे ।
माँ सब सह लेना पर ये ना
कहना - अगले जन्म मोहे बिटिया ना देना ।

सुझाव – जो लोग बलात्कार करते हैं, वे - वे ही लोग होते है जिन्होंने कभी किसी स्त्री को प्रेम नहीं किया । जिन्होंने किसी भी स्त्री को प्रेम किया है उनके मन में सारी स्त्रियों के प्रति एक सम्मान का भाव पैदा हो जाता है और जिसने किसी स्त्री को प्रेम नहीं किया बल्कि प्रेम को पाप समझा है, उसके मन में इतनी कुंठा इकट्ठी हो जाती है, इतना जहर कि वह जहर फूटेगा निकलेगा ।

कहने का अर्थ यह है मेरा कि लड़कों को प्रेम की शिक्षा दे वो भी संयमित व्यवहार के साथ । अगर कोई लड़की आपका प्रेम स्वीकार नहीं करती है तो इसका कतई मतलब नहीं है कि आप उस पर एसिड अटैक कर दो या उसे बदनाम कर दो । किसी को स्वीकार करना या ना करना यह उस लड़की का अधिकार है और जो भी इस अधिकार को छीनने की कोशिश करेगा उसे कड़े प्रावधानों और दण्ड का भी सामना करना पड़ेगा । **दिव्या यादव (एम.ए. इग्लिश)**

बलात्कार सुनने में सहज लगता है न? पर क्या बलात्कार सच में महज एक घटना मात्र है? नहीं, बिल्कुर नहीं। बलात्कार हमारे समाज में घट रही एक घिनौनी घटना है और इसका शिकार हर दिन कोई न कोई महिला हो रही है ?

कुछ वहसी-दरिंदे एक कली को खिलने से पहले ही तोड़ देते हैं किसी के सपनों का गला घोट देते हैं किसी के उड़ने से पहले ही पंख काटं देते हां आखिर क्याँ?

इस क्यूँ का जवाब आज सारी कायनात ढूंढ रही है । हर कोई अपना तर्क दे रहा है तो मैं भी अपनी सोच आप तक रख दूँ ।

सबसे पहले अगर मुझे इस घिनौने अपराध के लिये कोई उत्तरदायी नजर आता है तो वह है, हममें संस्कारों की, नैतिकता की कमी और इन सबके के लिये कहीं न कहीं हमारे मात-पिता भी उत्तरदायी हैं, उन्होंने कभी इस बारे में सोचा ही नहीं, कभी उन्हें लगा ही नहीं कि शायद हमें हमारे बच्चों को नैतिक शिक्षा देना चाहिए । हमारा दिमाग जिस वक्त विकसित होना प्रारम्भ होता है , उसी वक्त हमारे मन में सदाचार-शिष्टाचार के बीज डाल देना चाहिए । और बलात्कार जैसे अपराध के लिए मुझे अफसोस है कि पीड़िता की भी थोड़ी-सी लपरवाही इसमें उनकी सहयोगी साबित होती है ।

तात्पर्य यह है, कि कहीं न कहीं हमारी बॉडी-लेंग्वेज, ड्रेसिंस सेन्स, हमारा हाव-भाव उनको हमारी ओर आकर्षित करता है और यह ही कारण बनता है । बलात्कारजैसे अपराध के लिये ।

हमें अपने कपड़ों पर अपने हाव भाव पर व अपने एक्टिविटीस पर ध्यान देना होगा । हमें सोचना पड़ेगा कि कही सामने वाला हमारे भावों का गलत मतलब तो नहीं ले रहा है, कहीं वह हमें गलत नजरों से तो नहीं देख रहा है और हमें तुरन्त उसका विरेध करना होगा नहीं तो नजर अंदाज करने के बदले कहीं हमें अपनी आबरू न गंवानी पड़े । यह मेरी सोच है, मैं गलत भी हो सकता हूँ पर आप सभी इस पर एक बार विचार जरूर करें । **रेनु देशमुख (एमएससी गणित)**

एक कविता हर माँ के नाम

राहुल चौरासिया (बीएससी भाग-2, सूक्ष्मजीवविज्ञान)

माँ

1.

घुटनों से रेंगते रेंगते,
कब पैरों पर खड़ा हुआ
तेरी ममता की छाव में,
जाने कब मैं बड़ा हुआ ।
काला टीका दूध मलाई
आज भी सब कुछ वैसा है ।
मै ंही मैं हू हर जगह,
प्यार ये तेरा कैसा है ।
सीधा-साधा भोला भाला,
मैं ही सबसे अच्छा हूँ
कितना भी हो जाऊँ बड़ा मां
मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ।

2.

ईश्वर कुछ गढ़ रहे थे,
एक अप्सरा वहाँ से गुजरी
और उसने ईस्वर से पूछा -
ये आप क्या बना रहे हैं
मैं आपको लगातार
छह दिनों से देख रही हूँ,

ईश्वर ने जवाब दिया -
मैं माँ गढ़ रहा हूँ?
अप्सरा की जिज्ञासा थी -
कैसी होगी माँ ?

ईश्वर ने उत्तर दिया -
जिसकी कोख से मानवता जन्में ..
जिसकी गोद में सृष्टि समा जाए ...
जिसका स्पर्श बड़ी से बड़ी चोट को ठीक कर दे ...
जिसका दुलार बड़े-से-बड़े सदमें से उबार दे ....

जिसको दो हाथ सबको दिखे, पर हों कई,
ताकि जीवन संवारने का कर्तव्य पूरा हो सके ...
दूर बैठे अपनी संतान को देख सके ...

नाजुक हो, पर हर मुश्किल को
हरा सकने का दम रखे ...
जिसके आँचल तले
सृष्टि को सुरक्षा मिले ....
जिसके नेत्रों में अपने बच्चों के लिये
भाव-भरा जल हो और उनके दर्शन मात्र से मानवता कृत-कृत हो ..

मैं उसे गढ़ रहा हूँ,
जिसे मानव
ठेस तो बहुत पँहुचाएगा,
पर उसका हाथ
न आशीर्वाद देने से रूकेगा
और न दिल
हुआ मांगने से ।
मैं अपना प्रतिरूप गढ़ रहा हूँ ।
हाँ । मैं माँ को गढ़ रहा हूँ ।
ईश्वर प्रतिरूप को नमन.....

मोर छत्तीसगढ़ सबले महान

गुरमटिया मोटहा चाँऊर के बासी,
खाथन डार के दही अऊ नून ।
मैं कहत हवव गोठ, तेला कान लगा के सुन ।।

तिवरा, चना सोयाबीन, कोदो,
कुटकी धान अपार हे।
हीरा, कोयला, लोहा पथरा के,
बड़े-बड़े खदान हे ।
एकरे सेती मोर छत्तीसगढ़ सबले महान हे ।

करमा ददरिया, सुवा, पंडवानी, पंथी गान हे ।
परदेशी देवदास भइया, रीतू, ममता,
तीजन दीदी के तान हे ।
एकरे सेती मोर छत्तीसगढ़ सबले महान हे ।।

हरेली, कवंरछट, तीजा-पोरा, देवारी तिहारहे
ठेठरी खुरमी, बरा सोहारी चीला पकवान हे
एकरे सेती मोर छत्तीसगढ़ सबले महान हे ।।

रतनपुर, सिरपुर, भोरमदेव, डोंगरगढ़ ।
राजिम-लोचन कस तीरथ के परमान हे
अरपा पैरी खारून, शिवनाथ, सोंढूर
महानदी, हमर जीवन के आधार हे
एकरे सेती मोर छत्तीसगढ़ सबले महान हे ।।

जंगल झाड़ी पर्वत-पहाड़ी
नदी नाला अऊ खेती-खार हे ।
ग्यारह अभ्यारण्य, इन्द्रावती कांकेर घाटी,
गुरुघासीदास राष्ट्रीय उद्यान हे ,
एकरे सेती मोर छत्तीसगढ़ सबले महान हे ।।

मन को मत मार

जीवन में कुछ करना है तो, मन को मारे मत बैठो
आगे-आगे बढ़ना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो ।।
चलने वाला मंजिल पाता, बैठा पीछे रहता है
ठहरा पानी सड़ने लगता, बहता निर्मल होता ।
पॉव मिला चलने के खातिर, पाँव पसारे मत बैठो
आगे-आगे बढ़ना है तो हिम्मत हारे मत बैठो ।।
तेज दौड़ने वाला खरहां, दो पल चलकर हार गया ।
धीरे-धीरे चलकर कछुआ, देखो बाजी मार गया ।
चलो कदम से कदम मिलाकर दूर किनारे मत बैठो
आगे-आगे बढ़ना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो ।।
धरती चलती तारे चलते, चाँद रात भर चलता है ।
किरणों का उपहार बाँटने, सूरज रोज निकलता है,
हवा चले तो महक बिखेरे, तुम भी प्यारे मत बैठो
आगे-आगे बढ़ना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो ।।

दिव्या सिन्हा (बी.एस.सी. भाग-2, सूक्ष्मजीवविज्ञान)

पिता

माँ घर का गौरव तो पिता घर का अस्तित्व होता है ।
माँ के पास अश्रुधारा तो पिता के पास संयम होता है ।
दोनों समय का भोजन माँ बनाती है तो
जीवनभर भोजन की व्यवस्था करने वाले
पिता को हम सहज ही भूल जाते है।
कभी लगी जो ठोकर या चोट तो

''ओ माँ'' ही मुँह से निकलता है
लेकिन रास्ता पार करते कोई ट्रक
पास आकर ब्रेक लगाये तो
''बाप रे'' यही मुँह से निकलता है ।
क्योंकि छोटे-छोटे संकटो के लिए माँ है ।
पर बड़े संकट आने पर पिता ही याद आते हैं ।
पिता एक वट वृक्ष है जिसकी शीतल छाँव में
सम्पूर्ण परिवार सुख से रहता है ।

माँ

जीवन की हर डगर हर पल हम
उसका हाथ थामें रखना चाहते हैं ।
क्योंकि हम जानते है कि वही है,
जिसके पास हमारी हर मुश्किल और तकलीफ का हल है ।
वही हैं, जिसके आंचल में सारे जहान के गम भुलाकर
हम सुकून के दो पल गुजार सकते हैं ।
उसके हाथों का कोमल स्पर्श,
जब सिर पर महसूस होता है घंटों
की थकान कहीं गायब हो जाती है ।
कहने को तो बहुत कुछ कहा और लिखा जा सकता है,
उसके बारे में लेकिन हर बार एक शब्द ही पर्याप्त लगता है।

भावना रामटेके (बीएससी भाग2)

पहचानों मैं कौन ?

सुबह की रोशनी, कहती है यारो,
उठो, जागो और दौड़ पड़ो ऐ मुशाफिरों ।

काफीलें बयाँ कर रही है मेरी गाथा,
मैं थमता नहीं, रूकता नहीं
चाहे अंधेरा हो, चाहे घेर ले तूफान हजारों ।।
सीख ले जलना, सीख ले बदलना
सीख ले, चारो ओर को उजाला करना
मैं चलता जा रहा हूँ

क्या तू चल सकता है मेरे संग ??
मैं एक राज़ हूँ मैं एक हम-राज हूँ
पहचान सको, मुझे गर तुम
पहचान लो, मैं तो हर पल तुम्हारे साथ हूँ
बस अंकों की घेरों में बंधा हूँ

मेरी रेखा कुछ कहती, सुन लो ऐ तारों
मत भूलो मुझे, भूलने न देना ऐ नजारों
मेरी हर तरंग, यह कहती है यारों,
उठो जागो और दौड़ पड़ो ए मुशाफरों ।।

मेरे पापा

जब जब मुस्कुरायी, साथ रहे पापा,
जब - आँख भर आयी, पास रहे पापा
छोटी थी जब, हाथ कपड़ चलना सिखाया
बड़ी हुई, हाथ छोड़ आगे बढ़ना सिखाया ।
बढ़ती चली गयी अपने लक्ष्य की राहों पर
जहाँ गयी, हर पल साथ रहे पापा ।
भूल के भी जब, भूल हुई मुझसे
रूठ गयी दूनिया, दूर हुई मुझसे।
हाथ थाम, संघर्ष करना सिखाये पापा,
मैं लाडो अपने बाबूल की,
राहों में कोमल फूल बिछाये पापा ।।
विदा हो गयी पिया घर,
आँसू पौंछ-पौंछ आँखों से
बार -बार रूलाये पापा ।।
नन्हीं कोमल हाथों को पकड़,
भूल घुटनों का दर्द,
फिर से गोद में लिए
मुजे खिलाये पापा।।
सच्
जब-जब मुस्कुरायी साथ रहे पापा ।
जब आँख भर आयी पास रहे पापा ।

चाँदनी पटेल (बीएससी भाग2)

नया जगत

क्यों कोलाहल एवं घरघराहट
और ये कैसी घबराहट,
आना है नया जगत ये
पर कैसी है ये हालत।
शोर कहीं धुओं के बादल
और बनते इटों के जंगल,
तहस-नहस कर चुके जहाँ को
क्या इसलिये जाते हैं मंगल
रंग-भेद अभी छूटा नहीं
नाए खतरे आ गये यहाँ,
क्या हासिल होगा मंगल
नहीं बचा पाये जहाँ ।
बलि दे चुके आदर्शों की
नीति की है किसे परवाह,
खून खराबा है आदर, अब
जीने की रही किसको चाह ।
दिल दहलाने वाली खबरें
मिलती है, है सुनने को यहाँ-वहाँ
क्या लिये जन्में थे हम
और बना था ये जहाँ

गीतिका (बीएससी भाग2)

तुझको दिल को बात बताना

तुझको दिल को बात बताना
अच्छा लगता है ।
सुख-दुख तेरे साथ निभाना
अच्छा लगता है ।
सुबह-शाम चलकर धरती की दूरी जो नापे
ऐसे सूरज पर इतराना अच्छा लगता है ।
यू तो बहुत कठिन है,
जीवन में कुछ भी पाना
लेकिन दोनों हाथों हाथ लुटाना
अच्छा लगता है ।
अगर हौसले हो बुलन्द
बाहों में ताकत हो तूफानों से फिर टकराना
अच्छा लगता है ।
क्षितिज नहीं है
धरा-गगन की केवल परछाई
मन में उसका त्रिभुज बनाना
अच्छा लगता है ।

कुमारी लाकेश (बीएससी भाग2)

हार मत तू प्रयास कर

अंत से आरम्भ कर
इस सफर का तू प्रारम्भ कर
रख हौसला, विश्वास कर
हार मत तू प्रयास कर
।
मंजिल दूर ही सही पर रास्ता तो पास है ।
इरादों में है मजबूती और दिल में एक प्यास है ।
संघर्ष है, उत्कर्ष है, मन में तेरे हर्ष है ।
बस कर्म कर, न शर्म कर, मन को न तू
निराश कर ।
हार मत तू प्रयास कर
।
न पग डिगा, बस पग बढ़ा, हो कर्म पथ पर तू खड़ा ।
न भूल तू एक मनुज, कि कर्म भाग्य से है बड़ा ।
भूत था, वर्तमान है, भविष्य कुछ नहीं,
बस तेरे चयन का परिणाम है ।
शंखनाद कर, आगाज कर, परिश्रम का शिलान्यास कर ।
हार मत तू प्रयास कर,
हार मत तू प्रयास कर ।

कथन नहीं तुम कर्म बन जाओ

कथन नहीं तुम कुर्म बन जाओ।
सिर्फ कहो नहीं वह कर दिखलाओ
रूको नहीं तुम, जरा कदम लो बढ़ाओ।
ठहरो नहीं, बस चलते जाओ ।

राहें आसान नहीं होती हर मंजिल की ,
सफर का मजा तो चुनौतियों से आता है ।
सीथे रास्ते होते तो बात हीक्या थी,
टेढ़े रास्तों से ही वक्त तुझे आजमाता है।
चल सको तो बढ़ो तुम उस राह पर,
जो टेढ़े रास्तों से होकर तुझे ुस मंजिल तक पहुँचाता है ।
यू तो हर मंजिल की दास्तान खास है,
क्या गम उन बाधाओं का, जब हौसला तेरे पास है।
बस कर सामना उस घड़ी का,
डरने कीक्या बात है ।
देख जिन्दगी आज तेरे लिए
लेकरआयी एक सौगात है।

मन में अपने उमंग भरकर
काम अपना तुम करते जाओ ।
कथन नहीं तुम कर्म बन जाओ,
सिफ कहो नहीं बह कर दिखलाओ ।

आयुष दास बघेल (बीएससी भाग-2)

गगन का चमकता तारा, हाथ में पकड़ दिखा देंगे

भूपेन्द्र साहू (बीएससी भाग-2)

श्रम के सरोवर में सफलता का कमल खिला देंगे
हिमालय के शिखर तक निडर हो चढ़ के दिखा देंगे,
गगन का चमकता तारा, हाथ में पकड़ दिखा देंगे ।

जीवन को चलयान बना सागर में तैरा देंगे,
लहरों के थपेड़ों को पार कर दिका देंगे,
तूफानों को चीरकर हिमशैल पिघला देंगे,
अडिग है विश्वास हमारा,
गगन का चमकता तारा, हाथ में पकड़ दिखा देंगे ।

विदाकर विपदा की रातों को सुहाना, प्रात ला देंगे ,
बिताकर विपदा की रातों को सुहाना प्रातः ला देंगे
पाँव को जमीं पे रहा, आसमां छा दिका देंगे
मन में गहरी लगन लिये आगे बढ़कर दिखा देंगे,
कंकड़-पत्थर को मोती कर, गरीबों में बटवां देंगे,
गगन का चमकता तारा, हाथ में पकड़ दिका देंगे ।

प्रकाश का स्तम्भ बन औरों को रास्ता दिखा देंगे,
गरजते बादलों से न डर,क मंजिल पाकर दिखा देंगे,
गमी-सर्दी-बरसात क्या रोते, परिस्थितियों को भुला देंगे,
घने कोहरे में एक नाय रास्ता ढूंडकर दिखा देंगे
गगन का चमकता तारा, हाथ में पकड़ दिखा देंगे ।

बनाने वाले इस दुनिया को , कुछ खास ऐसा बना देंगे
जलती हुई दोपहरों में, छाया बन दिखा देंगे
चुभते हुए काटों को फूल हम बना देंगे,
फूलों कि इस नगरी में मुस्कुराके हम दिखा देंगे,
गगन का चमकता तारा, हाथ में पकड़ दिखा देंगे ।

बदसूरत पेड़

अन्नपूर्णा कैवर्त (बीएससी-भाग-1)

एक बहुत घना जंगल था । जिसमें एक बदसूरत पेड़ था । एक दिन वह पेड़ बहुत उदास था । और रो रहा था । उसे रोता देख दूसरे आस-पास के पेड़ों ने उससे उसके रोने का कारण पूछा ।

वह रोते-रोते बोला- मुझे कोई पसन्द नहीं करता क्योंकि मैं बदसूरत हूँ । और तुम कितने सुंदर हो । मैं कितना अभागा हूँ ।

हाँ हमतो सुन्दर है ही तू बदसूरत है तो अब रो क्यों रहा है । हाँ, हाँ, हाँ। कुछ समय बाद एक लकड़हारा जंगल में आया ।

लकड़हारे ने उस पेड़ को देखा और बोला यह पेड़ तो मेरे किसी काम का नहीं है और कोई पेड़ देखता हूँ ।

लकड़हारे को उसके आस-पास के पेड़ पसंद आये और वह उन्हें काटने लगा ।

यह देखकर वह पेड़ भगवान का शुक्रिया करता है । और सोचता है कि भगवान ने हमें जैसा बनाया है । उसी में खुश रहना चाहिए ।

बच्चों हमें जीवन में लकड़हारा नहीं बनना है । माली की तरह पेड़ लगाने है । पेड़ कट गये तो धरती वीरान हो जायेगी । धरती को बचाने के लिये हमे पेड़ों की रक्षा करनी है ।

इंसानियत का दामन छोड़कर कामयाबियों का कोई महत्व नहीं है ।

वार्षिक स्नेह सम्मेलन 2016-17
पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियाँ

एम.एससी माइक्रोबायलॉजी की छात्रा रिमझिम मेश्राम
को पुरस्कृत करते हुए अतिथि श्री हेमचंद यादव

अमेरिका में साइंस कान्फ्रेंस में शोध पत्र प्रस्तुति हेतु
रसायन शास्त्र की डॉ. भावना जैन को पुरस्कृत किया गया

रसायन शास्त्र विभाग की शोध छात्रा मितिशा बैद को
को पुरस्कृत करते हुए अतिथि श्री हेमचंद यादव

बायोटेक्नालॉजी विभाग की शोध छात्रा कु. .....
सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र प्रस्तुतिकरण हेतु पुरस्कृत किया गया

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका व्यंजना 2015-16 का
विमोचन करते हुए अतिथिगण

महाविद्यालय वार्षिक स्नेह सम्मेलन में प्रतिवेदन प्रस्तुत करते
हुए प्राचार्य डॉ. एस.के. राजपूत

वार्षिक स्नेह सम्मेलन 2016-17 की झलकियाँ

महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा नृत्य की रंगारंग प्रस्तुति

छात्राओं द्वारा प्रस्तुत समूह नृत्य की झलक

समारोह में उपस्थित महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापकगण

वार्षिक स्नेह सम्मेलन में बड़ी संख्या में छात्राओं एवं प्राध्यापकों की उपस्थिति

महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा पारंपरिक लोक नृत्य की प्रस्तुति

छात्रों द्वारा प्रस्तुत मनमोहक पाश्चात्य नृत्य

वार्षिक स्नेह सम्मेलन 2016-17 की झलकियाँ

छात्राओं द्वारा प्रस्तुत आधुनिक एवं प्राचीन नृत्य का संगम

महाविद्यालय के छात्र द्वारा गिटार वादन सहित गीत की प्रस्तुति

महाविद्यालय की छात्रा द्वारा पारंपरिक छत्तीसगढ़ी लोक

छात्राओं द्वारा प्रस्तुत पाश्चात्य नृत्य गीत की शानदार प्रस्तुति

छात्र-छात्राओं द्वारा सामूहिक रूप से नृत्य की प्रस्तुति

छात्रों द्वारा पारंपरागत एवं पाश्चात्य नृत्य के संगम की प्रस्तुति

वार्षिक स्नेह सम्मेलन 2016-17 की झलकियाँ

छात्र-छात्राओं द्वारा प्रस्तुत समूह गान

छात्र-छात्राओं द्वारा प्रस्तुत स्वागत गीत

महाविद्यालय छात्रसंघ के प्रभारी प्राध्यापक एवं पदाधिकारीगण

महाविद्यालय के कर्मचारियों के साथ प्राचार्य डॉ. राजपूत

विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत नयनाभिराम नृत्यों एवं गीतों का
महाविद्यालय की महिला प्राध्यापकों ने भी वार्षिक

आनंद लेते हुए प्राध्यापक एवं गणमान्य नागरिकगण
सम्मेलन का भरपूर आनंद लिया

वार्षिक स्नेह सम्मेलन के दौरान छात्राओं द्वारा एकल एवं युगल नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति

एनसीसी, एनएसएस, यूथ रेडक्रास आदि अन्य पाठ्येत्तर गतिविधिया

महाविद्यालय में नये एप का शुभारंभ करते हुए मुख्य अतिथि श्री हेमचंद यादव एवं जनभागीदारी अध्यक्ष श्री मनोज शर्मा

मुख्य अतिथी श्री हेमचंद यादव ने समारोह में प्रेरणादायी उद्बोधन दिया

वार्षिक स्नेह सम्मेलन के दौरान खुशी का इजहार करते प्राचार्य डॉ. राजपूत एवं छात्रसंघ अध्यक्ष दुष्यंत साहू

वार्षिक स्नेह सम्मेलन के दौरान अनुशासन व्यवस्था बनाये रखने में एनसीसी कैडेट्स का उल्लेखनीय योगदान

एनएसएस द्वारा आयोजित स्वच्छता अभियान की झलक

एन.सी.सी. कैडेट्स द्वारा दुर्ग शहर में स्वच्छता जागरूकता रैली निकाली गयी

खेलकूद एवं अन्य गतिविधियाँ

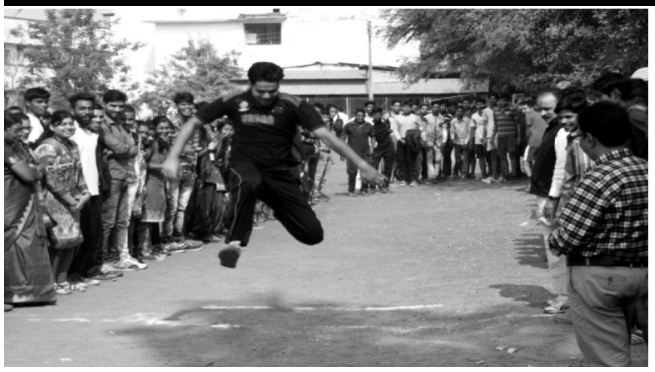

वार्षिक क्रीड़ा समारोह में लम्बी कूद प्रतियोगगिता का आयोजन

वार्षिक क्रीड़ा समारोह में भाग लेती छात्राएँ

गोला फेंक प्रतियोगिता में प्रतिभाग छात्र

वार्षिक क्रीड़ा समारोह में दौड़ प्रतियोगिता की झलक

वार्षिक क्रीड़ा समारोह का आनन्द उठाते प्रचार्य एवं प्राध्यापकगण

वार्षिक क्रीड़ा समारोह में विजेता खिलाड़ी

अंग्रेजी विभाग द्वारा डॉ. तापस मुखर्जी का आंमत्रित व्याख्यान आयोजन हेतु साथ में उपस्थित प्राध्यापकगण

रसायन परिषद के अध्यक्ष समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित प्रो. एस.जी. टंडन

ट्रेनिंग एवं प्लेसमेंट द्वारा कैम्पस इंटरव्यू आयोजन में उपस्थित अधिकारीगण

संस्कारी बहु

नेहा भगत (बीएससी भाग-1)

एक गाँव में एक गरीब दम्पति रहते थे । उनकी कोई संतान नहीं थी । वे दोनों बहुत परेशान रहते थे, दुखिया बेचारी प्रतिदिन ईश्वर से प्रार्थनाक करती थी । अन्ततः पाँच वर्ष पश्चात उस दुखियारी का सूना गोद भर गया । उनकी पुत्र की प्राप्ति हुई । कई वर्षों पश्चात उस घर में खुशी आया । वह बच्चा बड़ा हो गया उसकी शिक्षा भी अच्छे से सम्पन्न हो गयी । वह एक अच्छे ऑफिस में काम करने लगा । रोज वह आॉफिस में काम करने लगा । रोज वह आॉफिरस जाता और अपने मम्मी-पाप से भी बहुत ज्यादा प्यार करना और उनका ख्याल रखता था । कुछ दिनों पश्चात उसके माता पिता अपने बेटे की विवाह कर दिय सभी लोग खुशी-खुशी रहने लगे । उसके माता-पिता बुजुर्ग हो गये । तो वे दोनों ज्यादा काम नहीं करने सकते थे । उनका बेटा धीरे-धीरे उनका ख्याल भी रखना छोड़ दिया ।

एक दिन उसकी माँ अपने बेटे के रूम में जा पहुँची देखी तो दरवाजा बंद था उसे कुछ आवाज सुनाई दी वह वहाँ रूक गयी । उसने सुना की वह अपनी पत्नि से कह रहा था अब मम्मी-पापा की वृद्धा आश्रम आश्रम में छोड़ देंगे क्योंकि मैं ऑफिस जाता हूँ उनका ख्याल कौन रखेगा वैसे भी घर में पड़े रहते हैं कुछ काम नहीं करते हैं, तो वहाँ उनका अच्छे से ध्यान भी रखेंगे और उन्हें कुछ काम करना भी नहीं पड़ेगा यह बात सुनकर उसकी माँ रोने लगी । उतने में उसकी बहु बोली देखिए आप भूल गये आज आप जो भी ले अपने माँ पापा के कारण ही हो आप के माँ-पापा नहीं होते तो आप भी नहीं आपके माँ पापा इतने मेहनत और प्यार से आपको इस मुकाम पर पहुँचाए और आप उनके लिए ऐसा सोच रहे हो । मैं उन्हे कहीं जाने कनहीं दूँगी भले से वे बैठे रहे कम-से-कम मेरे नजरों के सामने रहेंगे और मुझे उनका आशीर्वाद प्राप्त होगा । मेरे लिये उनका आशीर्वाद मिलना ही सबसे बड़ा सौभागय होगा । मैं उनका ध्यान रखूँगी । यह बात सुनकर उसकी माँ आँसु पोछते हुए मंदिर के सामने जाकर खड़ी हो गयी और ईश्वर का ध्यान किया और उनको धन्यवाद दिया मुझे लक्ष्मी जैसी इतनी अच्छी बहु मिली ।...

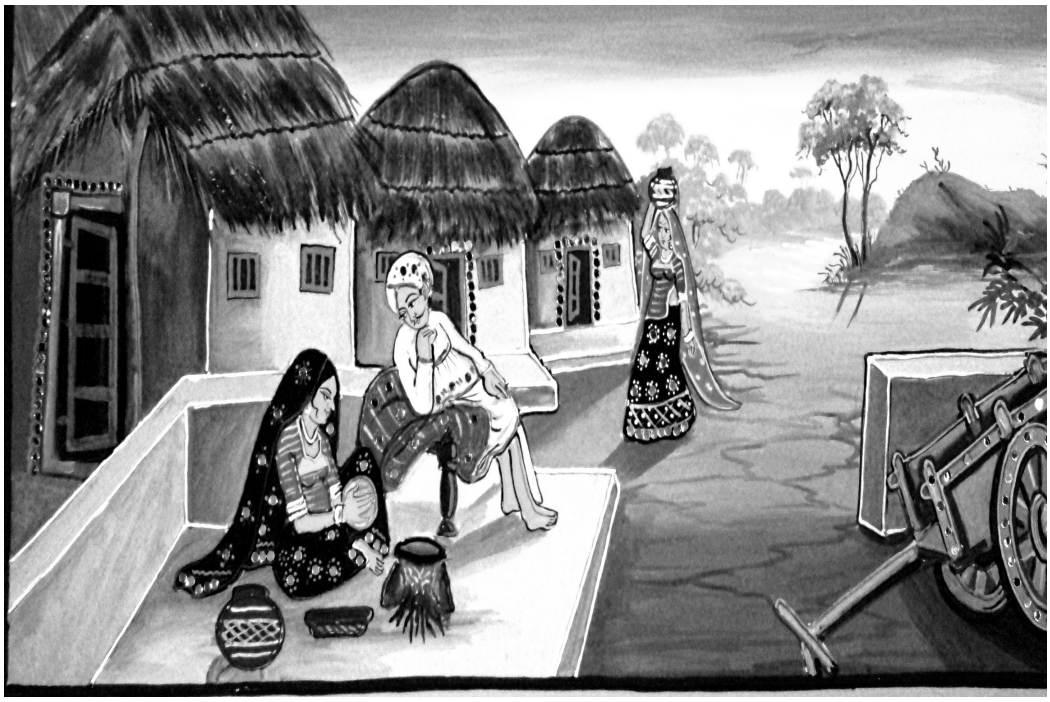

पारचर्चा

वर्तमान परीक्षा प्रणाली की प्रासंगिकता

1. वर्तमान परीक्षा प्रणाली शिक्षा के उद्देश्य को पूर्ण करने में किस हद तक सहायक है?
2. महाविद्यालय में परीक्षा का वर्तमान पैटर्न जिसके अंतर्गत अति लघुउत्तरीय, तथा दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जाते हैं, क्या विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन की दृष्टि से प्रभावी है? यदि नहीं तो वैकल्पिक पैटर्न क्या ह
3. आप जिस विषय के अध्ययन-अध्यापन
4 पाठ्यक्रम के शिक्षण की प्रक्रिया में सैद्धान्तिक तथा प्रायोगिक सामग्री के बीच संतुलन से आप संतुष्ट हैं? यदि नहीं तो किस तरह का संतुलन स्थापित किया जाना चाहिये? से जुड़े हैं उसका पाठ्यक्रम किस हद तक सार्थक एवं उपयोगी प्रतीत होता है? ेना चाहिय?
5. क्या छात्रों का समग्र तथा सतत् मूल्याकंन आवश्यक है? अथवा वर्ष में एक या दो बार वार्षिक तथा अर्धवार्षिक परीक्षा के रूप में मूल्यांकन होना चाहिये? सेमेस्टर प्रणाली पर अपने विचार व्यक्त कीजिये।
6. संपूर्ण परीक्षा प्रणाली पर अपनी राय प्रस्तुत कीजिए।

1. (डॉ. प्रशान्त श्रीवास्तव)

सहायक प्राध्यापक
भू गर्भशास्त्र विभाग

1. उत्तर : - शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है विद्यार्थी का बौद्धिक एवं सर्वांगीण विकास। विद्यार्थी के इसी कौशल की परख करने हेतु परीक्षा लेने का प्रावधान है। परीक्षा की मुख्य अवधारणा यह है कि विद्यार्थी ने पठन-पाठन के दौरान वास्तव में ज्ञानार्जन किया अथवा नहीं। साथ ही परीक्षा हॉल में उत्तरों को याद करके उत्तर पुस्तिका में लिखने संबंधी प्रणाली से विद्यार्थी की स्मरण शक्ति की भी जांच हो जाती है। इस प्रकार अनेक अर्थों में वर्तमान परीक्षा प्रणाली शिक्षा का उद्देश्य को पूर्ण करनी है।

2. उत्तरः- वर्तमान परीक्षा का महाविद्यालय में लागू पैटर्न प्रभावी हैं, परंतु वैकल्पिक उत्तर भी खंड (अ) में दिये जाने चाहिये जिससे विद्यार्थी सही विकल्प चुन सके क्योंकि संघ लोकसेवा आयोग से लेकर बैंकिंग, रेल्वे, राज्य सेवा परीक्षा आदि सभी में उत्तरों के विकल्प दिये रहते हैं। हमारे विद्यार्थी को भी उसका अभ्यास होना चाहिये।

3. उत्तरः- मैं भू-विज्ञान विषय का शिक्षक हूँ। भूविज्ञान के स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं के पाठ्यक्रम की इस प्रकार संरचना की गई है कि उसमें व्यवहारिक एवं फील्ड वर्क में आने वाली जानकारियों का समवेश है। साथ ही इस पाठ्यक्रम में यूपीएससी/पीएसी जैसी प्रतिष्ठित परीक्षाओं के पाठ्यक्रमों का भी समावेशित किया गया है। यही कारण है कि यूपीएससी तथा राज्यसेवा परीक्षाओं तथा विभिन्न माइनिंग जियोलॉजी से जुड़े प्रतिष्ठानों में भूविज्ञान के विद्यार्थियों का बड़ी संख्या में चयन हो रहा है।

4 उत्तरः- भू-विज्ञान में स्नातक तथा स्नाकोत्तर पर सैद्धान्तिक तथा प्रायोगिक सामग्री के मध्य पूर्णतः संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया जाता है। सैद्धान्तिक में बोर्ड ऑफ स्टेडीज द्वारा पाठ्यक्रम परिवर्तन किये जाने पर प्रायोगिक पाठयक्रम भी तद्नुसार पर्रिवर्तित किया जाता है।

5. उत्तरः- विद्यार्थी का समग्र तथा सतत् मूल्यांकन आवश्यक है। विद्यार्थियों द्वारा कक्षा में अर्जित किये गये ज्ञान की वास्तविक जानकारी भी प्राप्त हो सकेगी। जब उसका सतत मूल्यांकन हो। यह मूल्यांकन परंपरागत परीक्षा । टेस्ट प्रणाली, कक्षाओं में प्रश्न पूछकर, विषय संबंधित सेमीनार, सामूहिक परिचर्चा, भाषण, यूनिट टेस्ट परीक्षा , शैक्षणिक भ्रमण के पश्चात, मौखिक परीक्षा एवं टूर रिपोर्ट बनाना प्रोजेक्ट पर कार्य करना आदि के द्वारा किया जा सकता हैं।

जहां तक सेमेस्टर प्रणाली का प्रश्न है तो यह विद्यार्थियों तथा शिक्षकों दोनों के लिए हितकर है। निश्चित समय अवधि 6 माह के अंतराल में परीक्षा होने के कारण पाठ्यक्रम सीमित होता है। और विद्यार्थियों को पढ़ने तथा शिक्षकों का पढ़ाने में आसानी होती है। साथ ही सेमेस्टर प्रणाली में आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा के अंक एक शैक्षणिक सत्र में दो बार (दोनों सेमेस्टरों में) जुड़ने के कारण विद्यार्थियों के प्राप्तकों में भी अपेक्षाकृत वृद्धि देखी गई है।

6. उत्तर- वर्तमान में समूचे छत्तीसगढ़ में चल रही परीक्षा

प्रणाली में स्नातक एवं स्नातकोत्तर पर समानत होनी चाहिये। वर्तमान में स्नातकत्तर पर वार्षिक परीक्षा प्रणाली तथा स्नातकोत्तर पर सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली के कारण विसंगति का सामना विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों दोनों को करना पड़ता है। दिसंबर माह में जहां स्नानकोत्तर समेस्टर परीक्षाओं के कारण स्नातक स्तर को सैद्धान्तिक कक्षाएं प्रभावित होती हैं। वहीं मार्च-अप्रैल में स्नातक स्तर की वार्षिक परीक्षाओं के कारण स्नानकोत्तर की सैद्धान्तिक कक्षाओं के संचालन में कठिनाई आती है। अतः स्नातक एवं स्नातकोत्तर दोनों की परीक्षा प्रणाली समान होनी चाहिये।

2.

नाम –.....

पद –.....

1. वर्तमान परीक्षा प्रणाली शिक्षा के उद्देश्य को पूर्ण करने में अशंत : सहायक है। शिक्षा का उद्देश्य को पूर्ण करने में अशंतः सहायक है। शिक्षा का उद्देश्य होता है- विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास। वर्तमान परीक्षा प्रणाली में विद्यार्थी केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने या अच्छे अंक हासिल करने की मानसिकता रखते है। परीक्षा के उपरान्त पाठ्यक्रम की कम बातें ही याद रख पाता है। विद्यार्थी के मस्तिष्क में वे जानकारियाँ ही अधिक भर जाती है जो आमतौर से व्यवहारिक जीवन में काम नहीं आती। यह प्रणाली छात्रों को रहने और ग्रेड आधारित गतिशीलता के दबावों से घिरी हुई है।

2. महाविद्यालय में परीक्षा का वर्तमान पैटर्न उत्तम है। लघु उत्तरीय प्रश्न प्रणाली के समावेश किए जाने से प्रतियोगी परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना आसान होगा। चयनित प्रश्नो पर विशेष देने की प्रवृत्ति कम होगी। पूरा पाठ्यक्रम को पढ़ने की आवश्यकता होगी। दीर्घ उत्तरीय प्रश्न द्वारा अपने विचारो को मूर्त रूप देने भी प्रवृति बढ़ेगी।

3. मैं कला/विज्ञान संचाय के भूगोल विषय से जुड़ी हूँ। भूगोल विषय का पाठ्यक्रम लगभग सार्थक है। यह विषय अंक (fild) के अध्ययन से गहरा संबंध रखता है। स्नातक एवं स्नाकोत्तर कक्षाओं में क्षेत्रीय अध्ययन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। (fild) में जाकर ही विद्यार्थियों को वास्तविक ज्ञान हो सकता है, अतः पाठ्क्रम में इसका समावेश किया जाना चाहिए।

4. पाठ्यक्रम के शिक्षण प्रक्रिया में सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक सामग्री भिन्न-भिन्न है। सैद्धान्तिक एवं प्रयोगिक सामग्री के बीच संतुलन है।

5. छात्रों का समग्र तथा सतत मूल्यांकन आवश्यक है। विद्यार्थियों के द्वारा प्रायः मूल्यांकन को (अर्धवार्षिक, मॉडल परीक्षा) को सतही तौर पर लिया जाता है। सेमेस्टर प्रणाली उचित है। समेस्टर प्रणाली से छात्रों पर पाठ्यक्रम का दबाव कम हो जाता हैं।

6. सम्पूर्ण परीक्षा प्रणाली ऐसी होनी चाहिए जहाँ से निकलने वाले विद्यार्थी अपने जीवन के प्रति जागरूक हो तथा परिवार समाज एवं राष्ट्र के प्रति जवाबदेही एवं जिम्मेदारी का अनुभव कर सके परीक्षा उत्तीर्ण कर बेरोजगारी की संख्या में वृद्धि न करते हुए स्वरोजगार की प्रेरणा मिले।

3.

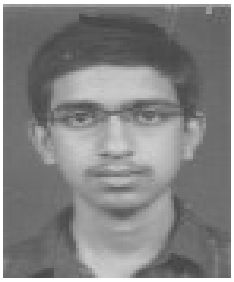

प्रियम वैष्णव

(B.A. III Year)

1. उत्तरः- वर्तमान परीक्षा प्रणाली शिक्षा के उद्देश्य को पूर्ण करने में काफी हद तक सहायक है क्योंकि वर्तमान परीक्षा प्रणाली में विद्यार्थी को समस्त पाठ्यक्रम का बारीकी से अध्ययन करना अत्यावश्यक हो गया है। जिससे विद्यार्थियों द्वारा पाठ्यक्रम का अध्ययन किया जायेगा और परीक्षा परिणामों में वृद्धि होगी, इस तरह वर्तमान परीक्षा प्रणाली शिक्षा के उद्देश्य को पूर्ण करने में सफल होगी।

2. उत्तरः- महाविद्यालय में परीक्षा का वर्तमान पैटर्न विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन की दृष्टि से अत्यंत प्रभावी है। वर्तमान पैटर्न के कारण संपूर्ण पाठ्क्रम के भीतर तक का गहन अध्ययन करने से विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि होती है। वह बाजार में बिकने वाले विभिन्न प्रकार के निरर्थक कूंजियों के प्रयोग से बचता है और पुस्तकों के अतूल्य ज्ञान को प्राप्त करने का प्रयास करता है, जिससे उसके अंक बड़ सके।

3. उत्तरः- मैं बी.ए. तृतीय वर्ष का विद्यार्थी हूँ। मेरे विषय इतिहास, राजनीति विज्ञान व हिन्दी साहित्य के पाठ्यक्रम बहुत पूराने हो गये है। लंबी अवधि से पाठ्यक्रमों में पविरर्तन ना करने की वजह से विद्यार्थियों को नवीन विचारों अविष्कारो, उत्खनन नवीन विचारकों का ज्ञान नहीं हो पाता है। वर्तमान पाठ्यक्रम उपोगी है परंतु अब इसे पूर्णतः परिवर्तित करने का समय आ गया है। हमारे पाठ्यक्रमों में नवीन विषयों का अभाव तो है ही साथ ही कई महत्वपूर्ण प्राचीन विषयों का भी अभाव है, जिससे विद्यार्थियों को अधूरा ज्ञान प्राप्त होता है और कहाँ भी गया है - अधूरा ज्ञान अत्यंत खतरनाक होता है। इस कारण विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए पाठ्यक्रमों में पविरर्तन आवश्यक हो गया है।

4. उत्तरः- पाठ्यक्रम के शिक्षण की प्रक्रिया में सैद्धांतिक तथा

प्रायोगिक सामाग्री के बीच संतुलन से मैं संतुष्ट नही हूँ। हमारे पाठ्यक्रम में सैद्धांतिक पक्ष पर अधिक बल दिया जाता है, बजाय प्रायोगिक पक्ष के पाठयक्रम में प्रायोगिक पक्ष में भी वृद्धि करनी चाहिये। केवल विज्ञान संकाय ही नहीं सामाजिक विज्ञान में भी प्रयोग होते है। सामाजिक विज्ञान की प्रयोगशाला ये संपूर्ण विश्व समाज है जिसका हमें नजदीकी से अध्ययन करना चाहिए और इसी चीज की हमारे पाठ्यक्रम में कमीं है। वह हमें राजनीति का इतिहास का साहित्य का सैद्धांतिक अध्ययन तो कराती है परंतु प्रायोगिक अध्ययन अर्थात् समाज के बीच जाकर अध्ययन नही कराती , जिसे परिवर्तित करना चाहिये। प्राध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों को समाज रूपी प्रयोगशाला में ले जाकर सामाजिक प्रयोग करवाने चाहिए, जिससे विद्यार्थियों का समग्र विकास होगा और वे अच्छे नागरिक बन सकेगे।

5. उत्तरः- छात्रों के समग्र तथा सतत् मूल्यांकन के लिए सेमेस्टर प्रणाली सर्वश्रेष्ठ है। सेमेस्टर प्रणाली लागू होने से एक शिक्षण सत्र में दो बार परीक्ष होगी जिसके कारण विद्यार्थी सदैव जागरूक होकर अध्यापन कार्य में लगा रहेगा। वर्ष में एक बार परीक्षा होने से विद्यार्थी असावधान हो जाते है परंतु एक वर्ष में दो बार परीक्षा होने से वे सावधानी पूर्वक अध्ययन करेगे। सेमेस्टर प्रणाली के साथ-साथ प्रतिमाह कक्षाओं में टेस्ट की प्रणाली भी शुरू करनी चाहिये जिससे विद्यार्थी जागरूक रहे। सेमेस्टर प्रणाली लागू होने से पाठ्यक्रम कम होता है। और उसकी गुणवत्ता में वृद्धि होती है। जिससे परीक्षा में अंक अधिक प्राप्त करने की संभावना बड़ जाती है।

6.उत्तरः- वर्तमान परीक्षा में प्रणाली अच्छी है परंतु इस परीक्षा प्रणाली को सेमेस्टर प्रणाली में लागू करने से सभी संकायों के लिए लाभ प्रद होगा। वर्तमान पैटर्न, नवीन पाठ्क्रम, प्रायोगिक गतिविधियों में वृद्धि व सेमेस्टर प्राणाली लागू कर देने से विद्यार्थियों के ज्ञान में व चरित्र में आश्चर्य जनक वृद्धि होगी। वे अधिक ज्ञानवान, चरित्रवान बनेगे व इस देश के जिम्मेदार नागरिक बन सकेगे।

4.

तुषार रंजन डे
(बीएससी भाग -2)

उत्तरः-1. वर्तमान शिक्षा प्रणाली सैद्धांतिक शिक्षा देने में काफी सक्षम है लेकिन आंकिक (Numerical) प्रश्नो से अवगन न होने के कारण शिक्षा के उद्देश्य को पूर्ण करने में यह असफल हो जाना है।

उत्तरः-2. महाविद्यालय में परीक्षा का जो वर्तमान पैटर्न है वह विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन की दृष्टि से उतनी ज्यादा प्रभावी नहीं है क्योंकि इसमें आंकिक प्रश्नों के द्वारा ही किसी भी Topicको अच्छे से समझा जा सकता है तथा प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए आंकिक प्रश्न ही ज्यादातर पूछे जाते है।

उत्तरः-3.हमारा विषय भौतिकी जिससे हम जुड़े है उसका पाठ्यक्रम वर्तमान समय के अनुसार काफी हद में आगे चलकर जिनमूलभूत तत्वों की आवश्यकता होगी वे सभी हमारे पाठ्यक्रम में मौजूद है।

उत्तरः-4.पाठ्यक्रम के शिक्षण की प्रक्रिया में सैद्धांतिक तथा प्रयोगिक सामाग्री के बीच संतुलन से काफी हद तक संतुष्ट है लेकिन कुछ हद तक संतुष्ट नहीं भी है क्योंकि देखने को मिलती है। इसमें संतुलन स्थापित करने हेतु प्रायोगिक पाठ्क्रम में सैद्धांतिक पाठ्क्रम के अनुरूप होना चाहिये।

उत्तरः-5.शिक्षा वह है जो छात्र को हर परिस्थिति के लिए तैयार करे जिसके लिये छात्रों को सतत् मूल्यांकन की आवश्यक सफलता पाठ्यक्रम के वृहद न होकर कम होने में है। जिससे कि विद्यार्थी को उसका पूर्ण ज्ञान हो सके। सेमेस्टर प्रणाली की प्रक्रिया उचित है लेकिन इस प्रक्रिया में भी सतत् मूल्यांकनहोना चाहिये।

5.

लोकांक्षा सुकतेल
M.SC.I st sem
(भौतिक शास्त्र)

1. उत्तरः- केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान कर रहा है। व्यवहारिक की कमी।

2.उत्तर :- भौतिकी के छात्र है। और कुछ हद तक सार्थक एवं उपयोगी प्रतीत होता है।

3.उत्तर :- नही है सैद्धांतिक सामग्री का प्रायोगिक विवरण छात्रों को समझाना एवं दर्शाया जाना चाहिए।

4.उत्तरः- सेमेस्टर प्रणाली उपयुक्त है।

5.उत्तरः- समस्त विषयों की नियमित कक्षाएं होनी चाहिए तथा पाठ्यक्रम सामग्री छात्र-छात्राओं को उपलब्ध कराना चाहिए। नवीन संस्करण की पुस्तकें उपलब्ध करानी चाहिए।

6. उत्तर :- महाविद्यालय में परीक्षा का वर्तमान पैटर्न जिसके अन्तगर्त अति लघुत्तरीय तथा दीर्घ उत्तरीय प्रश्न पूछे जाते हैं वह विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन की दृष्टि से प्रभावी है। किन्तु प्रश्न इकाईवार पूछे जाना चाहिये। जिसमें किसी भी खंड के प्रश्नो प्रथम हल करने की छूट होनी चाहिए ।

6.

नाम .....

पद.....

1. उत्तरः- शिक्षा का उद्देश्य मानव मात्र की बौद्धिक प्रखरता, सहिष्णुता, ए व संपूर्ण जैविक मूल्यों का सतत विकास है। शिक्षा के उद्देश्य एवं शिक्षा प्रणाली समय एवं परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित हो सकते हैं। हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली वृहद पाठ्यक्रम का चयन, विषय का अध्यापन तथा मूल्यांकन एवं परिणाम आधारित शिक्षा प्रणाली है। वर्तमान परीक्षा प्रणाली में छात्रों का सतत् मूल्यांकन विभिन्न प्रकार से किया जाता है, जैसे आंतरिक मूल्यांकन, प्रेजेन्टेशन, प्रोजेक्ट, असाइन्मेंट, लिखित एवं प्रायोगिक परीक्षा आदि, जो कि विद्यार्थियों के चहुंमुखी विकास में सहायक है। पाठ्यक्रम में कुछ व्यवहारिक ज्ञान एवं क्षमताओं की परीक्षा को सम्मिलित कर शिक्षा के उद्देश्यों को संपूर्ण रूप से पूर्ण किया जा सकता है। शिक्षा पद्धति सदैव 'studya based' ना होकर 'Learning based' होना चाहिए।

उत्तर 2. अति लघुउत्तरीय एवं दीर्घउत्तरीय प्रश्न विद्यार्थियों का समग्र मूल्यकांन नही कर सकते। इस प्रकार के प्रश्न विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम का विस्तृत अध्ययन करने पर विवश तो कर सकते हैं, किन्तु उनकी तार्किक एवं व्यवहारिक क्षमता का आंकलन करने के लिए महाविद्यालय के वर्तमान परीक्षा प्रणाली में सामान्य ज्ञान एवं तर्क संगत प्रश्न भी पूछे जाने चाहिए, जिससे विद्यार्थी के संपूर्ण बौद्धिक स्तर का मूल्यांकन किया जा सके।

3.उत्तरः- प्राणीशास्त्र विषय के अंतर्गत वृहद पाठ्यक्रम सम्मिलित है, जिसमें जीव विज्ञान के सभी आयामों का विस्तृत अध्ययन किया जाता है। यदि इस पाठ्यक्रम में कुछ रोजगारोंन्मुखी तकनीकी एवं प्रशिक्षण संबंधी सामग्री को सम्मिलित किया जाये, तो यह विद्यार्थियों के लिए अधिक सार्थक एवं उपयोगी सिद्ध होगा।

4.उत्तरः- किसी भी विषय के पाठ्क्रम जिसमें प्रायोगिक गतिविधियां होती है, में प्रायः सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक सामग्री के बीच संतुलन नहीं होता है। प्रयोगशाला में बैठकर सभी प्रायोगिक गतिविधियों का उद्देश्य कृत्रिम सामग्रियों से भलि भांति पूर्ण नहीं किया जा सकता। अनेक प्रयोगों के लिए उनके उचित प्राकृतिक वातावरण में सैद्धांतिक शिक्षा को प्राकृतिक रूप से सम्पन्न कर संतुलन स्थापित किया जा सकता है, एवं विद्यार्थियों की जिज्ञासा को प्रायोगिक रूप से शांत किया जा सकता है, साथ ही यह विद्यार्थियों में उत्साह एवं शिक्षा के प्रति रूझान जागृत करने में सहायक होगा ।

5. उत्तर :-छात्रों के चहुंमुखी विकास हेतु उनका सतत् समग्र मूल्यांकन इससे (Contionuouse and comprensive evaliation) आवश्यक है। इससे शिक्षा के प्रति उनका रूझान बना रहता है, एवं छात्र पाठ्क्रम का संपूर्ण अध्ययन करते हैं। सतत् मूल्यांकन के दबाव स्वरूप महाविद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति भी बढ़ती है। इसके विपरित अर्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा से उनका समग्र मूल्यांकन संभव नहीं है।

सेमेस्टर प्रणाली वर्तमान में एक उत्तम शिक्षा प्रणाली है। इसमें वर्ष भर विषय को अत्यधिक गहनता से अध्ययन करने का अवसर विद्यार्थी के पास होता है। पाठ्यक्रम के विस्तृत अध्ययन से विद्यार्थी अनेक प्रतियोगी एवं व्यवसायिक परिक्षाओं को सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

6.उत्तरः- वर्तमान परीक्षा प्रणाली छात्रों के स्थाई बौद्धिक स्वर का मूल्यांकन करने में असमर्थ है। विस्तृत पाठ्यक्रम का उनके दैनिक जीवन में कोई प्रत्यक्ष उपयोग नहीं है। अतः विद्यार्थियों का रूझान विषय की गहनता को समझने से अधिक परीक्षा में नंबर प्राप्त करने में रहता है। इसके अतिरिक्त पाठ्क्रम एवं परीक्षा प्रणाली रोजगारोंन्मुखी नही होने के कारण विषय के प्रति उसकी जिज्ञासा कम होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि वर्तमान में संपूर्ण परीक्षा प्रणाली केवल उत्कृष्ट परिणाम पर आधारित परीक्षा प्रणाली है, जिसका छात्रों के भविष्य सामाजिकता, व्यवहारिकता, कौशल एंव रोजगार से कोई संबंध नहीं है। परीक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों का सतत् मूल्यांकन पारम्परिक प्रश्न-पत्रों के अतिरिक्त अन्य गतिविधियों जैसे :- विषय आधारित खेल या विभिन्न प्रायोगिक सामग्रियों द्वारा सैद्धांतिक पाठ्यक्रमों का वर्णन आदि के द्वारा भी किया जाना चाहिए।

7.

लावेन्द्र कुमार साहू

(M.A. III Sam History)

उत्तरः- वर्तमान परीक्षा प्रणाली केवल पाठ्यक्रम की पढ़ाई ही नहीं अपितु विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास तथा उसके बौद्धिक क्षमता को विकसित करने में सहायक है जो सही मायने में शिक्षा के उद्देश्य को पूर्ण कर रहा है।

प्रश्न 2. महाविद्यालय में परीक्षा का वर्तमान पैटर्न क्या विद्यार्थियो के समग्र मूल्यकांन की दृष्टि से प्रभावी है यदि नही तो वैकल्पिक पैटर्न क्या होना चाहिये।

उत्तर :- हाँ, महाविद्यालय में परीक्षा का वर्तमान पैटर्न जिसके अंतर्गत

अतिलघुत्तरीय तथा दीर्घ उत्तरीय प्रश्न पूछे जाते है जो विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन की दृष्टि से प्रभावी है। क्योंकि यह विषय के गहन अध्ययन के साथ उनकी विषय के प्रति समझ को प्रदार्शित करता है। साथ ही इसके शब्द बंधन प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अभ्यर्थी में समझ विकसिकत करती है।

प्रश्न 3. आप जिस विषय के अध्ययन से जुड़े हैं उसका पाठ्यक्रम किस हद तक सार्थक एवं उपयोगी प्रतीत होता है?

उत्तरः- मैं एम.ए इतिहास का विद्यार्थी हूँ। इतिहास का पाठ्यक्रम एक निश्चित रणनीति के अनुरूप इतिहास में घटित कालक्रमो को क्रमबद्ध से तथा अभ्यर्थी के समझ के अनुरूप संयोजित किया गया है। यह पाठ्यक्रम हमे उस ज्ञान के क्षेत्र में बेहतर और सराहना के पात्र बनाने में सहायता करता है। साथ ही सिविल सेवा जैसे परीक्षाओं में इसकी उपयोगिता सिद्ध होती है।

प्रश्न 4. पाठक्रम के शिक्षण की प्रक्रिया में सैद्धांतिक तथा प्रायोगिक सामाग्री केबीच सन्तुलन से आप संतुष्ट है?

उत्तरः- हॉ पाठ्यक्रम के शिक्षण की प्रक्रिया में सैद्धांतिक तथा सामाग्री के बीच सन्तुलन से हम संतुष्ट है। यह विद्यार्थियों के योग्यता व बौद्धिक क्षमता विकसित करने का अच्छा माध्यम है।

प्रश्न 5. क्या छात्रों का समग्र तथा सतत् मूल्यांकन आवश्य है? समेस्टर प्रणाली पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर :- हाँ छात्रों का समग्र तथा सतत् मूल्यांकन आवश्यक है। इससे पढ़ाई के प्रति विद्यार्थियों में निरन्तरता बनी रहती है। वर्ष में एक या दो बार वार्षिक तथा अर्द्धवार्षिक परीक्षा के रूप में मूल्यांकन अवश्य होना चाहिए। इससे विद्यार्थी अपने को मूल्यकांन। परजता है साथ ह परीक्षा से घबराहट दूर होती है। और एक समझ विकसित होती है। सेमेस्ट प्रणाली बेहतर है। क्योंकि विद्यार्थी को कम समय में अधिक अध्ययन को प्रेरित करती है।

प्रश्न 6. सम्पूर्ण परीक्षा प्रणाली पर अपनी राय प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर :- सम्पूर्ण परीक्षा प्रणाली को सेमेस्टर प्रणाली कर दी जानी चाहिए। क्योंकि इस प्रणाली मे कम विषय पढ़ने होते है। विद्यार्थी के ऊपर दबाव कम होता है। समय से पढ़ाई होने से गुणवत्ता में सुधार आती है। एक वर्षी य पाठ्यक्रम से पढ़ाई में सुस्ता आ जाती है। मन में धारणा बना ली जाती है कि परीक्षा अभी काफी दूर है। लेकिन इस व्यवस्था से वे पढ़ाई में ज्यादा ध्यान देंगे और रिजल्ट भी बेहतर होगा। यह प्रणाली जीवन के अन्य क्षेत्र संगीत। कला, खेल में भी जाने का अवसर प्रदान करती है।

8.

डॉ. प्राची सिंह

उत्तरः-1. शिक्षा का उद्देश्य मानव मात्र की बौद्धिक प्रखरता, सहिष्णुता, ए व संपूर्ण जैविक मूल्यों का सतत विकास है। शिक्षा के उद्देश्य एवं शिक्षा प्रणाली समय एवं परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित हो सकते हैं। हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली वृहद पाठ्यक्रम का चयन, विषय का अध्यापन तथा मूल्यांकन एवं परिणाम आधारित शिक्षा प्रणाली है। वर्तमान परीक्षा प्रणाली में छात्रों का सतत् मूल्यांकन विभिन्न प्रकार से किया जाता है, जैसे आंतरिक मूल्यांकन, प्रेजेन्टेशन, प्रोजेक्ट, असाइन्मेंट, लिखित एवं प्रायोगिक परीक्षा आदि, जो कि विद्यार्थियों के चहुंमुखी विकास में सहायक है। पाठ्यक्रम में कुछ व्यवहारिक ज्ञान एवं क्षमताओं की परीक्षा को सम्मिलित कर शिक्षा के उद्देश्यों को संपूर्ण रूप से पूर्ण किया जा सकता है। शिक्षा पद्धति सदैव 'studya based' ना होकर 'Learning based' होना चाहिए।

उत्तर 2. अति लघुउत्तरीय एवं दीर्घउत्तरीय प्रश्न विद्यार्थियों का समग्र मूल्यकांन नही कर सकते। इस प्रकार के प्रश्न विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम का विस्तृत अध्ययन करने पर विवश तो कर सकते हैं, किन्तु उनकी तार्किक एवं व्यवहारिक क्षमता का आंकलन करने के लिए महाविद्यालय के वर्तमान परीक्षा प्रणाली में सामान्य ज्ञान एवं तर्क संगत प्रश्न भी पूछे जाने चाहिए, जिससे विद्यार्थी के संपूर्ण बौद्धिक स्तर का मूल्यांकन किया जा सके।

3.उत्तरः- प्राणीशास्त्र विषय के अंतर्गत वृहद पाठ्यक्रम सम्मिलित है, जिसमें जीव विज्ञान के सभी आयामों का विस्तृत अध्ययन किया जाता है। यदि इस पाठ्यक्रम में कुछ रोजगारोंन्मुखी तकनीकी एवं प्रशिक्षण संबंधी सामग्री को सम्मिलित किया जाये, तो यह विद्यार्थियों के लिए अधिक सार्थक एवं उपयोगी सिद्ध होगा।

4. उत्तरः- किसी भी विषय के पाठ्क्रम जिसमें प्रायोगिक गतिविधियां होती है, में प्रायः सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक सामग्री के बीच संतुलन नहीं होता है। प्रयोगशाला में बैठकर सभी प्रायोगिक गतिविधियों का उद्देश्य कृत्रिम सामग्रियों से भलि भांति पूर्ण नहीं किया जा सकता। अनेक प्रयोगों के लिए उनके उचित प्राकृतिक वातावरण में सैद्धांतिक शिक्षा को प्राकृतिक रूप से सम्पन्न कर संतुलन स्थापित किया जा सकता है, एवं विद्यार्थियों की

जिज्ञासा को प्रायोगिक रूप से शांत किया जा सकता है, साथ ही यह विद्यार्थियों में उत्साह एवं शिक्षा के प्रति रूझान जागृत करने में सहायक होगा । 5. उत्तर :- छात्रों के चहुंमुखी विकास हेतु उनका सतत् समग्र मूल्यांकन इससे Contionuouse and comprensive evaliation) आवश्यक है। इससे शिक्षा के प्रति उनका रूझान बना रहता है, एवं छात्र पाठ्क्रम का संपूर्ण अध्ययन करते हैं। सतत् मूल्यांकन के दबाव स्वरूप महाविद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति भी बढ़ती है। इसके विपरित अर्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा से उनका समग्र मूल्यांकन संभव नहीं है।

सेमेस्टर प्रणाली वर्तमान में एक उत्तम शिक्षा प्रणाली है। इसमें वर्ष भर विषय को अत्यधिक गहनता से अध्ययन करने का अवसर विद्यार्थी के पास होता है। पाठ्यक्रम के विस्तृत अध्ययन से विद्यार्थी अनेक प्रतियोगी एवं व्यवसायिक परिक्षाओं को सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

6.उत्तरः- वर्तमान परीक्षा प्रणाली छात्रों के स्थाई बौद्धिक स्वर का मूल्यांकन करने में असमर्थ है। विस्तृत पाठ्यक्रम का उनके दैनिक जीवन में कोई प्रत्यक्ष उपयोग नहीं है। अतः विद्यार्थियों का रूझान विषय की गहनता को समझने से अधिक परीक्षा में नंबर प्राप्त करने में रहता है। इसके अतिरिक्त पाठ्क्रम एवं परीक्षा प्रणाली रोजगारोंन्मुखी नही होने के कारण विषय के प्रति उसकी जिज्ञासा कम होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि वर्तमान में संपूर्ण परीक्षा प्रणाली केवल उत्कृष्ट परिणाम पर आधारित परीक्षा प्रणाली है, जिसका छात्रों के भविष्य सामाजिकता, व्यवहारिकता, कौशल एंव रोजगार से कोई संबंध नहीं है। परीक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों का सतत् मूल्यांकन पारम्परिक प्रश्न-पत्रों के अतिरिक्त अन्य गतिविधियों जैसे :- विषय आधारित खेल या विभिन्न प्रायोगिक सामग्रियों द्वारा सैद्धांतिक पाठ्यक्रमों का वर्णन आदि के द्वारा भी किया जाना चाहिए।

ooo

Relevance of Present Examination System

Sourabh Verma (B.A. III)

unbraid i.e. neutral and practical while judging the present exam system we cannot dong completely its ignobility nor can we blaringly accept it. Every system and proceed are needs change with time. But change in our educational system or must say in exam system its very rare to see any change.

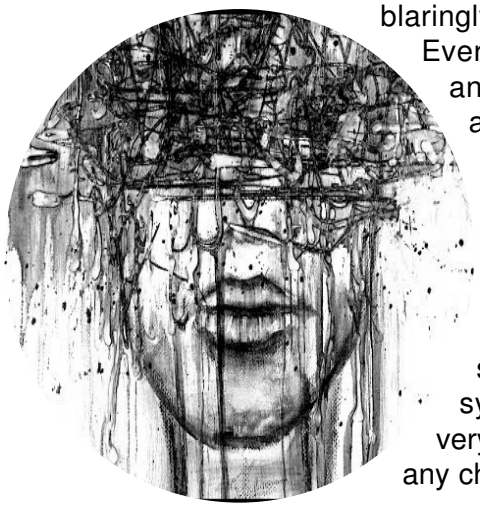

answer question Long Answer question which gives exposure to the students to study syllabus in every way possible but old pattern of attempting5 notation out of question currying 5-20marks is a big setback in terms of mental development, though this method students mental development is not probe And one among two types of patterns first one is the best but in technical exams we must give more focus to the practical part because our students are excellent in theory but when it comes to execution and implementation they feel uncomforted . Able because of the

poor formation of the exams.

Q.2 In college, Objective, short and long answer questions are asked, do this pattern is effective for the students continuous evolution? If not what could be are alternative pattern?

Ans .Up to great extent the present format of question paper is very effective because asking questions in objectives containing 1 marks, short questions of 3 and long question of 5 on 8 marks is great because students have to study the entire syllabus thoroughly, which will help them in future in connective exams because syllabus of any competitive exams requires thorough study not any fakology because question asked are 1 marks on 3 marks, there for answer must be to the point.

Q.3 How helpful and efficient is the syllabus of your subject is

Since, I am on art student I feel that the syllabus whicker are following is outdated it is some from decanted, even our parents studded the some syllabus. For example in Geography mnay research work has been done and we must update our syllabus along with that in History new archeological achievements has been archived which is important for the generation to come acres with and

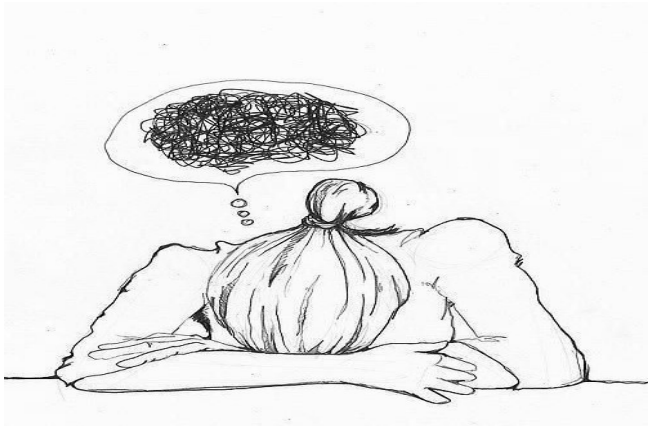

there are multiple example like this and same applies for science and eminence, i.e. updating syllabus

Q.4 Are you satisfied with the balance between Principal and Practical equipments used for educational process in syllabus ? I font, How it can be established?

I am quits conifer table with the balance. Lince geography is the only subject with practical which requires equipments fro practice knowledge along with theoretical. It there is any problem with the balance is science or commerce stream they would described the better.

Q.5 Your Vies on semester System

Semester system must be implemented. Many organizations oppose this systeemd and I do not understand why ? Because in semester system students can study in pieces, i.e. small pieces of large syllabus, and they would be busy in study for semester exams throughout the year and can gain knowledge in small pieces.

On the other hand system of taking only one Annual Examinational the end of the session is not done because this becomes lengthen for students and the and motive of students changes from gaining knowledge to just parrying the exam.

Q.6. Present your views on wrote examination system.

Students of our batch are extremely lucky and we do approved our colleges initiative of implementing new pattern, i.e. of asking questions currying 1 marks, 3 marks and 5 on 8 marks. As we have already discussed the how this new pattern help us to focus as on going knowledge and not to study for the sole purpose of pasting the exanimation and getting degree, We are the first batch on whose this pattern was first implement i.e. in 2015-16 session. And we are benefited with the new pattern. **000**

गांव के बिहिनियां

नाम पंकज कुमार
B.Sc III

छत्तीसगढ़ के माटी ले हमला बिकट प्यार है
इहा के रहवइया मन के घलो खात बात हे

चाऊरला उपजावत हे अऊ खावत नुन भात हे
बासी चटनी ला खा के काम करत दिन रात हे

गांव गवई में खेले कुदे इहे के गोठ नंदागे
शहर कोति जा के तै संस्कार ला भुलागे

छ.ग. के मनखे मन के लीला अपरम्पार हे
इहां के बसईया मन में राधा कृष्ण कस प्यार हे

बूढ़ा बबा हा पढ़े हे कम, फेर समझदारी तो भारी हे
आज कल के मनखे मन बर बबा हा तो रेलगाड़ी हे

गांव ला छोड के सब शहर कोती जात हे
फेर गांव के बिहिनियाँ शहर में कहां आत हे
खेती करबो धान उपजाबो इही तो आधार है
छत्तीसगढ़ के माटी ले हमला बिकट प्यार हे।

कॉलेज हमारा है

चाय की एक चुस्की से
जहां होता गुजारा है
जहाँ एक रोटी का पांचवा टुकड़ा
जीने का सहारा है
जहाँ किसी के भी जन्म दिन पर
उसे बेरहमी से मारा है
हमें गर्व है कि वो
कॉलेज हमारा है
कुछ घर जैसा लगता है
यही सुरज उगकर छलता है
जहाँ हो हल्ला मचाते
वो गैंग हमारा चलता है
जहां सूरज की रौशनी दिखती
पर गर्माहट का ज्ञान है
वैसे ही शिक्षक हमारे
जो कॉलेज की शान है
नुमाइश नही करते समाने किसी के
पर अब ये सबसे प्यारा है
गर्व है हमें कि ये कॉलेज हमारा है ...

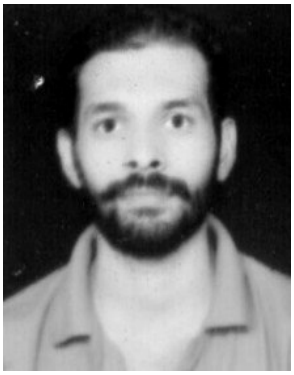

गांव रहने दो

मेरे गांव को गांव रहने दो
वहां मेरे दादा के लगाए पीपल की थोड़ी छांव रहने दो
मेरे गांव को गांव रहने दो
ये वही गांव है
जहां बचपन मेरा खिला था
ये वही गांव है
जहां संस्कार मुझे मिला था
ये वही गांव है
जहां लोग सादे होते हैं
जहाँ राखी हो यहा मंगलसूत्र
सब पक्के धागे होते हैं
रिश्तों में लोगों का थोड़ा लगाव रहने दो
मेरे गांव को गांव रहने दो
वो सावन के झुले
वो फूलों का बाग
वो मक्के की रोटी
वो सरसो का साग
वो सौंधी सी खुशबु
मेरे गांव की मिट्टी में
वो प्यारी सी यादें
मेरे यारों की चिट्ठी में
ना जाना उस पार मुझे, उस तरक्की की दुनिया में
इसी पार मेरी नांव रहने दो
मेरे गांव को गांव रहने दो

विजेन्द्र धनकर
BA. III

मैं बेटी हूँ

मै बेटी हूँ, अपने पिता की
मैं बहन हूँ, अपने भाई की
मैं पत्नी हूँ, अपने पति की
मैं माँ हूँ अपने बच्चों की
पर मैं क्या हूँ उनकी ?
जिन्होंने मुझे लज्जित किया
क्या मैंने उन्हें अधिकार दिया?
जो उन्होंने मुझे छुआ
क्या मेरी इज्जत इतनी सस्ती है?
या मानवता आज बाजारों में बिकती है?
आज पूछती हूँ में उन दरिंदों से
क्या मेरी इज्जत लौटा पावोगे?
मुझे फिर से पवित्र बनाओगे?
मेरे बाप के आँसू पोछ पावोगे?
मेरे आंखो के सपने लौटाओगे?
ए दरिंदे, अपने दिल से पूछकर देखो
कल तुम्हारी बेटी सेआँख मिला पावोगे
क्या अपनी बेटी से आंख मिला पावोगे
अब तक, चुपचाप सहा सब कुछ
पर अब नहीं
अब नारी दुर्गा का रूप ले चुकी है
अब वो दिन दूर नहीं
जब हम फिर इतिहास दोहरायेंगे
और सनातन धर्म निभायेंगे
अब फिर युद्ध छिड़ेगा
और फिर दुर्गा के हाँथो
दानवों का संहार होगा
क्योंकि अब हम नारी अबला नहीं
अब हम नारी सबला है ।

काश मुझे इक बेटी होती

पता नहीं क्यूँ, पर आज मेरा मन रो रहा था
लाख मनाने पर भी दिल बेचैन हो रहा था
कानो में मेरे एक अजनबी आवाज ने शोर कर रखा था
ना चाहते हुये भी मेरा ध्यान अपनी ओर कर रखा था
मेरी आँखे उस शख्स को ढूँढ रही थी
जिसकी आवज में इतनी कशिश थी
इधर-उधर ढूढने पर मेरी नजर एक बेबस औरंत पर पड़ी
केश उसके खुले हुये और आँखो से बह रही आँसुओं की धारा थी
शायद वो बेवस माँ, अपने बेटे को ढूँढ रही थी
या फिर, एक बेटे के माँ होने के दुःख से रो रही थी
अजीब सी कश्मकश मेरे मन में चल रही थी
इतने में उस माँ ने मुझसे कुछ कहा
और जो उस माँ ने कहा वह सुनकर मैं स्तब्ध रह गयी
नौ महिने तक गर्भ में रखकर मैने उसे पैदा किया
अपना स्तनपान कराकर

अपने आँचल मे सुलाकर
मैने उसे बड़े किया
अरपने आँसू, उससे छूपाकर
मैने उसके, आँसू पोछे
पर जब उसकी बारी-आयी
तब उसने क्या किया?
मुझे कलमुही कहा, मैं सुनती रही
मुझे तबेले में रखा गया, मैं सहती रही
उसने दो वक्त की रोटी के लिये
मुझे तड़पाया है
और आज लातमार कर
अपने घर से भगाया है
मेरे बेटे ने काला बाजारी
और गोरख-धंधा अपनाया
भारत माता की इज्जत को
बेचकर खाया
ऐसे जालिम बेटे से अच्छा
मुझे एक बेटी होती
क्या होता, अगर वो दिन का सूरज ना होती
कम से कम रात के अंधेरे में चाँदनी वो होती
इतने में मेरी आँख खुली,
मैने अपने आपको बिस्तर पर पाया
अब भी मेरी आँखे रो रही थी
खुद इक बेटी होने पर
दिल को तसल्ली रो रही थी
आज इस सपने ने मुझे
अपनी माँ की अहमियत बता दी
और दुनिया के करोड़ों माँ ओ की
कहानी सुना दी
इस सपने के बाद दुआ है उस रब से
जालिम बेटों से अच्छा
हर माँ की कोख में
इक बेटी दे अब से
इक बेटी दे अब से ।

करत हमस ह लड़ाइ

किसी ने बम फेंके हैं
किसी ने बंदूके उठाई
किसी ने छीने हिस्से हैं
किसी ने लाशें है बिछाई
क्या समझ रखा हमको
करतें हमसे है लड़ाई
तो पाकिस्तान तूने तो
अच्छी दुश्मनी निभाई
और चीन ने भी है
तुम्हारी पीठ थपथपाई
उरी की पाक मिट्टी में
बही हैौ खून की नदियाँ
पाकिस्तान ने फिर से
है हैवानियत दिखाई
किसी के बेटे छीने है
किसी से छीने तुमने भाई
किसी की माँग उजाड़ी है
किसी की मेंहदी है मिटाई
किसी मासूम के सर से
उठे हैं, हाथ बाप के
बूढ़े बाप की लाठी
पाकिस्तान ने छीनी
तो बहुत सहा हमने
अब तुम्हारी बारी आई
तुम्हारे नापाक ईरादों पर
अब पड़ेंगे हम भारी
भारत माँ के बेटों ने
उठा ली हैं मशाले अब
तेरे घर में घुसकर ही करेंगे तेरी ही पिटाई।

Renu Deshmukh
M.Sc IIIsem
(Mathematics)

ऐसा ही है ये बचपन

कापी के पन्ने फाड़कर
ऐरोप्लेन बनाना
तपती धूप में भी
साईकिल चलाना रेसींग लगाना
तितलीयों के पीछे पीछे यू ही भागना
रात को जुगनु को हाथ में पकड़ना
कोई आए तो ...
उसे दरवाजे के पीछे छुपकर डराना
बारिश में नाव चलाना
बारिश में कीचड़ में नाचना
हर मौसम को रंगीन बनाना
ऐसा ही है बचपन ।
दादी माँ से ये कहानी सूनना
दादा जी से पैसे लेना
माँ के हाथो बनी गरमागरम रोटी खाना
छोटी-छोटी बातों में खुशी मनाना
ऐसा ही है ये बचपन।

मैं भी अकेली
तुम भी अकेले
सब है साथ फिर भी अकेले
पूछो कैसे सब है अकेले?
तेरा एक है अलग जहाँ ,
मेरा एक है अलग जहाँ
तुम अगर whatsapp चलाओं
तो मै Facebook चलाऊँ
मैं अपनी खुशी इसी से पाऊँ
तुम अपनी खुशी उसी में पाओ
जब घर में कोई खुशी मनाए
सब शामिल होकर भी शामिल न हो पाए
सबका ध्यान modernapps की तरफ जाए
खुखी का कारण भी वही बन जाए
क्यों न ऐसी रित बनाए, कुछ समय मोबाइल भूल जाए
वो समय हो परिवार का, अपने दोस्तों और यारों का, .
उनके साथ मस्ती करें भरपूर
कम से कम दिन के एक घंटे मोबाइल से रहे दूर।
होगा इससे लाभ भरपूर कि अकेलापन होगा दूर
अपनों में मिटेंगी दूरियाँ और बठेंगी नजदिकीयाँ।

वैष्णवी याज्ञिक (बी.ए. भाग- III)

भारत छोड़ो आंदोलन

प्रियम वैष्णव (B.A. III Year)

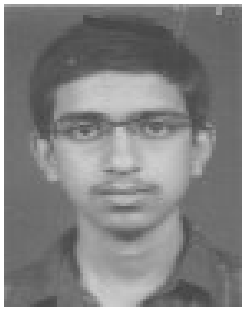

भारत वर्ष विविध विरासतों संस्कृति, ज्ञान और समृद्धशाली इतिहास से परिपूर्ण देश है। इस पावन शस्य श्यामला धरती पर प्राचीन काल से विभिन्न देशों को आकर्षित करने की शक्ति थी। इसकी ज्ञान, समृद्धी के कारण ही अनेक विद्ववान, व्यापारी व आक्रमणकारी भारत आये परंतु सब यही रच बस गये परंतु एक ऐसा विदेशियों का दल था जो भारत के लिए परतंत्रता की जंजीरे साथ लाए। थे वे ब्रिटिश। ब्रिटिश (अंग्रेज) भारत व्यापार करने के उद्देश्य से आये थे परंतु भारती की राजनीतिक अस्थिरता देख कर उन्होंने संपूर्ण भारत पर राजनीतिक आर्थिक सांस्कृतिक व बौद्धिक रूप से अधिकार कर लिया। अंग्रेजों ने शोषण चक्र प्रारंभ किया और किसी भी प्रकार की शोषण में कमी नहीं की । जिसका समय-समय पर भारतीयों द्वारा विरोध किया गया, चाहे वह प्लासी का युद्ध हो बक्सर का युद्ध हो, कृषक आंदोलन हो, या 1857 का गदर हो सभी से अंग्रेजों का विरोध किया गया किंतु रचित नेतृत्व के अभाव में विद्रोह दबा दिये गये। सन 1885 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना होती है, जिससे स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई दिशा मिलती है। सन् 1917 ई. में महात्मा गांधी जी के कांग्रेस में आने से एक अहिंसात्मक आंदोलन का दौर चल पड़ा। 1920 ई. का असहयोग आंदोलन 1930 का सविनय अवज्ञा आंदोलन और अंत में 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन। जो कि भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत में अंतिम कील साबित हुई थी।

30 मार्च 1942ई. में क्रिप्स मिशन के प्रस्तावना की घोषणा की गयी। जिसमें भारत को एक अधिराज्य का दर्जा नवीन संविधान सभा की स्थापना व देशी रियासतों को पृथक रहने का अधिकार दिया गया। जिसका कांग्रेस सहित विभिन्न दलों मुस्लिमलीग हिंदू हमासभा आदि के द्वारा हुकरा दिया गया। वही दूसरी ओर द्वितीय विश्व युद्ध प्रारंभ होने से भारत भी एक युद्ध राष्ट्र बन गया। ऐसी विकट स्थिति में गांधी जी ने हरिजन नामक पात्रिका में लिखा - अंग्रेजों भारत को जापान

के लिए मत छोड़ो अपितु भारत को भारतीयों के लिए व्यवस्थित रूप से छोड़ जाओं।

14 जुलाई 1942 ई को वर्धा में कांग्रेस की कार्य समिति के समक्ष भारत छोड़ो प्रस्ताव पेश किया गया, जिसे पारित कर दिया गया। 7 अगस्त 1942 ई को बंबई अधिवेशन में कुछ प्रस्तावों में संशोधन के पश्चात यह पूनः पारित कर दिया गया तथा गांधी जी के द्वारा भारतीय जन-मानस का आह्वन करो या मरो के महामंत्र से किया गया। गांधी जी ने आंदोलन के उद्देश्यों व माँगों की सूचना सूचना-पत्र द्वारा वायसराय तक पहूँचा दी गयी।

गाँधीजी वायसराय से मिलवने इससे पहले ही 9 अगस्त 1942 ई. को उन्हें व कांग्रेस के अन्य बड़े नेताओं को बंदीबना लिया गया। गांधी जी क्के तृतीय पंक्ति के नेता जय प्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया, अरूणा आसफ अली, चिलु पाण्डे आदि ने आंदोलन की कमान संभाली। जगह-जगह हड़ताले हुई, मजदूरों ने भी हड़ताले की। 11 अगस्त 1942 ई. को आंदोलन ने हिसांत्मक रूप ले लिया। हिंसात्मक रूप लेते ही अंग्रेजों ने कठोर दमन चक्र प्रारंभ किया।

प्रो. अंबा प्रसाद ने दि इण्डियन रिवोल्ट ऑफ 1942 में लिखा इस आंदोलन में पुलिस ने 538 बार गोलियाँ चलायी तथा कम से कम 7000 व्यक्ति मारे गए तथा 60,229 व्यक्तियों को गिरफ्तार

किया गया।

सरकार ने इस हिंसात्मक आंदोलन को नेतृत्व प्रदान करने व अव्यवस्था फैलाने का आरोप गांधी जी पर लगाया, जिसका खंडन गाँधी जी ने लार्ड लिनतिपाये को पत्र लिख कर किया। आंदोलन के हिंसात्मक होने के प्रायश्चित में गाँधी जी ने 10 फरवरी 1943 ई में 21 दिनों का उपवास प्रारंभ किया। 1 मई 1944 ई में गांधी जी को रिहा कर दिया गया, तब तक आंदोलन क्षीण पड़ गया था इसलिए उन्होंने इसे समाप्त कर दिया।

इस आदेलन में कांग्रेस की तृतीय पंक्ति, विद्यार्थियों, मजदूरों व किसानों ने प्रशंसनीय कार्य किये। मुस्लिमलीग, कम्युनिस्ट पार्टी, अकाली दल, ईसाई व हिंदू महासभा ने इसका विरोध किया।

यद्यपि यह आंदोलन असफल रहा परंतु इसने यह बता दिया कि भारत में अब अंग्रेज कुछ दिनों के मेहमान है। विश्व राजनीति में भारत के स्वतंत्रता की बात होने लगी। भारत की स्वतंत्रता में इस आंदोलन का महत्वपूर्ण स्थान है, इसी आंदोलन ने अंग्रेजों को सोचनेपर मजबूर कर दिया की वे भारत को आजाद करे या ना करे। इस वर्ष 2017 ई में भारत छोड़ों आंदोलन के 25 वर्ष पूरे हुए। हमे याद रखना चाहिए कि इस आंदोलन में हिस्सा लेने वाले लोगों ने अपना सर्वस्व देश को समर्पित कर दिया था। आज तात्कालीन परिस्थितियों में भी हम युवाओं को, भारत के प्रबुद्ध लोगो को आगे आकर भारत को गरीबी, अशिक्षा असुरक्षा से मुक्त कराये व पूनः भारत को विश्वर गुरु बनाये व माँ भारती के आलोक को संपूर्ण विश्व में फैलाये। ...

कुछ अनमोल कथन

प्रवीण शर्मा (बी.ए.तृतीय (III)

शिक्षा का लक्ष्य क्या है?

1. उन्नत पुरुष एनं नारी बनाना ताकी हम अपनी जिंदगी देश सेवा और अंततोगत्वा मानवता की सेवा के लिए समार्पित कर सकें। महान क्रांतिकारी - **नेताजी सुभाष चन्द्र बोस**

2. जो शिक्षा प्रणाली लड़के और लड़कियों को सामाजिक या दूसरी बुराइयों के साथ लड़ना नही सिखाती उस प्रणाली में जरूर कोई न कोई बुनियादी में खराबी है।

साहित्यकार - **प्रेमचन्द**

3. जीवन को सफल बनाने के लिए शिक्षा की जरूरत है, डिग्री की नही। हमारी डिग्री है - हमारा सेवा भाव, हमारी नम्रता हमारे जीवन की सरलता । अगर यह डिग्री नही मिली अगर हमारी आत्मा जागृत नही हुई तो कागज की डिग्री व्यर्थ है।

0000

भोर के सुंदर स्वप्न सा है अपना

खोमिन साहू (B.A. III Year)

भारत केवल एक देश नही है। यह एक स्वप्न का नाम है, जिसे करोड़ो देशवासी साथ देखते है। यह एक उम्मीद की अनवरत धारा है, जो पीढ़ी-दर पीढ़ी हमारी रंगो में बहती आई है। एक वह युग भी था, जब हम भारतीय विदेशी ताकतों की जंजीरों में जकड़े हुए लाचार थे। फिर हमारे हौसले बुलंद हुए और अपनो ताकत को समेटकर स्वतंत्रता का वह संग्राम लड़ा जिसने सारी बेड़ियो तोड़ डाली अगस्त 1947 की वह सुबह आई जब हमारी किस्मत हमारे हाथों में थी। देश अपनी खोई स्वतंत्रा फिर से हासिल कर चुका था। तब से आज तक हम अपनी स्वतंत्रता को और मज़बूत बनाने में जुटे हुए हैं। 70 साल बीतने पर हम देखते हैं 2017 में हम कहां आ पहुंचे हैं, हमारा सफ़र यहीं नही रूकता स्वप्न अभी भी है। हमारी उम्मीद हमें 2047 के उस भोर में ले जाती है, जहां देशे को आजाद हुए 100 साल पूरे हो चुके होंगे और हम देखते हैं। वह दृश्य जिसमें अपने साझे संकल्प की सतत आंच में व उन्नत चेतना के पायदान पर हमारा भविष्य साफ झलकता है।

ऐसा था तब भारतः- यादो और अतीत का गलियारा इतना लंबा होता है कि बस नजर दौड़ाने की जरूरत है और यादों के पिटारे से बहुत कुछ हाज़िर हो जाता है। आख़िर कैसा था वह समय क्या थी तब का पसंद कैसे थे तब के लोग। कौन-सी फिल्में और गाने दिमाग पर चढ़े थे।

वो दिन अलग ही थाः- 15 अगस्त 1947 के दिन हवा में अजीब तरंग और खुशी की लहरे थीं। दिल्ली की इमारतें जगमगा रही थी। हर घर था खिड़कियों पर छोटे-बड़े तिरंगे फहरा रहे थे लोग पटाखे छोड़ रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो दिवाली आ गई हो। दिल्ली के कई स्कूलो में उस दिन तिरंगी टॉफी बांटी गई। ज्यादातर लोगों के सिरों पर खादी की गांधी टोपी थी।

2047 का भारत, भविष्य का एक सुंदर सपना :- 2047 का भारत एक खट्टे-मीठे स्वप्न सा है। यह समय आने तक महानगर और बड़े महानगरों में तब्दील हो चुके होंगे, छोटे शहर महानगरों में, कस्बे छोटे शहरों में और गांवो का कस्बाई करण हो चुका होगा।

भ्रष्टाचार और प्रदूषण की समस्या पर जनता की जागरूकता को देखते हुए, लगता है कि हम पहाड़ सी लगने वाली इन समस्थानों से पूरी तरह से मुक्त हो चुके होंगे। ....

TAX REFORM IN INDIA

Sourabh Verma (B.A.III)

The Good and services Tax was launched in India on july 1,2017 in a midnight function at the Central Hall of Parliament by the Prime Miniser in the bugest presence of President of Indai. It was indeed a historic occassion and a poradigm shift as Inda moved towards 'One Nation, One Tax, One market.'

Need for the Constitutional Amedment

In the countries where GST Has been introduced, barring rare exceptions, GST is unitary in character and i s levied either by the Central Government on by the state Governments. The introduction of GST In India required omendment in the constitution as perion to the Constitutional amendment the fiscal powers beween centre and the states were clearly demareated as per the enteries in the Union List and the state list.on by in the Union list and the state list.

GST Council - Constitution

- Chairperson - Union FM
- Vice-Chairperson - to be chosen amongst

the Minister of state Govt.

- Members - MOS (Finance) and Ministers of Finance/Taxation of each state
- Quorum - 50% of total members
- States - 2/3 weight age and Centre - 1/3 weight age
- Decision by 75 % majority
- Council to make recommendations on everything related to GST including laws, ruler and rates etc.

Compensation to the States

As GST is a destination based tax, there was apprehension amongst some states, particularly manufacturing states that implementation of GST may result in loss of revenues for them: There fore, the constitution (10th Amendment) Act, 2016 provides for compensations to the states for lone of revenue arising on current of implementation of GST council, the GST (impanation to states). Act. Act 2014 has been enacted. The compensation Act has fixed the revenues of the year 2015-16 as the dose year revenues and further an national annual growth state of 14 per cant has been provided the Act provides for laving of a on, which shall be used for compensation to the stats in lose there is Lon of revenue. This can shall be liquid on luxury items an goods.

Deciding Tax Rates

White deciding on the tax slobs, the GST council had a difficult task of balancing three objective. Firstly, to ensure that interests of poor and vulnerable section of the society are protected and goods of man consumption and essential commodities remain at affordable level. Secondly, to ensure that the overall revenues of the states and the centre are protected. Thirdly, to see that the tax incidence on the goods and services does not increase or decrease substantially from the presort incidence of tax. Taking into consideration all these factors and after long deliberations, the carefully decided on four tax rates of 5 percent, 12 percent, 18 percent and 28 percent stats. In addition, there is an exempt category also

Conclusion

The launch of GST in India with effect from July1, 2017 is transformative reform and will change the way business are done in India. All stakeholders have welcomed the reform. The new GST regime will bring in more and more business into the formal awning. Radical change of this magnitude is bound to bring about some pain. The tax administrations. Berth at the transition is smooth. The gains of this little pain are going to be many and long lasting for the Indian economy.

Looking at GST from a maypole view point only shades of indirect tax teform will be visible. But if we have a comprehensive view of this transformational reform it can be seen as a business change, a social regeneration, a revolution that will reenergize the sagging cheeps of our economics growth, a booster lose fro the immunity of our economy from the vagaries of worked developments and last but not the leact a future where the head will be held high and wing's will be free.

शताब्दी
स्मरण

गजानन माधव मुक्तिबोध

(13 नवंबर 1917-11 सितम्बर 1964)

गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म 13 नवंबर 1917 को श्योपुर (शिवपुरी) जिला मुरैना, ग्वालियर (मध्य प्रदेश) में हुआ था। पिता का नाम माधवराव और माता का नाम पार्वती बाई था। मुक्तिबोध की प्रारंभिक शिक्षा उज्जैन में हुई। 1938 में बी. ए. पास करने के पश्चात आप उज्जैन के मॉर्डन स्कूल में अध्यापक हो गए। अनेक स्थानों पर अध्यापन कार्य किया। एम. ए. करने के पश्चात राजनाँदगांव के दिग्विजय कॉलेज में प्राध्यापक पद पर नियुक्त होकर मृत्युपर्यंत वहीं रहे।गजानन माधव मुक्तिबोध प्रगतिशील विचारधारा के शीर्ष व्यक्तित्व माने जाते हैं तथा हिन्दी साहित्य में सर्वाधिक चर्चा के केन्द्र में रहने वाले साहित्यकार हैं। उन्हें प्रगतिशील कविता और नयी कविता के बीच का एक सेतु माना जाता है। मुक्तिबोध तारसप्तक के पहले कवि थे। मनुष्य की अस्मिता, आत्मसंघर्ष और प्रखर राजनैतिक चेतना से समृद्ध उनकी कविता पहली बार तार सप्तक के माध्यम से सामने आई, लेकिन उनका कोई स्वतंत्र काव्य-संग्रह उनके जीवनकाल में प्रकाशित नहीं हो पाया। उन्होंने वसुधा नया खून आदि पत्रों में संपादन भी किया। मुक्तिबोध अत्यन्त अध्ययनशील थे। आर्थिक संकट कभी भी उनकी अध्ययनशीलता में बाधा नहीं बन पाए

प्रमुख कृतियाँ

कविता संग्रह : चाँद का मुँह टेढ़ा है, भूरी भूरी खाक धूल

कहानी संग्रह : काठ का सपना, विपात्र, सतह से उठता आदमी।

उपन्यास : विपात्र

आलोचना : कामायनी : एक पुनर्विचार, नई कविता का आत्मसंघर्ष, नए साहित्य का सौंदर्यशास्त्र (आखिर रचना क्यों), समीक्षा की समस्याएँ

आत्माख्यान : एक साहित्यिक की डायरी

इतिहास : भारत : इतिहास और संस्कृति

मुक्तिबोध की कविता-
मुझे कदम-कदम पर

मुझे कदम-कदम पर
चौराहे मिलते हैं
बाँहे फैलाए!!

एक पैर रखता हूँ
कि सौ राहें फूटतीं,
व मैं उन सब पर से गुजरना चाहता हूँ;
बहुत अच्छे लगते हैं
उनके तजुर्बे और अपने सपने...
सब सगो लगते हैं;
अजीब-सी अकुलाहट दिल में उभरती है,
मैं कुछ गहरे में उतरना चाहता हूँ,
जाने क्या मिल जाए!!

मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में
चमकता हीरा है;
हर-एक छाती में आत्मा अधीरा है,
प्रत्येक सुस्मित में विमल सदानीरा है,
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में
महाकाव्य पीड़ा है,
पलभर में सबसे गुज़रना चाहता हूँ,
प्रत्येक उर में से तिर जाना चाहता हूँ,
इस तरह खुद ही को दिए-दिए फिरता हूँ,
अजीब है ज़िन्दगी!!
बेवकूफ़ बनने के ख़ातिर ही
सब तरफ़ अपने को लिए-लिए फिरता हूँ;
और यह सब देख बड़ा मज़ा आता है
कि मैं ठगा जाता हूँ...
हृदय में मेरे ही,
प्रसन्न-चित्त एक मूर्ख बैठा है
हँस-हँसकर अश्रुपूर्ण, मत्त हुआ जाता है,
कि जगत्...स्वायत्त हुआ जाता है।

कहानियाँ लेकर और
मुझको कुछ देकर ये चौराहे फैलते
जहाँ ज़रा खड़े होकर
बातें कुछ करता हूँ...
...उपन्यास मिल जाते।

दुख की कथाएँ, तरह-तरह की शिकायतें
अहंकार-विश्लेषण, चारित्रिक आख्यान,
जमाने के जानदार सूरे व आयतें
सुनने को मिलती हैं!

कविताएँ मुसकरा लाग-डाँट करती हैं
प्यार बात करती हैं।
मरने और जीने की जलती हुई सीढ़ियाँ
श्रद्धाएँ चढ़ती हैं!!

घबराए प्रतीक और मुसकाते रूप-चित्र
लेकर मैं घर पर जब लौटता...
उपमाएँ, द्वार पर आते ही कहती हैं कि
सौ बरस और तुम्हें
जीना ही चाहिए।

घर पर भी, पग-पग पर चौराहे मिलते हैं,
बाँहें फैलाए रोज़ मिलती हैं सौ राहें,
शाखा-प्रशाखाएँ निकलती रहती हैं,
नव-नवीन रूप-दृश्यवाले सौ-सौ विषय
रोज़-रोज़ मिलते हैं...
और, मैं सोच रहा कि
जीवन में आज के लेखक की कठिनाई यह नहीं कि
कमी है विषयों की
वरन् यह आधिक्य उनका ही
उसको सताता है,
वह ठीक चुनाव कर नहीं पाता है!!

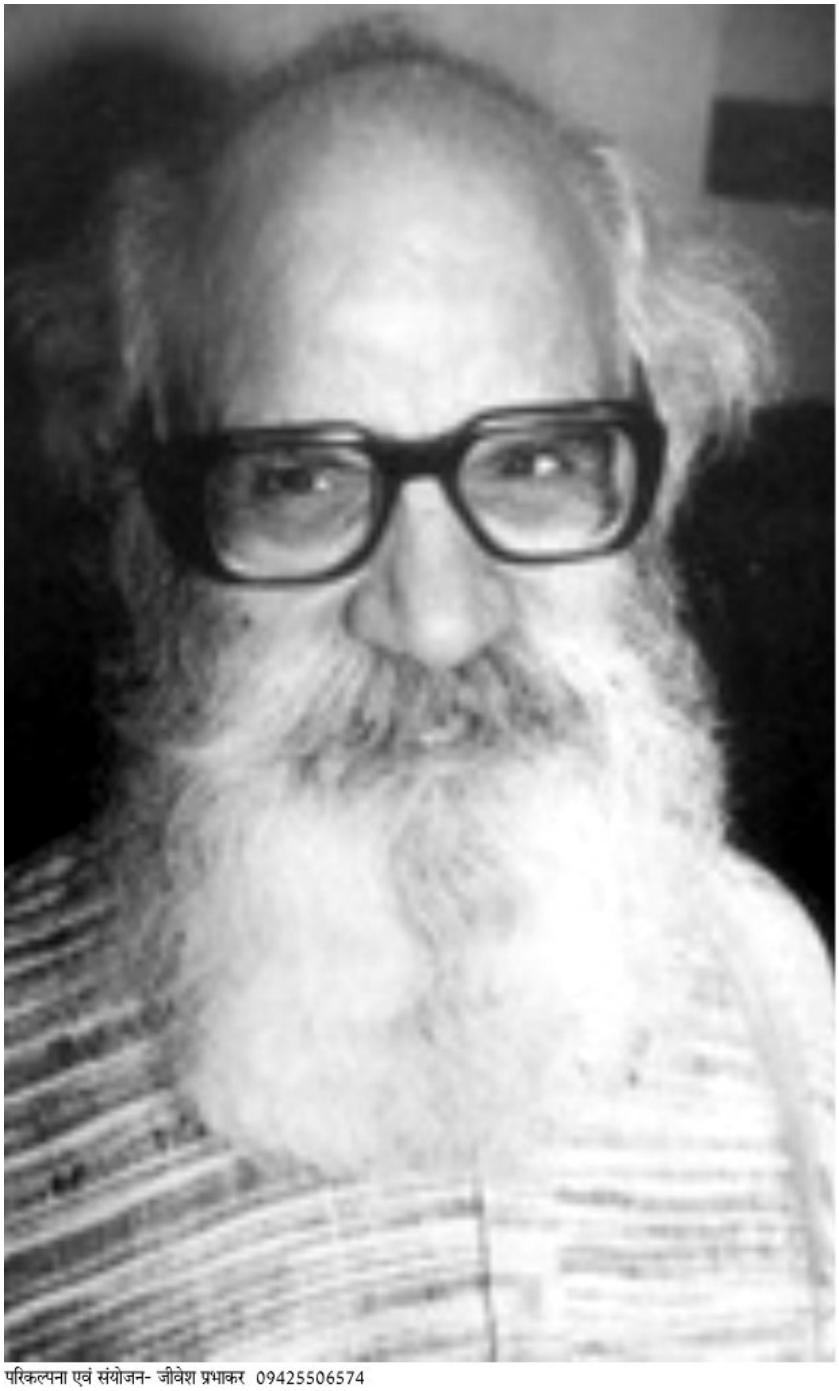

त्रिलोचन

(20 अगस्त, 1917- 9 दिसम्बर, 2007)

त्रिलोचन जी का जन्म सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश में 20 अगस्त, 1917 को हुआ। उनका वास्तविक नाम वासुदेव सिंह था। उन्होंने अंग्रेजी में एम. ए. तथा संस्कृत में शास्त्री की उपाधि प्राप्त की।इसके पश्चात वे त्रिलोचन शास्त्री के नाम से भी पुकारे जाने लगे। हिंदी साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए 'साहित्य रत्न' जैसे उपाधियों से सम्मानित किया गया। त्रिलोचन को हिन्दी साहित्य की प्रगतिशील काव्य धारा का प्रमुख हस्ताक्षर माना जाता है। वे आधुनिक हिन्दी कविता की प्रगतिशील 'त्रयी' के तीन स्तंभों में से एक माने जाते हैं। इस 'त्रयी' के अन्य दो स्तम्भ नागार्जुन व शमशेर बहादुर सिंह हैं। त्रिलोचन का काव्य लोक भारतीय किसान के अंतर्मन को गहरे स्पर्श करने वाला तथा अपनी परंपराओं, रीति-रिवाजों, छादी संस्कारों से पूरी तरह जुड़ा हुआ है। प्रेम, प्रकृति, जीवन-सौंदर्य, जीवन-संघर्ष, मनुष्यता इन कई आयामों को अपने में समेटते हुए इनकी कविता का फलक काफी व्यापक है। त्रिलोचन हिन्दी के अतिरिक्त अरबीऔर फ़ारसी भाषाओं के ज्ञाता माने जाते थे।वे पत्रकारिता के क्षेत्र में भी सक्रिय व विख्यात रहे।

प्रमुख कृतियाँ -

कविता संग्रह-धरती (1945), गुलाब और बुलबुल (1956), दिगंत(1957), ताप के ताए हुए शब्द (1980), उस दिन (1980), उस जनपद का कवि हूँ (1981) अरधान (1984), तुम्हें सौंपता हूँ (1985), मेरा घर, चैती, अनकहनी भी, जीने की कला (2004)

कहानी संग्रह-देशकाल

डायरी-दैनंदिनी

संपादित - मुक्तिबोध की कविताए

पुरस्कार व सम्मान - 1982 में ताप के ताए हुए दिन के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार। 1989-90 में हिंदी अकादमी द्वारा शलाका सम्मान। इसके अलावा उन्हें उत्तर प्रदेश हिंदी समिति पुरस्कार, हिंदी संस्थान सम्मान, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, भवानी प्रसाद मिश्र राष्ट्रीय पुरस्कार, सुलभ साहित्य अकादमी सम्मान, भारतीय भाषा परिषद सम्मान आदि से भी सम्मानित किया गया था।

परिकल्पना एवं संयोजन- जीवेश प्रभाकर 09425506574

त्रिलोचन की कविताएं

1. उस जनपद का कवि हूँ, 2. गीतमयी हो तुम

1.

उस जनपद का कवि हूँ

उस जनपद का कवि हूँ जो भूखा दूखा है,
नंगा है, अनजान है, कला--नहीं जानता
कैसी होती है क्या है, वह नहीं मानता
कविता कुछ भी दे सकती है। कब सूखा है,
उसके जीवन का सोता, इतिहास ही बता
सकता है। वह उदासीन बिलकुल अपने से,
अपने समाज से है; दुनिया को सपने से
अलग नहीं मानता, उसे कुछ भी नहीं पता
दुनिया कहाँ से कहाँ पहुँची; अब समाज में
वे विचार रह गये नही हैं जिन को ढोता
चला जा रहा है वह, अपने आँसू बोता
विफल मनोरथ होने पर अथवा अकाज में।
धरम कमाता है वह तुलसीकृत रामायण
सुन पढ़ कर, जपता है नारायण नारायण

2.

गीतमयी हो तुम, मैंने यह गाते गाते
जान लिया, मेरे जीवन की मूक साधना
में खोयी हो । तुम को पथ पर पाते पाते
रह जाता हूँ और अधूरी समाराधना
प्राणों की पीड़ा बन कर नीरव आँखों से
बहने लगती है तब मंजुल मूर्ति तुम्हारी
और निखर उठती है । नयी नयी पाँखों से
जैसे खग-शावक उड़ता है, मन यह, न्यारी
गति लेकर उड़ाने भरने लगता वैसे ही
सोते जगते दूर दूर तुम दर सदा हो
क्षितिज जिस तरह दृश्यमान था है ऐसे ही
नया रहेगा । स्वप्न योग ही यदा कदा हो।
चांद व्यों में चुपके चुपके आ जाता है
उत्तरंग हो कर विह्वल समुद्र गाता है ।

महाश्वेता देवी

(14 जनवरी, 1926 -28 जुलाई 2016)

महाश्वेता देवी का जन्म अविभाजित भारत के ढाका में 14 जनवरी, 1926 को हुआ था। उनके पिता मनीष घटक एक कवि और एक उपन्यासकार थे और उनकी माता धारीत्री देवी भी एक लेखिका और एक सामाजिक कार्यकर्ता थीं। उनकी स्कूली शिक्षा ढाका में हुई। भारत विभाजन के समय किशोरवस्था में ही आपका परिवार पश्चिम बंगाल में आकर बस गया। बाद में उन्होने विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन से स्नातक और कोलकाता विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में मास्टर की डिग्री प्राप्त करने के बाद आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय में अंग्रेजी व्याख्याता के रूप में नौकरी की। प्रसिद्धि सामाजिक कार्यकर्ता और लेखिका एक पत्रकार, लेखक, साहित्यकार और आंदोलनधर्मी के रूप में महाश्वेता देवी ने अपार ख्याति प्राप्त की।

प्रकाशित रचनाएं - अरण्येर अधिकार, नैऋते मेघ, अग्निगर्भ, गणेश महिमा, ह्जार चुरशीर मा, चोट्टि मुण्डा एबं तार तीर, शालगिरार डाके, नीलछबि, बन्दोबस्ती, आइ.पि.सि, साम्प्रतिक, प्रति चुयान्न मिनिटे, मुख, कृष्णा द्वादशी, बेने बौ, मिलुर जन्य, घोरानो सिँड़ि, स्तनदायिनी, लायली आशमानेर आयना, औंधार मानिक, याबीबन, शिकार पर्ब, अग्निगर्भ, ब्रेस्ट गिभार, डास्ट अनद्य रोड, आओयार नन-भेज काउ, बासाइ टुडु, तितु मीर, रुदाली, उनत्रिश नम्बर धारा आसामी, प्रस्थानपर्ब, ब्याधखण्ड।

फिल्म - इनकी कई रचनाओं पर फिल्म भी बनाई गई । इनके उपन्यास रुदाली पर कल्पना लाजमी ने रुदाली तथा हजार चौरासी की माँ पर इसी नाम से 1998 में फिल्मकार गोविन्द निहलानी ने फिल्म बनाई।

सम्मान - पुरस्कार-उपाधि - मेग्सेसे पुरस्कार (1977), साहित्य अकादमी पुरस्कार (1979), पद्मश्री (1986), ज्ञानपीठ पुरस्कार (1996), पद्म विभूषण (2006)

हिन्दी में कुछ अनुदित कृतियां - अक्लांत कौरव, अग्निगर्भ, अमृत संचय, आदिवासी कथा, ईट के ऊपर ईट, उन्तीसवीं धारा का आरोपी, उम्रकैद, कृष्ण द्वादशी, ग्राम बांग्ला, घहराती घटाएँ, चोट्टि मुंडा और उसका तीर, जंगल के दावेदार, जकड़न, जली थी अग्निशिखा, झाँसी की रानी, टेरोडैक्टिल, दौलति, नटी, बनिया बहू, मर्डरर की माँ, मातृछवि, मास्टर साब, मीलू के लिए, रिपोर्टर, श्री श्री गणेश महिमा, स्त्री पर्व, स्वाहा और हीरो-एक ब्लू प्रिंट ।

महाश्वेता देवी की कविता

आ गए तुम?

आ गए तुम

द्वार खुला है, अंदर आओ..!

पर तनिक ठहरो..

ड्योढी पर पड़े पायदान पर,

अपना अहं झाड़ आना..!

मधुमालती लिपटी है मुंडेर से,

अपनी नाराज़गी वहीं उड़ेल आना..!

तुलसी के क्यारे में,

मन की चटकन चढ़ा आना..!

अपनी व्यस्ततायें, बाहर खूंटी पर ही टांग आना..!

जूतों संग, हर नकारात्मकता उतार आना..!

बाहर किलोलते बच्चों से,

थोड़ी शरारत माँग लाना..!

वो गुलाब के गमले में, मुस्कान लगी है..

तोड़ कर पहन आना..!

लाओ, अपनी उलझनें मुझे थमा दो..

तुम्हारी थकान पर, मनुहारों का पंखा झुला दूँ..!

देखो, शाम बिछाई है मैंने,

सूरज क्षितिज पर बाँधा है,

लाली छिड़की है नभ पर..!

प्रेम और विश्वास की मद्धम आंच पर, चाय चढ़ाई है,

घूँट घूँट पीना..!

सुनो, इतना मुश्किल भी नहीं हैं जीना..!!..

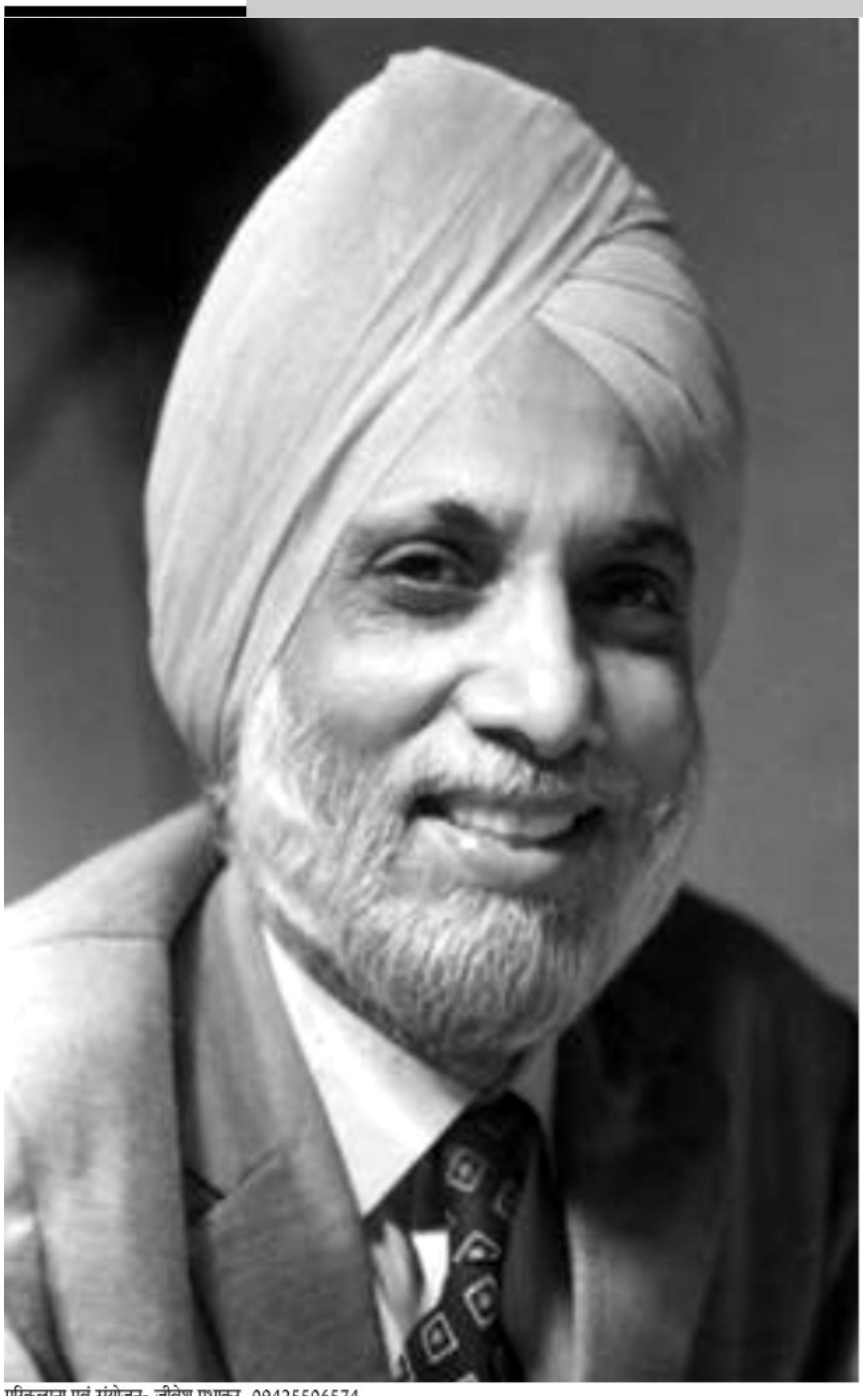

परिकल्पना एवं संयोजन- जीवेश प्रभाकर, 09425506574

करतार सिंह दुग्गल

(1 मार्च 1917 - 26 जनवरी 2012)

करतार सिंह दुग्गल का जन्म पहली मार्च 1917 को तत्कालीन अविभाजित पंजाब के रावलपिंडी में हुआ था। दुग्गल ने लाहौर के फोरमैन क्रिश्चियन कॉलेज से अंग्रेज़ी में एम.ए. किया उसके बाद उन्होंने आकाशवाणी में नौकरी कर ली । दुग्गल ने आकाशवाणी के अलावा नेशनल बुक ट्रस्ट के संचालक के रूप में भी काम किया । वे दिल्ली पंजाबी साहित्य अकादमी के सचिव भी रहे । करतार सिंह दुग्गल पंजाबी लेखकों में पहली पंक्ति के लेखक माने जाते हैं । मगर उन्होंने पंजाबी के साथ ही उर्दू, हिन्दी और अंग्रेज़ी भाषाओं में भी लिखा। उन्होंने अनेक लघु कथाएँ, उपन्यास, नाटक और नाटकों की रचना की । उनकी कई रचनाओं का अन्य भारतीय भाषाओं और विदेशी भाषाओं में भी अनुवाद हुआ है । उनका लेखन मानवीय संबंधों की गुत्थियों के नए आयाम खोलता है । दुग्गल को गुरु ग्रंथ साहब के नए काव्य संस्करण के लिए भी याद किया जाता है।

चार दशकों के लेखकीय जीवन में कहानियों के चौबीस संकलन प्रकाशित हुए । इसके अलावा दस उपन्यास, सात नाटक भी लिखे । उनके दो कविता संग्रह और एक आत्मकथा भी पाठकों तक पहुँची। उनकी पुस्तकें कई विश्वविद्यालयों में पाठ्क्रम का हिस्सा बनीं।

प्रमुख कृतियाँ

कविता संग्रह- वीसवीं सदी ते होर कवितावें,कांधे कांधे

कहनी संग्रह- इक छित चनन्नाह दी, डंगर, नवा घर, सोनार बांगला, तरकलाँ वेले, जीनत आपा, बर्थ ऑफ ए सॉंग, कम बैक माय मास्टर, आदि

उपन्यास- शरद पूनम की रात, तेरे भाँहि,आदि

अन्य- सत नानक, बंद दरवाजे, मिट्टी मुसलमान की, फिलॉसफी एण्ड फेथ ऑफ सिक्किम, ज्ञानी गुरुमुख सिंह मुसाफिर आदि

सम्मान - सन 1988 में भारत सरकार द्वारा साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में पद्म भूषण, साहित्य अकादमी सम्मान, सोवियट लैंड सम्मान, पंजाबी राइटर ऑफ मिलेनियम (पंजाब सरकार द्वारा), भारतीय भाषा परिषद सम्मान, ग़ालिब अवार्ड, साहिर अवार्ड सहित कई पुरुस्कार व सम्मान से सम्मानित ।

कतार सिंह दुग्गल की कहानी

इंसानियत

बलौच सिपाही मिल्टरी के ट्रक में मुर्गों कीं तरह लद गये थे । उनका सामान वैपन-कैरियर में सुबह भेज दिया गया था । हर फौजी के पास सिर्फ अपनी-अपनी बंदूक थी । समय ही कुछ ऐसा था कि बंदूकों पर संगीनें हर समय चढ़ी रहती थीं ।

बलौच फौज़ियों की इस टुकड़ी का सरदार एक रमजान खान नाम का जमादार था, जिसे सभी 'मौलवी जी, मौलवी जी' कहते थे. चलती लारी में जमादार नमाज पढ़ने के लिए खड़े हो जाते । फसादों में लाशों के ढेर के आगे मुस्सला बिछाकर लोगों ने नमाज के समय उन्हें नमाज पढ़ते देखा था। एक सिपाही उनकी दायीं तरफ बंदूक लेकर खड़ होता और एक सिपाही उनकी बायीं तरफ । देश विभाजन के बाद अमृतसर क्षेत्र से मुसलमानों को निकाल-निकालकर वे पाकिस्तान भेजते। जली हुई मस्जिदों के सामने लारी रुकवाकर ये रोने लगते और आज अब लारी चलने लगी तो मौलवीजी को अचानक खयाल आया भगवान तो सभी का एक है । अमृतसर के हरिमन्दिर की नींव एक मुसलमान फकीर ने रखी थी, गुरु नानक को अहले-सुन्नत भी अपना पीर मानते हैं और मौलवीजी ने दूर गुरुद्वारे के चमकते हुए सुनहरे कलशों को देखकर सिर झुका दिया ।

लारी चली तो ठंडी हवा के पहले झोंके साथ ही मौलवीजी की आंखें मुंदने लगीं । मौलवाजी की आंखें मुंदीं तो फसादों के वीभत्स दृश्य उनकी आंखों के सामने उभरने लगे । किस तरह मुसलमानों ने हिन्दू-सिखों के टुकड़े-टुकड़े किये थे और किस तरह हिन्दू-सिखों ने मुसलमानों से गिन-गिनकर बदले लिये थे । कोई कहता पहले हिंदुओं ने की थी, कोई कहता मुसलमानों ने की थी ।

ट्रक से हंसी अभी थमी नहीं थी कि सड़क से फिर एक भयानक चीख सुनाई दी । इस बार आवाज किसी औरत की थी और लारी में कहकहों की आवाज और ऊँची हो गई । दूध बेचकर गांव जा रही किसी ग्वालिन को इस बार निशाना बनाया गया था । संगीन की नोक ग्वालिन की चोटी में जाकर लगी थी और उसके बालों की लट संगीन के साथ कट कर आ गई थी और ग्वालिन का बर्तन एक तरफ गिर गया था और ग्वालिन दूसरी तरफ ढेर हो गई थी । फिर बलौची सिपाही बारी-बारी से बालों की लट की चुमने लगे थे । जब सभी ने अरमान पूरे कर लिये तो जमादार ने बालों की लट लेकर अपनी डायरी में रख ली। काफिरों के मुल्क की यह निशानी भी अच्छी रहेगी, उसने मन ही मन सोचा ।

सुबह की ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी । अमृतसर शहर के बाहर सड़क पर कोई इक्का-दुक्का ही आ-जा रहा था । बलौच फौंजियों ने पाकिस्तान की शान में गीत गाने प्रारम्भ कर दिये पाकिस्तान आसमान में चमकता एक तारा हैपाकिस्तान दुनिया में इनसाफ का

एक नमूना होगा पाकिस्तान गरीबों और अनाथों का सहारा होगा पाकिस्तान में कोई जालिम होगा, न कोई मंजलूम ।

सड़क पर फिर एक औरत नजर आयी, गले में गातरे वाली कृपाण, कोई सिख नजर आ रही थी । ड्राइवर ने धीरे-से ट्रक को उसके पास से निकाला और उसके दायीं ओर बैठे बलौच सिपाही ने उस गोल-मटोल गुरु की भक्तिन को जैसे नेजे पर उछाल दिया हो । सुनसान सड़क पर फिर एक चीख सुनाई दी। ट्रक में फिर कहकहे उठे, ड्राइवर ने फिर ट्रक को तेज कर लिया ।

और जहां जाकर वह औंधी गिरी, दूर तक सिपाही एड़ियां उठाकर उसे तड़फते हुए देखते रहे । फिर उसके सम्बन्ध में बातें होने लगीं । कोई कहता गुरुद्वारे से आ रही थी तो दूसरा कहता गुरुद्वारे जा रही थी । कुछ का खयाल था कि खा-पीकर मोटी हो रही थी ।

जमादार रमजान खान ने सोचा जाते-जाते ये अच्छे शिकार मिल गये। वह बार-बार डायरी खोलता और अपने हिसाब को अप-टू-डेट करता ।

शहर से जैसे-जैसे वे दूर होते जा रहे थे, वैसे-वैसे खतरा कम होता जा रहा था । बलौच सिपाहियों के हौसले बढ़ते जा रहे थे और उन्हें इस नए खेल में मजा आ रहा था ।

हवा से बातें करता मिल्टरी का ट्रक जैसे उड़ता जा रहा था । सामने सीमा पर पाकिस्तानी झंडा दिखाई देने लगा था । बलौच सिपाहियों ने झंडे को देखते ही 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' के पांच नारे लगाये और फिर कोई नगमा गाने लग।

झंडा जरूर नजर आने लगा था, पर सरहद अभी लगभग तीन मील दूर थी।

थोड़ा ही आगे जाकर बलौच सिपाहियों ने देखा कि तीन सिख सड़क पर जा रहे थे, दो-दो दायीं ओर तथा एक बायीं और तीनों में कोई पचास-पचास कदमों का अन्तर था ।

ड्राइवर के पास अगली सीट पर बैठे बलौच सिपाहियों ने आंखों-आंखों से कोई योजना बनायी और जब सारा नक्शा इशारों-इशारों से सभी की समझ में आ गया तो तीनों मुस्करा पढ़े फिर ड्राइवर ने ट्रक को दायीं और कच्चे रास्ते पर डाल दिया । अगले ही क्षण एक नौजवान सिख संगीन की नोक से बिंध गया । ट्रक तेज हो गया, नौजवान की चीख सुनकर उसी ओर जा रही औरत ने हैरानी और घबराहट से पीछे मुड़कर देखा। ट्रक उस समय तक उसके सिर पर पहुंच चुका था और तेजी से बाहर आती संगीन उसकी छाती में गढ़ गई, ट्रक और तेज हो गया, अब बायीं ओर जा रहे बूढ़े की बारी थी। बूढ़ा जैसे ऊंचा सुनता हो, उसे कुछ भी सुनाई नहीं दिया था । ड्राइवर बड़े साहस से ट्रक को सड़क पर ले आया और फिर बायीं ओर कच्चे रास्ते पर डाल दिया और पूरी रफ्तार के साथ ट्रक को बूढ़े के पास से निकाला। बूढ़ा भूखा-प्यासा कोई शरणार्थी लग रहा था। संगीन की नोंक चुभते ही उछला और पहिये के आगे जा गिरा । उसकी खोपड़ी ट्रक के भारी पहियों के नीचे कुचल गई । ड्राइवर ने ट्रक को और तेज कर दिया ।

सिपाही नारे लगाते जा रहे थे, ड्राइवर ट्रक की रफ्तार को बढ़ाता जा रहा था। तभी ड्राइवर ने देखा कि अचानक एक जंगली बिल्ली कूद कर सड़क के बीच में आ गई । ड्राइवर ने बिल्ली को देखा, जमादार ने भी बिल्ली को देखा । 'इनसानियत का तकाजा' इस तरह हुक्म उसके मुंह में ही था कि ड्राइवर ने खुद ही ट्रक को एक तरफ करते हुए बिल्ली को बचाने की कोशिश की । बिल्ली तो बच गई, पर इतनी तेज जा रहे ट्रक कर हैंडल मुड़ा तो फिर सम्भाल न सका । ट्रक कच्चे रास्ते पर आ गया, फिर कच्चे रास्ते से उतर कर एक पेड़ से टकराकर उलट गया । ट्रक ने एक करवट ली, फिर दूसरी पच्चीस मिली-जुली चीखें निकलीं और फिर जैसे सभी के गले पकड़ लिए गए हों, एकदम सन्नाटा छा गया, इंजन के पेट्रोल से ट्रक को आग लग गई, सड़क पर कोई भी हिंदुस्तानी नहीं था जो बलौच सिपाहियों की मदद के लिए पहुंचता।

दूर दिख रहा पाकिस्तान का झंडा वैसे ही लहरा रहा था. घबराहट में सड़क के किनारे कीकर के पेड़ पर बिल्ली चढ़ गई थी और वहीं से कांटों में से आंखें फाड़े जल रहे ट्रक को देख रही थी और उसे हैरानी हो रही थी । ...

महाविद्यालयीन गतिविधियाँ

महाविद्यालय में चिकित्सा परामर्श केन्द्र स्थापित किया गया

राष्ट्रीय कार्यशाला समाज शास्त्र द्वारा आयोजित

महाविद्यालय के भूतपूर्व छात्र श्री सिंह ने 30 वर्षों के अंतराल के पश्चात महाविद्यालय का अवलोकन किया

महाविद्यालयीन गतिविधियाँ

महाविद्यालय में हिन्दी परिषद का उद्घाटन

राज्य स्तर पर इंडियन नेशनल मैथेमिटिकल ओलपिंयाड का आयोजन

नैक विशेषज्ञ के साथ महाविद्यालय के प्राध्यापक एवं विद्यार्थीगण

प्रयोगशाला तकनीशियनों हेतु आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला के उद्घाटन समारोह की झलक

प्रयोगशाला तकनीशियनों हेतु आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए प्रतिभागीगण

प्रयोगशाला तकनीशियनों हेतु आयोजित कार्यशाला में प्रतिभागी

महाविद्यालयीन गतिविधियाँ

प्राध्यपक की स्वयं सेवी संस्थान जन उन्नयन द्वारा ग्राम मुरमुन्दा में आयोजित कार्यक्रम

महाविद्यालय में आई.क्यू.ए.सी. की बैठक

गणित विभाग द्वारा आयोजित माधव मैथेमेटिकल ओलंपियाड का उद्घाटन समारोह में उपस्थित अतिथिगण

बैकिंग एवं इन्शोरेंस पर आधारित एक दिवसीय कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागी

विश्व प्राणी दिवस के आयोजन समारोह में उपस्थित अतिथिगण

महाविद्यालय की जनभागीदारी समिति एवं महाविद्यालय प्रशासन द्वारा वाहन प्रदूषण मापन शिविर का आयोजन

महाविद्यालयीन गतिविधियाँ

छात्र-छात्राओं द्वारा बनाई गई आकर्षक रंगोली

मेंहदी प्रतियोगिता के पुस्कृत प्रतिभागी

कैशलेस बैंकिंग अभियान में संबोधन करते हुए कुलपति डॉ. एन.पी. दीक्षित